सूचनिका

श्री

नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्यः

राजस्थानी

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और कलाकी शोध-संबंधी निबंधमाला

भाग २

चौहाण सम्राट पृथ्वीराज तृतीय का जन्म-संवत

[दशरथ शर्मा]

पृथ्वीराज तृतीय के जन्म समय के विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद है। पृथ्वीराज रासो में संवत ११११५ में पृथ्वीराज का जन्म होना लिखा है। यदि अनन्द संवत की कल्पना को मान लिया जाय तो संवत १२०६ में पृथ्वीराज का जन्म मानना पड़ता है। अन्य विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि पृथ्वीराज का जन्म विक्रम संवत १२१५ में हुआ था। यदि इन उक्तियों को पृथ्वीराज विजय की कसौटी पर कसा जाय तो दोनों ही निराधार सिद्ध होंगी। इस सम्बन्धमें इस काव्य के निम्नलिखित श्लोक विशेष रूप से मननीय हैं—

(१) अथ भ्रातुरपत्याभ्यां सनाथां जानता भुवम्।
जग्मे विग्रहराजेन कृतार्थेन शिवान्तिकम् ॥८।५३॥

(२) एकाकिना हि मत्पित्रा स्थीयते त्रिदिवे कथम्।
बालश्च पृथिवीराजो मया कथमुपेक्ष्यते ॥८।७२॥

(३) [इतीवाभिषिक्तस्य [रक्षार्थं व्रतचारिणीम्।
स्थापयित्वा निजां देवीं पितृ (?)] भक्त्या दिवं ययौ ॥८।७३॥

(४) सचिवेन तेन सकलासु युक्तिषु
प्रवणेन तत्किमपि कर्म निर्ममे।
मुखपुष्करं शिशुतमस्य यत्प्रभोः
परिचुम्ब्यते स्म नवयौवनश्रिया ॥६।४४॥

(५) इन्दिरालैव बाडवाग्निमैत्री मकराङ्कस्थितितः करोति भौमः।
गगने न ममास्ति कोपि शोभेत्यधुना कुम्भमिवालसः प्रविष्टः ॥७।२३॥

(६) दनुज रिमिवानुनेतुकामो दनुजानां गुरुरेति मीनराशिम्।
अधिरोहति मेषमेष पूषा तुरगाणामिव खेदशान्तिकामः ॥७।२४॥

(७) विहसन्निव मेषराशिनं तं वृषभं याति वृषाङ्कशेखरोपि।
उपलिप्सुरिवोभयस्वभावं मिथुनं संनिदधाति सोमसूनुः ॥७।२५॥

(८) तिमिरा..मभ्युपैति।
पृथिवी.......वं शिखीति बुद्ध्या यजमानः ॥७।२६॥

(९) अ...भिरेष दीप्तिमद्भिस्तपनाद्यैः कलिकालिकां विहाय।
ध्रुवमेकपदे कृतीबुभूषुर्नृप पञ्चाग्नि [तपश्चरत्य] नेहा ॥७।२७॥

(१०) इति शुद्धिमती क्षणेत्र गर्भं स्वयमाधत्त हरिस्स्वमेव देव्या।
अचिराद्भविता पुरस्तदेषा क्षि तिरुन्मूलितरामराज्यगर्वा ॥७।२८॥

(११) इति वादिनमादिनावसानं वसनालङ्करणादिदानवर्षैः।
परितः परितोष्य पार्थिवस्तं ग क्रामेसरमुत्सवं चकार ॥७।२९॥

इनमें से प्रथम श्लोक में कवि ने बतलाया है कि पृथ्वीराज और हरिराज के उत्पन्न होने पर विग्रहराज ने समझा कि पृथ्वी सनाथ हो चुकी है। अतः वह शिव के निकट चला गया। इससे यही निर्दिष्ट प्रतीत होता है कि इन दोनों भाइयों के जन्म के बाद वह अधिक दिनों तक जीवित न रहा। विग्रहराज का अन्तिम अभिलेख संवत् १२२० का और पृथ्वीराज द्वितीय का प्रथम अभिलेख संवत १२२४ का है। इसलिये संवत १२२० से संवत् १२२४ के बीच में विग्रहराज की मृत्यु हुई होगी और पृथ्वीराज तृतीय का जन्म भी कहीं इसी काल के आस-पास हुआ होगा।

द्वितीय और तृतीय श्लोक में पृथ्वीराज तृतीय के पिता सोमेश्वर की मृत्यु का उल्लेख है। कवि का अनुमान है कि सोमेश्वर ने विचार किया कि उसके पिता स्वर्ग में अकाकी किस प्रकार से रह सकेंगे और बालक पृथ्वीराज की भी किस प्रकार उपेक्षा की जा सकेगी। यही सोच कर अपनी पतिव्रता पत्नी को उसकी रक्षा के लिये छोड़ कर वह स्वयं स्वर्ग चला गया। इससे स्पष्ट है कि सोमेश्वर की

मृत्यु के समय पृथ्वीराज बालक मात्र था। सोमेश्वर की मृत्यु संवत १२३४ में हुई। यही उसके अन्तिम और पृथ्वीराज के प्रथम अभिलेख का वर्ष है। यदि पृथ्वीराज का जन्म संवत १२०६ या संवत १२१५ में हुआ होता तो उसके लिये "बाल" शब्द प्रयुक्त न किया जाता।

चौथे श्लोक का निर्देश शायद इससे भी अधिक स्पष्ट है। उसके द्वारा कवि ने बतलाया है कि सचिव कदम्बवासने इतने सुचारु रूपसे कार्य किया कि "शिशुतम" पृथ्वीराज के मुखकमलका नवयौवनोचित लक्ष्मीने चुम्बन किया। यहां 'शिशुतम' शब्द ध्यान देने योग्य है। यदि पृथ्वीराज का जन्म संवत १२०६ या १२१५ में हुआ होता तो संवत १२३४ से उत्तरकालीन समय में क्या उसके लिये "शिशुतम" शब्द का प्रयोग किया जाता ?

इसके बाद भी कुछ सन्देह रहे तो वह अन्तिम सात श्लोकों से निवृत किया जा सकता है। इनमें पृथ्वीराजके गर्भलग्न का निर्देश है। उस समय मंगल मकर में, शनि कुम्भ में, शुक्र मीन में, सूर मेष में, चंद्रमा वृष में, और बुध मिथुन राशि में था। अेक श्लोक के खण्डित होने के कारण अन्य ग्रहों की स्थिति स्पष्ट नहीं है। किन्तु ६ वां श्लोक इस बात का द्योतक है कि उस समय पाँच ग्रह उच्चावस्था में वर्तमान थे। साथ ही खण्डित श्लोक की टीका से यह ज्ञात है कि दो ग्रह स्वगृहस्थ थे। अतः बृहस्पति संभवतः कर्क राशि में वर्तमान था।

मैंने स्वयं कुछ गणित करने के प्रयत्न के बाद यह लग्न अपने मित्र, उज्जैन के सूबा श्री बी० के० चतुर्वेदी के सम्मुख रखा। उनका एवं उज्जेनके प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पंडित सूर्यनारायण का मत है कि यह ग्रह स्थिति संवत १२२२ में वर्तमान थी। अतः यह निश्चित है कि पृथ्वीराज का जन्म संवत १२२३ में हुआ। कवि ने पृथ्वीराज का जन्म लग्न नहीं दिया है। बहुत संभव है कि उस समय ग्रह स्थिति इतनी श्रेष्ठ न रही हो।

वर्षा-संबंधी कहावतें

[सरस्वतीकुमार]

(१) महीने

१ कार्त्तिक

बीवाँ बीती पंचमी मूळ नखत्तर होय
खप्पर हाथां जग भ्रमै भीख न घालै कोय १

कातिग सुद अेकादसी वादळ विजळी होय
तो असाढ में भड्डळी ! वरखा चोखी जोय २

२ मार्गशीर्ष

मिगसर वद आठम घटा बीज समेती जोय
तो सावण वरसै भलो साख सवायी होय ३

३ पौष

पोस अंधारी सत्तमी विन जळ वादळ जोय
सावण सुद पूनम दिवस अवसै वरखा होय ४

[नो०—जहां अर्थ संदिग्ध है वहां शब्द के नीचे रेखा खींच दी गयी है]

१ दीवाली बीतने पर जो पंचमी आती है उस दिन, अर्थात काती सुदि पंचमीको, यदि मूल नक्षत्र हो तो दुनिया हाथमें खप्पर लिये भटकेगी पर कोई भीख नहीं डालेगा (अर्थात भयंकर अकाल पड़ेगा)।

२ कातिक सुदी अेकादशीको यदि बादल और बिजली हों तो, हे भड्डुली, आषाढ़में अच्छी वर्षा होगी।

३ मिगसर वदि अष्टमीको यदि बिजलीके सहित घटा देखो तो सावन खूब बरसेगा और फसल सवायी होगी।

४ पौष वदि सप्तमी यदि बिना बादल और पानीके हो तो सावन सुदी पूनोंके दिन अवश्य वर्षा होगी।

पोस अंधारी सत्तमी — जो नहिं बरसै मेह
तो अदरा बरसै सही — जळ-थळ अेक करेह ५

पोस अंधारी सत्तमी — जो घण नह वरस
तो आद्रामें भड्डळी ! — जळ-थळ अेक करै ६

पोस वदी दसमी दिवस — वादळ चमकै वीज
तो वरसै भर भादवै — होय अनोखी तीज ७

४ माघ

माह अंधारी सत्तमी — मेह वीजळी संग
च्यार मास वरसै सही — प्रजा करै नव रंग ८

माह अमावस रातदिन — मेघ पवन घण छाय
धरतीमें आणंद हुवै — संवत चोखो थाय ९

माह ज पड़वा ऊजळी — वादळ वाव ज होय
तेळ घीव अर दूध सब — दिन-दिन मूंघा जोय १०

---

५ पौष वदी सतमीको यदि मेह न बरसे तो आर्द्रा नक्षत्रमें अवश्य होगी जो जल अेवं स्थलको अेकाकार कर देगी ।

६ पौष वदी सतमीको जो बादल न बरसे तो, हे भड्डुली, आर्द्रा में जल और स्थलको अेक कर देगा ।

७ पौष वदी दसमी के दिन यदि बादलोंमें बिजली चमके तो भादों भर वर्षा होगी और तीजोंका त्योहार (भादोंमें होनेवाला तीज और चौथका त्यौहार) अनोखा होगा

८ माह वदी सतमीको यदि बिजलीके साथ बादल हों तो (आगे चलकर) चौमासे भर अवश्य वर्षा होगी और प्रजा नये-नये आनंद करेगी ।

९ माह की अमावसको रात और दिनके समय यदि बादल खूब छावें और खूब पवन हो तो धरती पर आनंद होगा, संवत (वर्ष) अच्छा होगा ।

१० माह सुदी प्रतिपदाको यदि बादल और पवन हों तो तेल, घी और दूध ये सब दिनोंदिन महंगे होंगे ।

माह उज्याळी तीजनै बादळ विजळी देख
गेहूं जन्न संचै करौ मूंघा होसी मेख ११

माह उज्याळी चौथनै मेह बादळा जाण
पान और नारेळ अै मूंघा अन्नस बखाण १२

माह पंचमी ऊजळी वाजै उत्तर बाय
तो जाणीजै भादवो निरजळ कोरो जाय १३

माह सुदी जो सत्तमी सूरज निरमळ होय
डक्क कहै, सुण भड्डळो ! जळ विण प्रिथमी जोय १४

माह सुदी जो सत्तमी बीज मेघ हिम होय
च्यार महीना वरससी सोच करा मत कोय १५

माह सत्तमी ऊजळी बादळ मेह करंत
तो आसाढां, भड्डळी, मेह घणो वरसंत १६

---

११ माह सुदी तृतीयाको यदि बादल और बिजली देखो तो गेहूं और जौ का संग्रह कर रखो, ये निश्चय ही महंगे होंगे, (मेख=निश्चय ही ?, मेष राशि में ?)

१२ माह सुदी चौथको यदि बादल और वर्षा हो तो कहना चाहिये कि पान और नारियल ये अवश्य महंगे होंगे ।

१३ माघ सुदी पंचमीको यदि उत्तर की हवा चले तो जान लेना चाहिये कि भादों पानी (वर्षा) के बिना, खाली, जायगा ।

१४ यदि माघ सुदी सप्तमी हो और सूर्य निर्मल हो (बादल न हों) तो, हे भड्डली, पृथ्वीको बिना पानी देख लेना (अर्थात वर्षा नहीं होगी) ।

१५ माघ सुदी सप्तमीको यदि बिजली, बादल और पाळा हो तो चौमासे भर बरसेगा, कोई चिन्ता मत करो ।

१६ माघ सुदी सप्तमीको यदि बादल वर्षा करें तो हे भड्डळी, आषाढ़ में खूब मेह बरसेगा ।

माह मास री सातम बीख
सोळै स्राध वरसता दीखै १७

माह ज सातम ऊजळी आठम वादळ जोय
तो असाढ गह्-मह् करै वरखै वरसा सोय १८

माह उज्याळी अस्टमी नहीं ज क्रतिका होय
फागण रोळो लागसी सावण मेह न होय १६

माह नवम्मी ऊजळी वादळ करै वियाळ
भादरवै वरसै घणो सरवर फूटै पाळ २०

माह सुदी पूनम दिवस चांद निरमळो जोय
पसु बेचो, कण संग्रहो काळ हळाहळ होय २१

माह पांच होवै रविवार
जाणो, जोसी, काळ-विचार २२

---

१७ माघ महीनेकी सप्तमी यदि वरसे तो सोलहों ही श्राद्ध वरसते हुअे दिखायी देंगे। (सोलह श्राद्ध=श्राद्धोंकी सोलह तिथियां, आश्विनका अंधेरा पाख)।

१८ माघ सुदी सप्तमी और अष्टमी को यदि बादल-पानी हो तो आषाढ वर्षा वरसावेगा और आनंदोत्सव करेगा।

१६ माघ सुदी अष्टमीको यदि कृतिका नक्षत्र न हो तो फागुनमें रोली लगे और सावनमें मेह न हो।

२० माघ सुदी नवमीको यदि बादल उमड़े तो भादोंमें खूब बरसेगा, सरोवरोंकी पारें फूट जायँगी (पानी किनारे तोड़कर बहेगा)।

२१ माघ सुदी पूनोंके दिन यदि चांदको निर्मल देखो तो जानवरोंको बेच दो, और अनाज का संग्रह करो, हलाहल (भयंकर) अकाल पड़ेगा।

२२ माघमें यदि पांच रविवार हों तो, हे जोशी, अकाल का विचार समझो।

माघ मास जो पड़ै न सीत
मेहा नहीं जाणियै, मीत २३

५ फाल्गुन

फागण बद दुतिया दिवस वादळ होय स-वीज
वरसै सावण—भादवो चंगी होवै तीज २४

फागण सुदकी सत्तमी वरसा मे' घण छाय
पांचम-नम आसोज सुद जळ थळ अेक कराय २५

होळी सुक्र-सनीचरी मंगळवारी होय
चाक चहोड़ै मेदनी विरळा जीवै कोय २६

रवि मंगळ सनि होळी आवै।
डक्क कहै मोहि फागण भावै
उळकापात करै भुवि सारी
घर-घर वार रोय नर-नारी २७

---

२३ माघ महीनेमें यदि सर्दी न पड़े तो, हे मित्र, वर्षा मत जानो (चौमासेमें वर्षा नहीं होगी)।

२४ फागुन वदि द्वितीयाके दिन यदि बिजलीके साथ बादल हों तो सावन और भादों (दोनों) बरसेंगे और तीजका त्यौहार अच्छा होगा (खूब मनाया जायगा)।

२५ फागुन सुदी सप्तमीको यदि बादल खूब छावें, या वर्षा हो तो आश्विन सुदि पंचमी या नवमी को (इतना पानी बरसेगा कि) जल-थल सबको अेक कर देगा।

२६ होली यदि शुक्र, शनि या मंगलवार की हो तो पृथ्वी चक्र पर चढ़ जायगी (पृथ्वीकी जनता भटकती फिरेगी?) कोई बिरले ही जीते रहेंगे।

२७ डाक कहता है कि मुझे फागुन अच्छा लगता है, यदि फागुन की होली रवि, मंगल या शनिवार को आवे तो सारी पृथ्वी पर उल्कापात करे और घर-घरमें नर-नारियां रोवें।

६ चैत

चैत अमावस जै घड़ी   वरती पत्रा मांय
तेता सेरां, चतर नर!   कातिग धान विकाय २८

चैती पूनम होय जो   सोम बुध्ध गुरुवार
घर-घर होय वधावणा   घर-घर मंगळचार २९

चैती पूनम चित्त कर   जोसी रूड़ां जोय
सनी अदीतां मंगळां   करसण करै न कोय ३०

नव दिन कहिजै नौरता   सुकल चैतकै मास
जळ वूठै विजळी हुवै   जाणो गरभ-विनास ३१

मेह पड़ग्या चैत
तो खेतीहर ना खेत ३२

७ वैशाख

वैसाखां बद प्रतपदा   नवमी निरती जोय
जो घन दीखै उनमणा   वरसै सगळा लोय ३३

---

२८ चैतकी अमावस पंचांग में जितनी घड़ी रही, हे चतुर नर, कातिकमें उतने ही सेर अनाज बिकेगा।

२९ चैतकी पूनों यदि सोम, बुध या गुरुवारको हो तो घर-घरमें बधाइयां हों और घर-घरमें मंगलचार हों

३० हे जोशी, चैत्र की पूनों की ओर ध्यान दो, अच्छी तरह देखो, यदि वह शनि, रवि या मंगलवारको हो तो कोई खेती न करे।

३१ चैतके मासमें शुक्ल पक्षके नौ दिन जो नौरते (नौरात्र) कहलाते हैं, उन दिनोंमें यदि पानी वरसे और बिजली हो तो समझ लो कि वर्षा के गर्भका नाश हो गया (गर्भ अधूरा गल गया—आगे वर्षा नहीं होगी)।

३२ यदि चैतमें पानी पड़ गया तो न तो किसान हैं न खेत।

३३ बैसाख वदी प्रतिपदा और नवमीको देखो, इन दिनोंको यदि उमड़े हुअे-शिखरदार-बादल दिखायी दें तो सारे लोक में वर्षा होगी।

बद वैसाख अमावसी रेवति होय सुगाळ
मध्यम होवै अस्विनी भरणी करै दुकाळ ३४

सुद वैसाखां प्रथम दिन बादळ-वीज करै
दामां विना विसायजै पूरी साख भरै ३५

अखैतीजके तिथ दिनां गुरु रोहण-संजुत्त
भद्‌बाहु गुरु कहत है निपजै नाज बहुत्त ३६

आखातीज दूज की रैण
जाय अचानक जांचै सैण
कछुक चीज मांगी नट जाय
तो जाणीजै काळ सुभाय
हँसकर देय, नटै नहिं कोय
माघा, सही जमानो होय ३७

---

३४ बैसाख वदी अमावसको यदि रेवती नक्षत्र हो तो सुकाल (सुभिक्ष) हो, अश्विनी हो तो मध्यम हो; और भरणी हो तो दुर्भिक्ष करे।

३५ बैसाख सुदी प्रतिपदा के दिन यदि बिजली और बादल हों तो बिना दामोंके खरीदो पूरी फसल होगी (वर्षा अच्छी होगी और अैसी फसल होगी कि सारा कर्ज चुक जायगा।

३६ अक्षयतृतीयाकी तिथि के दिन यदि बृहस्पति रोहिणी नक्षत्र से संयुक्त हो तो, भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि, बहुत अनाज पैदा होगा।

३७ आखतीज पर्वको द्वितीयाकी रातको अचानक जाकर किसी स्वजन-मित्र से (कोई चीज) मांगे। यदि मांगने पर वह इनकार कर जाय तो अकालके लक्षण समझो। पर यदि हँसकर दे, इनकार न करे तो, हे माघजी, अवश्य सुकाल हो।

आखातीजां परवा बाजै
तो असलेखा गहरी गाजै
भीजै राजा, राणी भूलै
रोग-दोख में परजा झूलै ३८

चन्द्र छोडै हिरणी
लोग छोडै परणी ३९

आखातीजां पीठ दै वाव़ळ आवै मोड़ी
जो जळदी दिन पांच-सात तो साख नीपजै थोड़ी ४०

आखातीजां मास अेक दै वाव़ळ आवै काळी
भर भादरवै गाजसी मेघ-घटा मतवाळी ४१

आखातीजां रात नै जो नहिं बोलै स्याळ
खड़ पाणी विन मानवी मोटो पड़ै दुगाळ ४२

---

३८ अक्षयतृतीयाको यदि पुरवा हवा चले तो अश्लेषा नक्षत्रमें बादल खूब गरजेंगे (खूब वर्षा होगी)। राजा भीगेंगे, रानियां भूलेंगी ? और प्रजा रोग-दोषमें झूलेगी (ज्वरादि रोग बहुत होंगे)।

३९ अक्षयतृतीयाके दिन यदि चंद्रमा मृगशिरा नक्षत्र को छोड़ जाय (उससे पहले अस्त हो जाय) तो (अैसा भयंकर अकाल पड़े कि) लोग विवाहिता स्त्री तकको छोड़ दें।

४० अक्षयतृतीयाके अेक महीनेके बाद यदि काली-पीली आंधी आवे तो भादों भर मेघों की घटा मतवाली होकर गरजेगी।

४१ अक्षयतृतीयाके बाद यदि आंधी देरसे आवे तो सुभिक्ष होगा पर यदि शीघ्र, पांच-सात दिन में ही, आ जावे तो फसल थोड़ी पैदा होगी।

४२-४४ अक्षयतृतीयाकी रातको यदि सियार न बोलें तो मनुष्य घास और पानी बिना रहेंगे और मोटा दुष्काल पड़ेगा। यदि सियार पूरब या उत्तर की ओर बोलें तो

पूरब उत्तर बोलतां समयौ भलो कहंत
पिच्छम कहिजै करवरो दिख्खण काळ महंत ४३

चहु दिस अेक टहूकड़ो वरख बडो विकराळ
कोइक जावै माळवै कोइक सिधां पार ४४

वैसाखां पूनम दिवस मेहारंभ करै
धान सुहंगो भादवै भडळी ! बैण धरै ४५

वैसाखां जो घण करै पांच वरण आकास
तो जाणेवो भड्डळी, पुहमी नीर निवास ४६

८ ज्येष्ठ

जेठ घराहड़ जो करै सावण सलिल न होय
ज्यूं सावण त्यूं भादवो नीर निवांणां जोय ४७

जेठ बदी दसमी दिवस जे सनि-वासर होय
पाणी होय न धरण में विरळा जीवै कोय ४८

अच्छा जमाना कहते हैं, पश्चिममें बोलें तो जमाना साधारण कहा जाता है, और दक्षिणमें बोलें तो बड़ा भारी अकाल। यदि चारों दिशाओंमें सियार बोलें और अेक ही आवाज करें तो वर्ष बड़ा भयंकर हो, कोई मालवे जाय और कोई सिंधके पार।

४५ बैसाख सुदी पूर्णिमाके दिन यदि मेह आरंभ करे तो, हे भड्डुली, बात सुन, भादोंमें धान सस्ता होगा।

४६ बैसाख में यदि आकाशमें पंचरंगे बादल हों तो, हे भड्डुली, पृथ्वी पर पानीका निवास जान लो।

४७ जेठमें यदि बादल खूब गड़गड़ावें तो सावनमें पानी नहीं बरसेगा। जैसे सावनमें वैसे ही भादोंमें भी पानी केवल नीचे स्थानोंमें ही देखनेको मिलेगा।

४८ जेठ बदी दसमीके दिन यदि शनिवार हो तो पृथ्वी पर पानी नहीं बरसेगा, और कोई बिरले ही जीवित रहेंगे।

जेठ मास में गाजियो जे उजियाळै पाख
गरभ गळ्या सै पाछला जोसी बोलै साख ४९

जेठ उज्याळै पाख में आद्रादिक दस रिच्छ
सजळ होय निर्जळ कहो निर्जळ सजळ प्रतच्छ ५०

जेठ उज्याळी तीज दिन आद्रा रिख वरसंत
जोसी भाखै, भड्डळी ! दुरभिख अवस करंत ५१

च्यारं ज पाया मूळ का तपै जेठ कै मास
च्यार पाख में जाणियै अत घण पावस आस ५२

६ आषाढ़

जेठ वीत्यां पैल पड़वा जे अंबर थरहरै
आसाढ-सावण काढ कोरो भादवै वरखा करै ५३

---

४९ जेठ मासमें शुक्लपक्षमें यदि बादल गरजे तो, जोशी साक्षी कहता है कि, पिछले सब गर्भ गल गये (पानी नहीं बरसेगा) ।

५० जेठके शुक्लपक्षमें आर्द्रा आदि दस नक्षत्रोंमें यदि पानी बरसे तो वर्षा नहीं होगी और यदि पानी न बरसे तो प्रत्यक्ष ही वर्षा होगी ।

५१ जेठ सुदी तृतीयाके दिन यदि आर्द्रा नक्षत्र हो और पानी बरसे तो, जोशी कहता है कि हे भड्डली, अवश्य ही दुर्भिक्ष करे ।

५२ जेठके महीनेमें मूल नक्षत्र के चारों पाये (जब चंद्रमा मूल नक्षत्र में हो) यदि खूब तपें (उन दिनों खूब गर्मी पड़े) तो चार पखवाड़ोंके भीतर ही खूब वर्षा की आशा समझो ।

५३ जेठ बीतनेके बाद जो पहली प्रतिपदा पड़े उस दिन (अर्थात आसाढ़ वदी प्रतिपदाको यदि आकाश गरजे तो आसाढ़ और सावन दोनों को खाली निकाल कर भादों में वर्षा करे ।

पैंली पड़वा गाजै
तो दिन बहोत्तर वाजै ५४

धुर असाढ पड़वा दिवस जे अंबर गरजंत
छत्री-छत्री जूझवै निहचै काळ पड़ंत ५५

धुर असाढ दुतिया दिवस चमक निरंतर जोय
सोम सुकरां सुर-गुरां ता भारी जळ होय ५६

धुर असाढ दुतिया दिवस निरमळ चंद उगंत
सोम सुक्र गुरुवार तो जळ-थळ अेक करंत ५७

धुर असाढकी पंचमी बादळ होय न बीज
बेचो गाडी-बळदिया निपजै काइ न चीज ५८

आसाढां वद पंचमी नहिं वादळ नहिं बीज
करसां करसण मत करो धरण न नाखो बीज ५९

---

५४ यदि आसाढ़ वदी प्रतिपदाके दिन बादल गरजें तो बहत्तर दिनों तक हवा चले (वर्षा न हो)।

५५ आसाढ वदी प्रतिपदाके दिन यदि आकाश गरजे तो क्षत्रिय लोग परस्पर जूझें (लड़कर मरें—युद्ध हो) और निश्चय ही अकाल पड़े ।

५६ आसाढ़ वदी द्वितीयाके दिन यदि सोम, शुक्र, या गुरुवार हो और निरंतर बिजलीकी चमक दीखे तो खूब वर्षा होगी ।

५७ आसाढ़ वदी द्वितीया के दिन यदि चंद्रमा निर्मल ही उदय हो अर्थात बादल आदि कुछ न हो तो जल और स्थल को अेक कर देगा ।

५८ आसाढ़ वदी पंचमीको यदि न बादल हों, न बिजली, तो गाड़ी-बैल सब कुछ बेच दो (खेती न करो क्योंकि) कोई चीज पैदा नहीं होगी ।

५९ आसाढ़ वदी पंचमीको यदि न बादल हों न बिजली तो, हे किसानों, खेती मत करो, पृथ्वी में बीज मत डालो ।

घुर असाढ की सत्तमी जो ससि निरमळ दीख
पीव, पधारो माळवै मांगत डोलो भीख ६०

घुर आसाढां अस्टमी उत्तर बहै समीर
इन्द्र महोच्छव, माघजी ! सावण वरसै नीर ६१

जो पूरब तो करबरो जो दिक्खण तो काळ
समौ ज सखरो नीपजै बाजै पिच्छम बाळ ६२

काळा बादळ करवरो धोळा करै सुगाळ
चंदो ऊगै निरमळो पड़ै अचींतो काळ ६३

न गिण तीन सै साठ दिन ना कर लगन विचार
गिण नवमी आसाढ वद होय कौण-सै वार ६४

---

६० आसाढ़ वदी सप्तमीके दिन यदि चन्द्रमा निर्मल दिखायी पड़े तो, हे पति ! तुम मालवे जाओ और भीख मांगते फिरो (भीख मांगकर पेट पालो) ।

६१-६२ आसाढ़ वदी अष्टमीको यदि उत्तर की हवा चले तो, हे माघजी ! इंद्र के बड़ा उत्सव होगा और सावनमें पानी बरसेगा; यदि पूरब की हवा चले तो जमाना साधारण होगा; यदि दक्षिणकी चले तो अकाल पड़ेगा पर यदि पश्चिमकी हवा चले तो जमाना खूब अच्छा होगा ।

६३ आसाढ़ वदी अष्टमीको यदि चन्द्रमा काले बादलों में उगे तो जमाना साधारण करे सफेद में उगे तो सुकाल करे पर यदि निर्मल उदय हो—बादल न हों—तो ऐसा अकाल पड़े जो सोचा भी न हो ।

६४-६६ वर्ष के तीन सै साठ दिनोंका विचार न करो, न लग्नका विचार करो । केवल इसका विचार करो कि असाढ़ वदी नवमी किस वारको पड़ती है । यदि रविवारको पड़े तो अकाल हो, मंगलको पड़े तो जगत डगमग (चल-विचल) हो जाय, बुधको पड़े तो जमाना सम हो, सोम, शुक्र या बृहस्पतिको पड़े तो पृथ्वीको फूलती-फलती देखो, पर यदि दैवयोगसे कहीं शनि मिल जाय तो निश्चय ही रौरव नरक हो ।

रवि अकाळ, मंगळ जग डिगै
बुध समयो सम भाव स लगै
सोम सुक्र सुर-गुर जो होय
पुहमी फूल-फळंता जाय
देव्र जोग जो सनि मिळे   निहचं रौरव्र होय ६५

धुर असाढ दसमी दिव्रस   रोहण नखतर होय
सस्ता धान विकायसी   हाथ न घाले कोय ६६

सुद असाढ की पंचमी   गाज धमाधम जोय
तो यूं जाणो, भड्डळी,   मध्यम मेहा होय ६७

आसाढां सुद पंचमी   जोर खिव्रेलो बीज
कोठा छाड़ो बेच कण   वाव्रण राखो बीज ६८

आसाढांरी सूद नम   घण वादळ, घण बीज
नाळा-कोठा खोल दो   राखो हळ नै बीज ६९

असाढांरी सुद नम   ना वादळ, ना बीज
हळ फाड़ो, ईंधण करो   बैठा चाबो बीज ७०

---

६६ असाढ़ वदी दशमी के दिन यदि रोहिणी नक्षत्र हो तो धान सस्ता बिकेगा, कोई हाथ नहीं डाल सकेगा (नहीं रोक सकेगा)।

६७ असाढ़ सुदी पंचमी को यदि बादल गड़गड़ाहट के साथ गरजे तो यह समझो कि मेह मध्यम (साधारण) होगा।

६८ असाढ़ सुदी पंचमी को यदि बिजली चमके तो अनाज की कोठियां खोल लो, और धान बेचना आरंभ करो पर बोने के लिअे बीज रख लो।

६९ असाढ़ सुदी नवमी को यदि न बादल हों और न बिजली तो हलों को फाड़कर ईंधन बनाओ और बीजों (के लिअे रखे हुअे अनाज) को बैठे चबाओ (अकाल पड़ेगा)।

७० असाढ़ सुदी नवमी को यदि खूब बादल हों और खूब बिजली हो तो नालियां और कोठियां सब खोल दो, हल और बीज रख लो (वर्षा होगी)।

सुद असाढ नवमी दिवस वादल भीनो चंद
तो यूं जाणो, भड्डळी ! भोमी घणो अणंद ७१

सनि आदीतां मंगळां जे पोढै सुर-राय
अन्न ज मूंघो होवसी घोरां चलसी वाय ७२

रवि टीडी, बुध कातरा मंगळ मूसा जोय
जे हर पौढे सनिचरां विरळा जीवै कोय ७३

सोम सुक्र अर सुरगुरां जे पोढै सुर-राय
अन्न बहोळो नीपजै पुहमी सुख सरसाय ७४

आसाढी पूनम दिनां वादळ भीणो चंद
तो जोसी कह, भड्डळी, सगळां नरां अणंद ७५

आसाढी पूनम दिनां गाज वीज वरखंत
विणस्या लच्छण काळका आणंद माणो संत ७६

---

७१ असाढ़ सुदी नवमी के दिन यदि चन्द्रमा बादलों से भीगा (या घिरा) हो तो, हे भड्डली, यों समझो कि पृथ्वी में खूब आनन्द होगा ।

७२ यदि सुरोंके राजा विष्णु शनि, रवि या मंगल को शयन करें (असाढ़ सुदी देवशयनी अेकादशी इन वारों को पड़े) तो अनाज महँगा होगा और हवा जोरों से चलेगी ।

७३ यदि भगवान रवि को शयन करें तो टिड्डी हो, बुधको करें तो कातरा हों, मंगल को करें तो चूहे हों, और यदि शनिवार को शयन करें तो कोई बिरले ही जीते रहेंगे ।

७४ यदि भगवान सोम, शुक्र और गुरुवार को शयन करें तो अनाज खूब पैदा हो और पृथ्वी पर सुख फैले ।

७५ असाढ़ की पूनों के दिन यदि चन्द्रमा बादलों में छिपा हो तो, जोशी कहता है कि हे भड्डली ! सब मनुष्यों को आनन्द हो ।

७६ असाढ़ की पूनों के दिन बादलों की गर्जना हो, बिजली हो और मेह बरसे तो, हे संतों ! अकाल के लक्षण नष्ट हो गये, आनन्द मनाइये ।

आसाढी पूनम दिनां निरमळ ऊगै चंद
कोई सिंध कोइ माळवै जायां कटसी फंद ७७

उजियाळी आसाढरी पूनम निरखी जोय
वार सनीचर जो मिलै विरळा जीवै कोय ७८

आसाढी पूनम दिवस सोम सुक्र गुरुवार
पूर्वासाढा नखत तो घर-घर मंगळचार ७९

पड़वा पूनम द्वादसी वाजै पवन प्रचंड
तो घण थोड़ा वरससी मेह गया नव खंड ८०

पूनम नवमी 'साढ सुद निरमळ निसा मयंक
दुरभिख नहचै जाणियै रुळै राव अर रंक ८१

सुद आसाढ में बुध्धको उदै हुयो जो देख
सुक्र-अस्त सावण लखो महा-काळ अवरेख ८२

---

७७ असाढ़ की पूर्नों के दिन यदि चन्द्रमा निर्मल उदय हो तो किसी के कष्ट सिंध जाने से और किसी के मालवे जाने से ही मिटेंगे (अकाल पड़ेगा)।

७८ असाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की देखभाल करो, यदि उस दिन शनिवार मिले तो कोई विरले ही जीवेंगे।

७९ असाढ़ की पूर्नों के दिन सोम, शुक्र या गुरुवार हो और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो घर-घर में मंगलोत्सव हों।

८० असाढ़ सुदी प्रतिपदा, द्वादशी या पूर्णिमा को यदि प्रचंड हवा चले तो बादल नवों खंडों में बिखर गये और साधारण वर्षा करेंगे।

८१ असाढ़ सुदी पूर्णिमा या नवमी के दिन रात में चंद्रमा निर्मल हो (बादल आदि न हों) तो निश्चय ही दुर्भिक्ष समझो, राजा-रङ्क सब नष्ट हो जायँगे।

८२ असाढ़ सुदी में यदि बुध का उदय होना देखो और सावन में शुक्र का अस्त होना देखो तो महा अकाल समझो।

१० श्रावण

स्रावण पैली चौथ दिन जे मेहा वरसाय
तो भाखै यूं भड्डुली ! साख सवायी थाय ८३

सावण पैली पंचमी जो धाड़ूकै मेव
च्यार मास वरसै सही सत भाखै सहदेव ८४

सावण धुर दिन चौथकै और पंचमो जोय
गाजै वरसै घमधमे सहो जमानो होय ८५

सावण चौथ र पंचमी वीज-गाज नहिं मेह
निहचै दुरभिख देखियै पावस ऊडै खेह ८६

धुर सावणकी पंचमी वीज-गाज नहिं मेह
क्यूं हळ जोतै, बावळा ! निहचै ऊडै खेह ८७

सावण पैली पंचमी जो वाजै घण वाव
काळ पड़ै चहुं देसमें मिनख मिनखनै खाय ८८

---

८३ सावन वदी चतुर्थी के दिन यदि मेह बरसे तो हे भड्डुली, यों कहते हैं कि, फसल सवायी हो।

८४ सावन वदी पंचमी को यदि बादल गड़गड़ावें तो चार महीने अवश्य बरसे, सहदेव सत्य कहता है ।

८५ सावन वदी चौथ और पंचमी के दिन यदि बादलों की गर्जना और घमघमाहट और वर्षा हो तो अवश्य ही सुभिक्ष हो ।

८६ सावन वदी चौथ और पंचमी को यदि न बिजली हो, न गर्जना, और न पानी, तो निश्चय दुर्भिक्ष देखो और बरसात में धूल उड़े ।

८७ सावन वदी पंचमी को यदि न बिजली हो, न गर्जना और न पानी तो, हे बावले ! किसलिये हल जोतते हो ? अवश्य धूल उड़ेगी ।

८८ सावन वदी पंचमी को यदि खूब हवा चले तो चारों ओर अकाल पड़े और मनुष्य मनुष्य को खावे ।

सावण पैली पंचमी जो न धड़ूक्यो व्याल
तूं, पिव ! जायै माळवै हूं जाऊं मौसाळ ८९

सावण पैली पंचमी मेह न मांडै आळ
पीव ! पधारो माळवै हूं जाऊं मौसाळ ९०

सावन पैली पंचमी ना बादळ, ना बीज
हळ फाड़ो, ईंधण करो ऊभा चावो बीज ९१

सावण पैलै पाखमें दसमी रोहण होय
मूंघो नाज 'र अळप जळ विरळा विळसै कोय ९२

सावण धुर अेकादसी मे' गरजै अधरात
तूं पिव ! जायो माळवै हूं जाऊं गुजरात ९३

सावण बद अेकादसी रोहण बरसै मेव
न्रप नंदै, विळसै प्रजा इम भाखै सहदेव ९४

---

८९ सावन वदी पंचमी को यदि बादल न गड़गड़ाये तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाना और मैं पीहर जाऊंगी (अकाल पड़ेगा)।

९० सावन वदी पंचमी को यदि वर्षा का आसार न हो तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाओ और मैं पीहर जाऊं।

९१ सावन वदी पंचमी को यदि न बादल हों और न बिजली तो हल को फाड़कर ईंधन बनाओ और खड़े-खड़े बीज (बीज के लिये रखे अनाज) को चबाओ।

९२ सावन के पहले पक्ष में यदि दशमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो अनाज महंगा और पानी कम हो, और कोई बिरले ही आनंद मनावें।

९३ सावन वदी अेकादशी को यदि आधी रात के समय बादल गरजें तो, हे प्रिय, तुम मालवे जाना और मैं गुजरात जाऊं।

९४ सावन वदी अेकादशी को रोहिणी नक्षत्र हो और पानी बरसे तो, सहदेव यों कहता है कि, राजा आनंद करें और प्रजा सुख भोगें।

सावण वद अेकादसी वाजै उत्तर बाय
घर-घर हुवै वधावणा घर-घर मंगळ थाय ९५

सावण वद अेकादसी गरभां भाण उगंत
लोग सुखी, बरखा सुभिख च्यार मास वरसंत ९६

सावण वद अेकादसी जेती रोहण होय
तेतो समौ ज नीपजै चिंता करो न कोय ९७

सावण- पैलै पाखमें जे तिथि ऊणी थाय
कइयक-कइयक देसमें टाबर बेचे माय ९८

सावण सुकला चौथ दिन जो ऊगंतां भाण
नहिं दीखै तो, भड्डली ! पुख्य न बरखा जाण ९९

सावण सुद री सत्तमी स्वाती ऊगै सूर
रिखीसरां ! डूंगर चढो नदी वहै भरपूर १००

---

९५ सावन वदी अेकादशी को यदि उत्तर की हवा चले तो घर-घर बधाइयां हों और घर-घर आनन्द हों ।

९६ सावन वदी अेकादशी को यदि सूरज बादलों में ऊगे तो वर्षा और सुभिक्ष हो, चार महीने मेह बरसे और लोग सुखी हों ।

९७ सावन वदी अेकादशी को जितना रोहिणी नक्षत्र हो उतना ही सुभिक्ष होगा, कोई चिन्ता मत करो ।

९८ सावन के पहले पक्ष में यदि कोई तिथि कम हो जाय तो किसी-किसी देश में मा बच्चे को बेचे (घोर अकाल पड़े) ।

९९ सावन सुदि चौथ को यदि उगता हुआ सूर्य दिखायी न पड़े (बादलों में छिपा हो) तो, हे भड्डुली, पुष्य नक्षत्र में (सूर्य के आने पर) वर्षा न हो ।

१०० सावन सुदी सप्तमी को यदि सूर्य स्वाति नक्षत्र में उगे तो, हे ऋषीश्वरों ! पहाड़ पर चढ़ जाओ, नदी भरपूर बहेगी ।

११ भाद्रपद

रवि ऊगंतां भादवै अम्मावस रवि वार
धनस उगंतां पच्छिमा होसी हाहाकार १०१

मुदगर जोग ज भादवै अम्मावस रवि वार
उज्जीणीथी अथमणै होसी हाहाकार १०२

भादरवै सुद पंचमी स्वात-संजोगी होय
दोनूं सुभ जोग ज मिलै मंगळ वरतै लोय १०३

सावण स्वाति न वूठियौ कांई चिंतै नाह
भादरवै जुग रेळसी छट्ठां अनुराधाह १०४

जेठ गयो 'साढ ज गयो सावणिया ! तूं जाह
भादरवै जुग रेळसी छठ दिन अनुराधाह १०५

भाद्रव छठ छूट्यो नहीं बिजळीरो भणकार
तूं पिव ! जाये माळवै हूं जाऊं मौसाळ १०६

---

१०१ भादो की अमावस को रविवार हो और सूर्योदय के समय पश्चिम में इन्द्रधनुष का उदय हो तो हाहाकार हो। [अर्थ संदिग्ध है]

१०२ भाद्रपद में मुद्‌गर योग में अमावस के दिन रविवार हो तो उज्जैन के पश्चिम की ओर हाहाकार हो (अकाल पड़े)।

१०३ भाद्रपद सुदी पंचमी यदि स्वाती नक्षत्र से संयुक्त हो, यदि ये दोनों शुभ योग मिल जायँ तो लोग मंगल मनावेंगे।

१०४ सावन में यदि स्वाति नक्षत्र न बरसा तो, हे नाथ ! क्या चिन्ता करते हो ! भाद्रपद में छठ के दिन अनुराधा नक्षत्र आकर जगत को बहा देगा (खूब वर्षा होगी)।

१०५ जेठ गया; असाढ़ भी गया; हे सावन, तू भी चला जा। (कोई पर्वाह नहीं); भाद्रपद में छठ के दिन अनुराधा जगत को बहा देगा।

१०६ भाद्रपद की छठ को यदि बिजली की चमक नहीं छूटी (बिजली नहीं चमकी) तो, हे प्रिय ! तुम मालवे जाना, और मैं पीहर जाऊँगी।

१२ आश्विन

धुर आसोज अमावसां जे आवै सनिवार
समयौ होसी करबरौ पिंडत कहै बिचार १०७

१३ पुनः कातिक

कातिग डंबर नांम जळ गैली देख न भूल
रूपाळा गुण-बायरा रोहीड़ रा फूल १०८

भूल्या फिरै गंवार काती भाळै मेहड़ा १०९

१४ मिश्र महीने

आखा तीज न रोहणी पोह अमावस मूळ
राखी सरवण ना मिळै चहुं दिस ऊडै धूळ ११०

आख्यां रोहण-बायरी पोही मूळ न होय
राखी सरवण होय नहिं मही डुळंतो जोय १११

---

१०७ आसोज वदी अमावस को यदि शनिवार आवे तो पंडित विचार कर कहता है कि जमाना साधारण होगा।

१०८ कातिक में बादलों का आडंबर हो तो भी पानी नहीं बरसेगा। हे बावली, उन्हें देखकर भूल मत। वे तो सुन्दर रूपवाले, किन्तु गुणों से रहित, रोहीड़े के फूल हैं।

१०९ वे गँवार भूले हुअे फिरते हैं जो कातिक में मेह खोजते हैं।

११० अक्षयतृतीया को रोहिणी नक्षत्र हो, पौष की अमावस को मूल नक्षत्र हो, रक्षा-बँधन (सावन सुदि पूर्णिमा) के दिन श्रवण नक्षत्र का मेल न हो तो चारों ओर धूल उड़े (वर्षा न हो)।

१११ अक्षयतृतीया बिना रोहिणी के हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, और रक्षाबंधन के दिन श्रवण न हो तो पृथ्वी को भटकती देखना (अकाल पड़े)।

आखा रोहण-बायरी जेठी मूळ न होय
विजया-दसमी स्रवण नहिं काळ निहंचै जोय ११२

अखै तीज रोहण ना होई
पोह अमावस मूळ न जोई
राखी सरवण-हीण विचारै
कातिग-पूनम क्रतिका टारै
माह मही······················
कहै, भड्ळी ! साख विनासी ११३

माह बुलायो निरमळो जे भूमळियो चैत
आखातीज न गाजियो खेह ऊडसी खेत ११४

माघ मसक्कां, जठ सी सावण ठंडी वाव
भीम कहै, सुण भड्ळी ! नहिं बरसणरो दाव ११५

काती सुद बारससूं देख
मिगसर सुद दसमी अवरेख

---

११२ अक्षयतृतीया बिना रोहिणी के हो, जेठ की अमावस को मूल नक्षत्र न हो और विजयादशमी को श्रवण नक्षत्र न हो तो अवश्य ही अकाल देखना ।

११३ अक्षयतृतीया को रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबंधन श्रवण के बिना हो, कातिक की पूर्णिमा को कृतिका न हो, और माघ·······(स) तो, हे भड्डली ! कहो कि फसल नष्ट हो गयी ।

११४ माघ में गर्मी, जेठ में शीत और सावन में ठंढी हवा चले तो, भीम कहता कि हे भड्डली ! सुन, यह बरसने का आसार नहीं ।

११५ माघ यदि निर्मल (बिना बादल) आवे, चैत में साधारण बूंदा बांदी हो अक्षय-तृतीया को बादल न गरजे तो खेतों में धूल उड़ेगी (वर्षा नहीं होगी) ।

पोह सुदी पंचमी विचार
माह सुदी सातम निरधार
ता दिन जोय मेघ गरजंत
मास च्यार अंबर वरसंत ११६

माघ मास में पड़ै तुखार
फागण मास उड़ावै छार
चैत मास जो बीज लकोवै
भर वैसाखां केसू धोवै
जेठ मास जो जाय तपंतो
तो कुण राखै जळ वरखंतो ११७

चैत निरमळो भर वैसाखां केसू धोवै कंता
जेठ मास जो जाय तपंतां कुण राखै जळ वरखंता ११८

दो सावण, दो भादवा दो काती, दो माह
ढांढा-धोरी वेचकर नाज विसावण जाह ११९

---

११६ कातिक सुदी द्वादशी, मगसिर सुदी दशमी, पौष सुदी पंचमी और माघ सुदी सप्तमीको देखो। उस दिन यदि बादल गरजें तो चौमासे भर आकाशसे वर्षा हो।

११७ माघ महीने में पाला पड़े। फागुन में धूल उड़े, चैत में बिजली न चमके, बैसाख में वर्षा हो और जेठका महीना तपता हुआ जाय तो पानी को बरसने से कौन रोक सकता है?

११८ हे कंत, यदि चैत निर्मल (बादल रहित) हो, बैसाख वर्षा हो और जेठ तपता हुआ बीते तो जलको बरसते हुअे कौन रोक सकता है?

११९ यदि दो सावन या दो भाद्रपद या दो कातिक या दो माघ हों तो बैल-गोरू बेच कर अनाज खरीदने को जाओ (अकाल पड़ेगा)।

दो असाढ, दो भादवा दो आसोजके मांह
सोनो-चांदी वेचकर नाज विसावो साह १२०

पंच मंगळ फागण हुवै पोह पांच सनि जोय
काळ पड़ै, सुण चतर नर! बीज न वावो कोय १२१

जेठ 'दीत, भादू सनी, माह ज मंगळ होय
परजा भटकै अन बिना विरळा जीवै कोय १२२

सावणमें तो सूर्यो वाजै भादरवै परवाई
आसोजां आथूणी चालै ज्यूं-ज्यूं साख सवाई १२३

---

१२० दो आसाढ़ या दो भाद्रपद या दो आश्विन में, हे शाहजी! सोना-चान्दी बेचकर अनाज खरीदो (अनाज का भाव बढ़ेगा, अकाल पड़ेगा)।

१२१ फागुनमें यदि पांच मंगल हों, या पौषमें पांच शनि हों तो, हे चतुर पुरुष! सुनो, अकाल पड़ेगा, कोई बीज मत बोवो।

१२२ जेठमें पांच रविवार, भादोंमें पांच शनिवार या माघमें पांच मंगलवार हों तो प्रजा बिना अन्न के भटके, और कोई बिरला ही जीवे।

१२३ सावनमें उत्तर की हवा चले, भादोंमें पुरवा (पूर्व की हवा) चले, और आसोज में पश्चिम की हवा चले तो ज्यों-ज्यों हवा चले त्यों-त्यों फसल सवायी हो!

सूरसागर की दो सबसे पुरानी प्रतियें

[दीनानाथ खत्री]

महाकवि सूरदासके सूरसागरकी जो प्रतियाँ अब तक प्रकाश में आयी हैं उनमें उदयपुरके सरस्वती-भंडारकी प्रति सबसे प्राचीन है। इसके विषयमें सर्व-प्रथम सूचना उदयपुरके पं० मोतीलाल मेनारियाने उक्त सरस्वतीभंडारके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूचीकी प्रस्तावनामें दी थी जो इस प्रकार है —

> पुस्तकालयमें सूरसागर, बिहारी-सतसई और राजविलास हिन्दी के इन तीन सुप्रसिद्ध ग्रंथों की सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां भी विद्यमान हैं इन ग्रन्थों की इस पुस्तकालयकी प्रतियोंसे अधिक पुरानी प्रतियां भारतके अन्य किसी भी प्रसिद्ध पुस्तकालयमें नहीं हैं।

यह प्रति सं० १६९७ की लिखी है। इसके अंतिम पृष्ठ (पत्र संख्या २०२) का चित्र भी उक्त सूचीमें प्रकाशित किया गया था।

इसके पश्चात् उदयपुरसे निकलनेवाले राजस्थान-साहित्य मासिकके द्वितीय अंकमें मेनारियाजीने क्या सूरदासने सवालाख पद लिखे थे ?' नामक लेख प्रकाशित कराया जिसमें इस प्रतिका इस प्रकार उल्लेख किया —

> उदयपुर-राज्यके राजकीय पुस्तकालय सरस्वती-भंडारमें सूरसागरकी अेक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है जो अभी तककी प्राप्त प्रतियोंमें सबसे प्राचीन है। इसमें ८१२ पद हैं, यह प्रति राठौड़ वंशकी मेड़तिया शाखाके महाराजाधिराज महाराजा श्रीकिशनदासके पठनार्थ सं० १६९७ में लिखी गयी थी, इसका अन्तिम पुष्पिका-लेख यह है—संवत १६ आषाढादि ९७ वर्षे प्रथम जेष्ठ सुदि १३ बुधवारे चित्रा नक्षत्रे सुभयोगे श्री राठोड वंसे राष्ट्रकूट मेड़तीया महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री श्रीकिशनदासजी चिरंजीवी विजय राज्ये स्वयं पुस्तिका वाचनार्थः। सुभस्थान श्री घाणोरा सुभस्थाने

पुस्तिका लिखतं ।। श्री सूरसागर लिखायो तेकी पद-संख्या ८१२ आठ सै बारह लिखायाः ।। श्री चित्रावाल गछे वणारिस श्री महेसजी शिष्य वणारिस तिलकचन्दः ।। प्रतिकी लिखावट बहुत सुन्दर और स्पष्ट है, अक्षर भी बड़े बड़े और सुडौल हैं। इसका लिपिकार तिलकचंद कोई सुपठित व्यक्ति था..............इससे अेक बात तो बहुत ही स्पष्ट हो जाती है। वह यह कि संवत १६९७............तक सूरसागरके पदों की संख्या १००० से अधिक नहीं थी।

आगे हम सूरसागरकी दो अैसी प्रतियोंका परिचय देते हैं जो उक्त उदयपुरकी प्रतिसे भी प्राचीन हैं।

ये दोनों प्रतियें बीकानेरके राजकीय पुस्तकागार अनूप संस्कृत पुस्तकालयमें विद्यमान हैं। इनका लिपिकाल संवत १६८१ और सं० १६६५ है।

प्रथम प्रतिमें पहले सूर के पद हैं और अन्तके कुछ पृष्ठोंमें आनंद, तुलसी, करण और परमानंदके पदों का संग्रह है। इस पिछले संग्रहमें भी कुछ पद सूरके हैं। यह प्रति मटियाले रंगके कागज पर लिखी हुई गुटकाकार है। इसका साइज ९"×६।।।" है। कागज पुराना होनेसे बहुतसे पत्र किनारों परसे खंडित हो गये हैं परन्तु मुख्य ग्रंथके पत्र कहींसे भी खंडित नहीं हैं। प्रति काली स्याहीसे लिखी गयी है। प्रत्येक पृष्ठ पर लाइनें खींचकर काफी हाशिया छोड़ा गया है। पदोंकी संख्या के सूचक अंक तथा प्रत्येक पदके आरंभमें रागिनीका नाम, लाल स्याहीसे लिखे गये हैं। लिपि पुराने ढंगकी है किन्तु सुवाच्य और स्पष्ट है। अक्षर बड़े-बड़े हैं। समस्त प्रतिमें कोई भी अक्षर घिसा या मिटाया हुआ नहीं है, शब्दोंकी काट छांट भी बहुत कम स्थानों पर है।

प्रतिके पत्रोंकी संख्या ६+१८४=१९० है। अंतमें बहुतसे खाली पत्रे हैं। पत्रसंख्या सूचक अंक प्रत्येक पत्रके अेक ही ओर दिये गये हैं। पंद्रहवें पत्र तक ये अंक बायें पृष्ठों के दाहिनी भागमें नीचे की तरफ लाल स्याहीमें लिखे गये हैं। पंद्रहवें पत्रके पश्चात ये अंक बांये पृष्ठोंके बाये भागमें ऊपर की तरफ काली स्याहीमें दिये गये हैं। प्रतिके प्रत्येक पृष्ठमें ११ पंक्तियां और प्रत्येक पंक्तिमें २० अक्षर हैं।

आरंभके छै पत्रोंमें पदोंकी सुची है। सूचियां दो हैं। पहलीमें बताया गया है कि किस राग या रागिनीके कितने पद हैं। दूसरी सुची पदोंकी प्रथम पंक्तियोंकी सूची है जिसमें साथमें रागिनीका नाम, पदकी संख्या और जिस पत्रे पर वह पद है उसका अंक दिया गया है।

प्रतिमें सूरके पदोंकी संख्या ४६३ है। प्रथम सूची के अनुसार विविध राग-रागिनियोंके पदोंकी संख्या इस प्रकार है—

पद सं०	रागनी	पद सं०	रागनी
५३	वेलाउल	१३७	सारंग
७५	धन्याश्री	५४	मल्हार
१८	गुजरी	२७	नट
५	देवगंधार	२५	गौड़ी
४	जेतश्री	६	कल्यांण
१३	आसावरी	३	कानड़ो
१	रामकली	७	मारू
१	श्रीराग	५३	केदारो
१	सूहव	४	सोरठ
		३	वसंत
१७१		३१९	=४९०

बाकीके तीन पद धन्याश्री रागिनीके हैं जो इस सूचीमें नहीं गिनाये गये हैं।

सूचीके छै पत्रोंके पश्चात पद-संग्रह आरंभ होता है। पत्रोंकी संख्या यहां फिर अंक (१) से आरंभ की गयी है। प्रथम पद इस प्रकार है—

व्रज भयो महरकें पूत जब इह बात सुणी।
आनंदे सब लोग गोकल गणिक गुणी ॥

यह पद लंबा है और पांचवें पृष्ठ तक चला गया है। इसके आगे दूसरे तथा तीसरे पदोंकी प्रथम पंक्तियां इस प्रकार हैं—

२ कहो कहांतें आये हो ।

जाणति हूं उनमान मा तुम जादूपति नाथ पठाये हो ।।

३ तहीं जाह जही रेंणि हुते ।

इससे स्पष्ट है कि पदों का क्रम प्रसंगों के अनुसार नहीं किन्तु रागिनियों के अनुसार है।

अंतिम अर्थात ४९३ वां पद पत्र १६० के पृष्ठभाग पर इस प्रकार है—

मोहनां कु-वानि परी भोर ही उठि जाइ हरी ।
आगग्वाल पीछे ग्वालनी मंद-मंद मुसकाइ री ।।
कामिनी कछु टूना कीनो लाल रहे उरझाइ री ।
सांवरेकुं परी फदोरी रहे ठगोरी लाइ री ।।
कहा कियो तुम्ह आइ कै कहा कियो पछताइ री ।
सूरदास मदनमोहन या सुख लेहु बलाइ री ।।

सूरका पद-संग्रह पत्र १६० पर समाप्त हो जाता है। आगे अेक पृष्ठ खाली है और फिर २३ पत्रों में अन्यान्य महात्माओं के पद हैं।

प्रतिकी पुष्पिका जो सूरके पद-संग्रह के अंतमें पत्र १६० पर दी हुई है इस प्रकार है—

संवत १६८१ वर्षे चैत्रमासे सूकल पखे खस्टी तिथौ सोमवासरे घटी १६ पल ३ मृगसिर नख्यत्रे घटी ५५ पल १८ सोभाग्य नाम जोगे ४६ प १४ दक्षण देसे बुरहानपुर स्थाने पूसतक सूरकृत पद लिखतं महाराजाधिराज महाराजा सूर्यसिंहजी विजयराज्ये सुभंभवतु ।। किल्याणमस्तु ।। श्री ।।

पुष्पिकामें उल्लिखित महाराजा सूर्यसिंहजी बीकानेरके सुप्रसिद्ध महाराजा सूरसिंहजी हैं जिनका राज्यकाल सं० १६७० से सं० १६८८ तक है। वे दक्षिणमें बुरहानपुरमें अनेक वर्षों तक बादशाहकी ओरसे रहे थे अेवं उनका देहांत हुआ था।

दूसरी प्रति सं० १६६५ की लिखित है, यह गुटकाकार ८"×७।" साइजकी है। यह कुछ मटियाले और कुछ हलके नीले अर्थात आसमानी रंगके कागज पर लिखी हुई है। आसमानी पत्रोंको संख्या अधिक नहीं है। बहुत से पत्रे नीली स्याहीके बहुत छोटे छोटे छींटों से छींटे हुओ हैं जिसका उद्देश्य संभवतः सुंदरताकी वृद्धि रहा होगा। पत्र बहुत जीर्ण हैं। कुछ पत्रे खंडित होकर अलग हो गये हैं। कई पत्रे तो इतने खंडित हो गये हैं कि उन पर लिखी रचनाका कुछ-कुछ अंश भी नष्ट हो गया है। कई पत्रे अैसे हैं कि यदि सावधानीसे पकड़ा और उलटा न जाय तो तुरंत ही खंडित होकर टूट जांय।

यह प्रति काली स्याहीसे लिखी गयी है। प्रत्येक पृष्ठ पर दोनों ओर तिहरी लाइनें खींचकर काफी हाशिया छोड़ा गया है। ऊपर और नीचेकी आर भी काफी स्थान खाली रखा गया है। रागिनीका नाम तथा पदके चरणोंके अंक भी काली स्याही में दिये गये हैं परन्तु पीछे उन पर सूखी सुवर्ण-गेरू घिस दी गयी जिससे वे अलग दिखायी पड़ सकें। अक्षर पुरानी शैलीके हैं परन्तु सुगमतासे पढ़े जाते हैं। कहीं-कहीं पत्रोंके आपसमें चिपक जानेके कारण अक्षरोंकी स्याही उड़ गयी है और अक्षर घिस भी गये हैं। अक्षर न अधिक बड़े हैं, न अधिक छोटे। काट-छांट भी बहुत कम है। लिखते समय जो अक्षर या शब्द छूट गये उन्हें हाशियेमें लिख दिया गया है और छूटनेके स्थान पर चिह्न बना दिया गया है। प्रत्येक पृष्ठमें १६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्तिमें २० अक्षर हैं।

जिस समय प्रति लिखी गयी थी उस समय संपूर्ण पत्रोंकी संख्या १३२ थी क्योंकि अंतिम पत्र पर १३२ का अंक दिया हुआ है। इस समय इस प्रतिमें केवल ११२ पत्र हैं। आरंभके ११ तथा बीच के १४, १५, १६, १७, १८, १९ तथा ४४, १२५ और १२७ नंबरके पत्र अनुपलब्ध हैं। इसके बाद १७ पत्रे और हैं जिन पर पत्रसंख्याके अंक नहीं हैं। इनमें पदोंको प्रथम-पंक्ति-सूची दी हुई है। सूची अपूर्ण है जिससे सिद्ध होता है कि अन्तमें कुछ पत्रे नष्ट हो गये हैं।

पत्रोंकी संख्या प्रत्येक पत्रके दोनों ओर (दोनों पृष्ठों पर) दी गयी है। वह दोनों ओरके हाशियोंमें बीचोंबीच काली स्याही में लिखी गयी है। पत्र संख्याके अंक कहीं बड़े और कहीं छोटे हैं।

इस समय इस प्रतिमें सब ४८० पद हैं जिनमें सूरके पद ४७० हैं। आरंभमें अर्थात् पत्रांक ११ से १२९ तक, ४६८ पद सूर के हैं। आगे परमानंद, कुंभनदास, यशवन्त, कृष्णदास तथा ब्रह्मदास के पदों का संग्रह है जिनमें दो पद फिर सूरके हैं (पदांक ४७६ और ४७८)। इस प्रतिमें पद रागोंके क्रमसे नहीं किन्तु प्रसंगोंके क्रमसे दिये गये हैं।

जैसा कि ऊपर कहा गया है इस प्रतिका आरंभ पत्रांक १२ से होता है। इस पदके प्रथम दो चरण तथा तीसरे चरण के पूर्वार्ध अधिकांश पिछले पत्र में रह गये। १२ वें पत्र का आरंभ तीसरे चरणके पूर्वार्ध के अंतिम शब्द से होता है—

.... आई।

मंदमंद मुसकानि मानो दामिनि दुरि-दुरि देत दिखाई ॥३॥

लोचन ललित ललाट भ्रकुटि बिच तामें तिलक की रेख बनाई।

मानु मर्याद उलंघि अधिक वलन कारन उमगि चलि अति सुंदरताई ॥४॥

शोभित सुर निकट नासापुर अनुपम अधरन की अरुनाई।

मानो सुक सुरंग विलोकि बिंबफल चाखन कारन चोच चलाई ॥५॥

इसके पश्चात् 'माधो, यह मेरी इक गाइ' से आरंभ होनेवाला पद है। अंतिम ४७८ वें पद का आरंभ इस प्रकार है—

अपनी भकति दे भगवान।

कोटि जो लालच देखावहु रुचे नाहि न आन ॥१॥

इस प्रतिमें भी दो सूचियां हैं। प्रथम सूचीमें विविध प्रसंगोंके नाम देकर प्रत्येक प्रसंग की पद-संख्या दी गयी है। यह सूची पत्र १३२ के दूसरे पृष्ठ पर है— इस पत्रका प्रथम पृष्ठ खाली है। दूसरी सूची पत्रांकहीन १७ पत्रों में है। उसमें प्रत्येक पदकी प्रथम पंक्ति तथा जिस पत्र पर वह पद आया है उसका अंक दिया गया है। यह सूची अपूर्ण है।

प्रथम सूची इस प्रकार है—

इस सूची के अनुसार पदोंकी कुल संख्या केवल ४६३ होती है। जान पड़ता है कि कुछ पद गिनतीमें छूट गये हैं।

प्रतिके अंतकी पुष्पिका जो पत्र १३१ के अंतमें है, इस प्रकार है—

संवत् १६६५ वर्षे पोस सुदि ३ शुक्रे ॥श्रीरस्तु॥
पं० श्री वेणाजी लिखितं ॥

राजस्थानी कहावतां

[मुरलीधर व्यास]

१ खर घग्घू मूरख पसू सदा सुखी प्रिथुदास

पृथ्वीराज कहता है कि गधा, उल्लू, मूर्ख और पशु सदा सुखी रहते हैं। मूर्खों पर कोई कार्यका भार नहीं डालता, उन पर कोई जिम्मेवारी नहीं होती, अतः वे निश्चिन्त रहते हैं।

टिप्पणी—दोहेका पूर्वार्ध इस प्रकार है—

चकवो चातक चतर नर निस-दिन रहत उदास

२ खरचरा भाग मोटा

खर्चके भाग्य बड़े।

खर्च करने वाले के पास धन आता रहता है।

३ खरची खूटी, यारी टूटी

खर्च करनेके लिअे धन नहीं रहा तब मित्रता टूट गयी।

मित्रोंकी मित्रता धन रहने तक ही रहती है, धनके चले जाने पर मित्रता भी चली जाती है।

४ खरबूजेनै देखकर खरबूजो रंग बदळै

खरबूजेको देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

जब देखादेखी कोई काम किया जाय, जब देखादेखी कोई शौक किया जाय। जब कोई व्यक्ति दूसरे की देखादेखी बिगड़े।

५ खरी मजूरी चोखा दाम

पूरी मजूरी करनेवालेको पैसे भी अच्छे मिलते हैं।

६ खाखमें कटारी, चोरनै चोचांसूं मारै।

बगलमें कटारी है और चोरको तिनकेसे मारता है

पासमें चीज होने पर भी उसका उपयोग नहीं करना।

७ खा, गुड़ तेरो ही है!

खा ले, गुड़ तेरा ही है।

संबंधी आदि किसी अन्य व्यक्ति के धन पर मौज उड़ानेवाले पर व्यंगसे।

८ खाट-गाय आपरो दूध को देवै नी, दूजीरो ढोलाय दै

दुष्ट गाय अपना दूध नहीं देती, दूसरीका गिरा देती है।

दुष्ट स्वयं उपकार नहीं करता, दूसरेको भी नहीं करने देता।

९ खाड खोदै जकैनै कुवो त्यार है

जो खड्डा खोदता है उसके लिये कुवा तय्यार है।

जो दूसरेका अपकार करता है उसको बदलेमें अधिक अपकार मिलता है।

मिलाओ—'खाड खणै जो औरकूं ताकूं कूप तयार।'

१० खाध करै उपाध

भोजन उपाधि-उपद्रव-करता है।

(१) भोजन से शरीर सबल होता है, सबल होने पर मनुष्य को उत्पात सूझते हैं।

(२) जब भोजन मिल जाता है—पेट भर जाता है—तो उपद्रव सूझते हैं।

(३) सब रोग अनुचित भोजनसे होते हैं।

११ खा-पी सू ज्याणो, मार पीट भाग ज्याणो

खा-पीकर सो जाना, मार-पीटकर भाग जाना।

१२ खाय हंगायो, कदे न धायो

जो भोजन करके हंगासा होता है वह कभी तृप्त नहीं होता।

जिसे भोजनके पश्चात् शौचकी इच्छा हो उसका शरीर नहीं बनता।

१३ खाया सोही ऊबरया, दिया सो ही सथ्थ

जो खा लिया वही बच गया, जो दिया वही साथ चलेगा।

धनके लिये, जो धन न खाया जाता है न दिया जाता है

वह नष्ट हो जाता है या पराये हाथोंमें चला जाता है।

धन जितना भोग लिया जाता है उतना अपने काम आ जाता है। जितना दान किया जाता है उतना साथ चलता है, बाकी पराया हो जाता है।
मि०—तिस्त्रो गति

१४ खायां किसा खाडा पड़ै है ?

खानेसे कौनसे खड्डे पड़ते हैं ?
खानेसे कौनसी कमी पड़ती हैं या हानि होती है ?

१५ खायो ! रे परड़ोटियो, तो कै-काळंदर कठांसूं लाऊं ?

अरे ! परड़ का बच्चा (छोटा साप) खा गया ! तो कहता है-काला नाग कहांसे लाऊं ?

१६ खारी-बोलो मावड़ी, मीठी बोली लोग

माता कड़वी बोलनेवाली होती है, दुनिया मीठी बोलनेवाली।
माता सुधारके लिये फटकारती है, दुनियाके लोग हां-में-हां मिलाते हैं।

१७ खाली बैठां उत्पात सूझै

निकम्मे बैठनेसे उत्पात सूझते है।
पासमें कोई काम नहीं होता तब बुरी बात मनमें आती हैं।

१८ खाली वासण घणा खड़वड़ाव

खाली बरतन अधिक खड़खड़ करते हैं।
निस्सार व्यक्ति अधिक बकवाद करता है।
मि०—थोथा चिणा, बाजै घणा

Empty vessels make much noise.

१९ खावणनै खोखा, पैरणनै चोखा

खानेको खोखे, पहननेको अच्छे।
खानेका कसाला होनेपर जो ठाठबाटसे रहे उसके लिये।

२० खाव़ण-पीव़ण-नैं खेमली, नाचणनैं गजराज
खाने-पीनेको खेमली, नाचने को गजराज।
खाने के समय कोई और, काम करने के समय कोई और
लाभ किसीको कराया जाय, काम किसीसे कराया जाय।

२१ खाव़ण-पीव़ण नैं दियाळी, कूटीजणनैं छाज
खाने-पीनेको दिव़ाली, कूटे जाने को छाज।
[ऊपरवाली कहावत देखो]
टिप्पणी—दिवालीके अवसर कुलक्ष्मी को भगानेके लिये छाज कूटा जाता है।

२२ खाव़णो जकैरो गाव़णो
खाना उसका गाना।
जिससे लाभ हो उसकी प्रशंसा करना।

२३ खाव़ै पीवे खसम रो, गीत गाव़ै वीरै-रो
खाती है खसमका, गीत गाती है भाई के।
लाभ किससे उठाना, प्रशंसा किसीकी करना।

२४ खाव़ै जकी थाळीमें हिंगणो नहीं
जिस थालीमें खावे उसमें हंगना नहीं चाहिये।
उपकारीका अपकार नहीं करना चाहिये।

२५ खाव़ै जकी हांडीनै फोड़ै
जिस हांड़ीमें खाता है उसीको फोड़ता है।
उपकार करनेवालेका अपकार करता है।

२६ खाव़ै जकी हांडीमें ही छेकलो करै
जिस हांडीमें खाता है उसीमें छेद करता है।
(ऊपरवाली कहावत देखो)।

२७ खाव़ै जकैरो गाव़ै
जिसका खाता है उसका गाता है।
जिसके सहारे रहता है—जिससे जीविका चलती है—
उसके गुण गाये जाते हैं।

२८ खावै जित्ती भूख, लेवै जित्ती नींद

जितना खावे उतनी भूख, जितनो ले उतनो नींद।

भूख और नींद का कोई प्रमाण नहीं।

२९ खावै-पीवै जकै नै खुदा देवै

जो खाता और पीता है उसे ईश्वर देता है।

जो धन को खर्च करता है उसके पास धन आता है।

मि०—खरचरा भाग मोटा है।

३० खावै सूर, कुटीजै पाडा

खाते हैं सुअर, पीटे जाते हैं पाड़े (भैंस के बच्चे)।

अपराध कोई को दंड किसी को मिले।

दुष्ट अपराध करे और निर्दोष को दंड मिले।

३१ खांड अर रांडरो जोवन रातरो

खांड़ और रांड़ का यौवन रात का।

सफेद खांड अन्धेरी रात में खूब चमकती है। रांड़ रात में श्रृंगार करती है।

३२ खांड खायां गांड गळै

खांड़ खाने से गांड़ गलती है।

अधिक खांड या मीठा खाने से रोग होता है।

३३ खांड गळै जद सगळा आ ज्याय गांड गळै जद कोई को आवै नी

खांड गलती है (जीमनवार होती है) तब सब आ जाते हैं।

पर गांड़ गळती है (बीमारी होती है) तब कोई नहीं आता।

संपत्ति में बहुत साथी हो जाते हैं, विपत्ति में कोई पास नहीं आता।

३४ खांड में खायो जाय ना कोई गुळ में खायो जाय

न खांड़ में खाया जाय न गुड़ में खाया जाय।

जो कार्य किसी प्रकार न हो।

३५ खांड विना सब रांड* रसोई [पाठान्तर—मोडी रांड]

खांड़ के विना सारी रसोई रांड़ है।

मीठे के विना रसोई फीकी है।

३६ खांता-पीतां हर मिलै तो हमकूं कहियो

खाते-पीते हरि मिलें तो हमको बताना।
बिना परिश्रम किये लाभ-प्राप्ति चाहने वाले पर।

३७ खाव्रतो-पीव्रतो मरै, वैरो कोई कांई करै ?

जो खाते-पीते मरे उसका कोई क्या करे ?
जिसको सब साधन सुलभ हों और जो फिर भी रोगी या चिंतातुर रहे उसका कोई उपाय नहीं।

३८ खिणै तिको पड़ै

जो खोदता है वह गिरता है।
जो बुराई करना चाहता है उसी की बुराई होती है।

३९ खिणियो डूंगर, निकळियो ऊंदर

खोदा पहाड़, निकला चूहा।
बहुत परिश्रम का अत्यन्त अल्प फल मिले तब।
मि०—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

४० खीचड़ खाया, पेट कुदाया ; तेरै राज में क्या सुख पाया ?

खिचड़ा खाया, पेट को बजाया तेरे राज्य में क्या सुख पाया ?
ऐसे व्यक्ति के प्रति जिसके आश्रय में किसी प्रकार बड़ी कठिनता से जीवन निर्वाह हो [विशेषतः किसी स्त्री का पति के प्रति कथन]।

४१ खीचड़ी कै—हूं आव्रण-जाव्रण

रोटी कै—हूं मजल पुगाव्रण
दाळ-भात का सफळा खाणा
उसक भरोसै गांव न जाणा

खिचड़ी कहती है कि मैं आने-जाने के लिये हूं। रोटी कहती है कि मैं मंजिल तक पहुंचानेवाली हूं, परन्तु दाल-भात का जो हलका भोजन है उसके भरोसे दूसरे गांव मत जाना [बीच मार्ग में ही भूख लग जाव्रेगी]।
भात का भोजन इतना हलका होता है कि बहुत जल्दी भूख लग जाती है।

मि०—रोटी कै—हूं हालूं-चालूं।
बाटी कै—हूं मजल पुगाऊं ॥
चाव्रळ कै—मेरा हळका खाणा।
मेरे भरोसै कहीं न जाणा ॥

४२ खीचड़ी खांव्रता ही पुणचो उतरै

खिचड़ी खाते ही पहुंचा उतरता है
साधारण परिश्रम भी सहन नहीं होता कठिन परिश्रम की क्या आशा की जाय।

४३ खीरां मेली खीचड़ी, टीलो आयो टच्च

खिचड़ी को चूल्हे पर से उतार कर अंगारों में रखा, रखते ही टीला आकर धम से बैठ गया [खाने के लिये तय्यार हो गया]।
(१) बने बनाये काम का लाभ उठाने के लिये जा पहुंचना।
(२) ठीक भोजन के समय जा पहुंचनेवाले के लिये विनोद में।

४४ खीसा तर, तो भाव्रै ज्यूँ कर* (पाठान्तर—चाहे सो कर)
जेब तर है (भरी है तो चाहे सो करो।
रुपये पास हैं तो सब कुछ हो सकता है।

४५ खुदा खाव्रणनें दै जद सूव्रणसूँ वत्ती कोई बात ही कोनी
खुदा खाने को दे तब सोने से बढ़कर कोई बात ही नहीं।
आलसियों के लिये।

४६ खुदा जेहड़ा फरेस्ता
जैसा खुदा वैसे फरिश्ते।
जैसा मालिक, वसे ही नौकर।

४७ खुदा देव्रै तो छप्पर फाड़ अर देव्रै
खुदा देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है
छप्पर फाड़कर=अप्रत्याशित मार्ग से, बेहिसाब।

४८ खुदा री महर तो लीला लहर
खुदा की कृपा तो हरे-भरे।
ईश्वर कृपा करे ता खूब आनन्द-ही-आनन्द होता है।

४९ खूटीनें बूँटी कोनी
खूटी हुई आयु के लिये दवा नहीं . ऊमर खूट गयी तो कोई इलाज नहीं हो सकता)।

५० खूट्यो वाणियो जूना खत जोव्रै
बिगड़ा हुआ बनिया पुराने खत-पत्रों को देखता है
(कदाचित किसी में पाव्रना बाकी निकले)।

५१ खूंटैरै ताण बछड़ो कूदै

खूंटे के बल बछड़ा कूदता है।

कोई सामान्य व्यक्ति किसी समर्थ व्यक्ति के बल पर कार्य करे।

५२ खेती खसम सेती

खेती मालिक से [ही होती है]

कोई कार्य अच्छी तरह तभी हो सकता है जब मालिक स्वयं करे या अपनी देखरेख में करावे, नौकरों के भरोसे छोड़ा हुआ कार्य अच्छी तरह पार नहीं पड़ता।

मि०—खेती-पाती, वीनती, परमेसर का जाप।
पर-हाथां ना कीजिये, निडर कीजिये आप॥

५३ खे देख अर घोड़ा मत वाढो

खेह देख कर घोड़ों को मत काट डालो।

अनुमान के बल पर अपनी हानि मत कर लो।

५४ खेल खेलारांरा, घोड़ा असवारां रा

खेल खिलाड़ियों के घोड़े सवारों के।

अनुभवी और साहसी ही कार्य को कर सकते हैं।

५५ खोटै खत में कुण साख घालै?

खोटे खत में गवाही कौन करे?

जब कोई व्यक्ति चतुराई से किसी का समर्थन प्राप्त करना चाहे तब सामने वाला व्यक्ति इस प्रकार कहता है।

५६ खोटो रुपियो गमै कोनी

खोटा रुपया खोया नहीं जाता।

५७ खोळै मायलैनै छोड़ अर पेट मांयलैरी आस करै

गोदी वाले को छोड़कर पेट वाले की आशा करती है

निश्चित को छोड़ कर अनिश्चित के भरोसे रहना।

राजस्थानी भाषा के दो महाकवि

[अगरचंद नाहटा]

(१) जिनसमुद्रसूरि

राजस्थानी साहित्य-सेवी जैन विद्वानोंमें कइयों ने तो संस्कृत, गुजराती, हिंदी अेवं राजस्थानी सभी भाषाओं में रचनाअें की हैं और कइयों ने केवल मरु-भाषा को ही अपनाया है। प्रथम श्रेणी के कवियों में कविवर समयसुन्दर, गुणविनय, जिनराजसूरि, लक्ष्मीवल्लभ, धर्मवर्द्धन आदि मुख्य हैं और दूसरी श्रेणी वालों में सुकवि रुघपति, मालदेव, कुशललाभ, जिनसमुद्रसूरि आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें से जिनसमुद्रसूरि का स्थान राजस्थानी साहित्य के निर्माण में बहुत ही महत्व का है कारण अन्य कवियों में लाख श्लोक प्रमाण साहित्य की रचना करनेवाले विरले हैं। वह भी उनके संस्कृतादि समग्र साहित्यको मिलाने पर लाख श्लोकका परिमाण होता है पर जिनसमुद्रसूरिजी ने केवल मरु भाषा में ही १॥ लाख श्लोक परिमाण साहित्य की रचना की। इस दृष्टि से उनका स्थान राजस्थानी साहित्य के इतिहास में गौरवपूर्ण रहेगा ही।

जिनसमुद्रसूरिजी खरतरगच्छ की बेगड़ शाखा के आचार्य थे। आचार्य-पद-प्राप्ति के पहले और पीछे आपने निरन्तर मरु भाषा की अखण्ड सेवा की। आपका परिचय बेगड़ गच्छ की पट्टावली अेवं अैतिहासिक गीतों में इस प्रकार पाया जाता है—

आपका जन्म श्रीश्रीमाल जातीय शाह हरराज की भार्या लखमादेवी की कुक्षि से हुआ। जन्म स्थान अेवं संवत अभी तक अज्ञात है। आपकी जन्मभूमि बीकानेर, जोधपुर या जेसलमेर राज्य में कहीं होनी चाहिये। आपका जन्मकाल संवत १६७० के लगभग होना चाहिअे। जेसलमेर-भंडार की अेक पट्टावली में लिखा है कि आपने ३१ वर्ष साधु पद पाला। आपने सं० १७१३ में आचार्य पद प्राप्त किया। इस उल्लेखसे आपकी दीक्षा सं० १६८२ में हुई सिद्ध होती है। आपके गुरु श्री जिनचन्द्रसूरि थे। आपका साधु अवस्था का नाम महिमसमुद्र था जो आपकी अनेक रचनाओं में पाया जाता है। आपके विशाल साहित्य से आपकी विद्वत्ता एवं कवित्व शक्ति का भलीभाँति परिचय मिलता है। ३१ वर्ष तक साधु

अवस्था में, अेवं पीछे भी बहुत समय तक आपने चारों दिशाओं में विहार करके अनेकों श्रावकों को प्रतिबोध दिया। आपकी रचनाओं से आपका विहार जैसलमेर के निकटवर्त्ती सिन्ध प्रांत अेवं जोधपुर राज्य आदि में ही विशेषतः हुआ प्रतीत होता है। सं० १७१३ में बेगड़ गच्छ के आचार्य जिनचन्द्रसूरिजी का स्वर्गवास होने से आपको उनके पट्टधर के रूप में आचार्य पद प्राप्त हुआ। पांच वर्ष के पश्चात सूरत पधारने पर सं० १७१८ में छाजहड़ गोत्रीय छतमल शाहने पद-स्थापना का महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया। आपने २६ वर्ष तक आचार्य पद पर रह कर गच्छ का नेतृत्व किया। पट्टावली में लिखा है कि आपने सवा लाख श्लोक प्रमाग नवीन ग्रन्थ रचना की। सं० १७४१ की कार्तिक सुदि १५ को वर्द्धन-पुर में आप स्वर्ग सिधारे। आपकी आयु ७० वर्ष के करीब निश्चित होती है।

ग्रन्थ निर्माण काल—आपकी सर्व प्रथम रचना सं० १६६७ में लिखित नेमि-फाग उपलब्ध है और सबसे अन्तिम रचना सं० १७४० में रचित सर्वार्थ-सिद्धि-मणिमाला [वैराग्य-शतक कृति] है अर्थात् ४३ वर्ष तक आपने निरन्तर साहित्य सेवा की। सं० १६६७ के पहले भी आपने रचना आरम्भ अवश्य कर दी होगी। पर रचना समय का उल्लेख न होने से निश्चयपूर्वक कहा नहीं जा सकता। यद्यपि आपने सवा लाख श्लोक प्रमाण नवीन ग्रन्थ रचना की पर अभी तक साहित्य-संसार आपसे अपिरिचित सा है। इसका कारण यह है कि आप जिस सम्प्रदाय-परम्परा के साधु या आचार्य थे उनकी मुख्य गद्दी जेसलमेर थी और विहार क्षेत्र भी उसी के आसपास ही अधिक रहा है। अतः आपकी रचनाओं की प्रतिलिपियां जेसलमेर के भंडारों में ही उपलब्ध है। अन्यत्र उनका प्रचार नहीं हुआ। यही कारण है कि आप अभी तक विशेष प्रसिद्ध में नहीं आये। हमने अपनी जेसलमेर यात्रा में पद-स्तवनादि लघु कृतियों की सूची बनायी तो उनकी संख्या ४०० के करीब जा पहुंची। वे दो गुटकों के अतिरिक्त कई त्रुटित प्रतियों में लिखी हुई हैं अतः और भी होनी चाहिये। इसी प्रकार रासादि बड़ी कृतियों की भी कई प्रतियें वहां खंडित अवस्था में पायी गयी हैं जिनकी पूरी प्रतियें अन्वेषणीय हैं। संभव है खोज करने पर और भी कई रचनायें प्रकाशमें आवें। क्योंकि उपलब्ध रचनाओं की संख्या सवालाख श्लोक परिमाण की नहीं है। सम्भवतः कई रचनाएँ असावधानी के कारण नष्ट भी हो चुकी होगी। फिर भी खोज करने से भंडारों में पड़े हुअे कई-अेक नवीन ग्रन्थों का पता चलेगा ही।

यात्रा, विहार—शत्रुंजय, गिरनार, आबू राडद्रह, साचोर, मुलतान, गाजीपुर, गौड़ी, कंसारी, लोद्रवा जीरावला, जैसलमेर, शीतपुर, इसमाइलखांन [शांति] संखेश्वर, बाड़मेर, पहाड़पुर, काननपुर, थंभण, महूआ-सीवाणा-पालणपुर, देरावर, फलोधी, सूरत, सांसनगर, फतहखांनगर, कांतानगर, महेवा, सोजत, इसमाइलखां, देहरा, उच्चनगर, समियांना, गंगानी, कापरहेड़ा, सेरिसा, इन स्थानों का उल्लेख आपकी रचनाओं में पाया जाता है। आपके शिष्य महिमहर्ष आदि थे।

फारसी भाषा पर भी आपका अधिकार था। आपके रचित फारसी भाषा के कई स्तवन प्राप्त हैं। इनके समय में सं० १७२६ में जिनसमुद्रसूरि से वेगड़ शाखा में से अेक और शाखा निकली। जैसलमेर के रावल अमरसिंहजीने आपको मानापटोली और उपाश्रय प्रदान किया।

आपकी शाखा के अन्य अनेक विद्वानों ने भी राजस्थानी भाषा की अच्छी सेवा की है। आपके गुरु, प्रगुरु, तथा शिष्यों की रचित भी कई रचनाअें उपलब्ध हैं।

श्री जिनसमुद्रसूरिजी की उपलब्ध रचनाअें

१ वसुदेव चौपई
२ ॠषिदत्त चौपाई
३ उत्तमकुमार [नवरससागर] चौपाई [सं १७३२काती वदि १२ बुधवार]
४ रुकमणि चरित्र
५ हरिबल चौपई [सं० १७०६ ज्येष्ठ वदि, पाहड़पुर]
६ गुणसुन्दर चौपई
७ इलाचीकुमार चौपई [सं० १७५१ आसोजसु० १०, बीरोतराग्रामे]
८ शत्रुंजयरास गाथा ६३ [सं० १७२३ वैशाख सुदि १०]
९ प्रवचन रचना वेलि
१० तत्वप्रबोधनाममाला [सं० १७३० काती सुदि ५]
११ सर्वार्थ सिद्धि मणिमाला [वैराग्यशतक भाषा], सं० १७४०
१२ कल्पसूत्र बालावबोध
१३ कालिकाचार्य कथा
१४ कल्पांतर वाच्य, पत्र १७२

१५ सतरह भेदी पूजा [सं० १७१८, सूरत, गाजीपुरे प्रारंभ]
१६ राठौड़ वंशावलि
१७ मनोरथमाला बावनी
१८ ईश्वर शिक्षा, गाथा ५४
१९ शत्रुंजय गिरनारमंडण स्तवन, गाथा ५६ [सं० १७२४ आसाढ़]
२० श्रीसीमन्धरस्तवन, गाथा ५६
२१ आतम करणी संवाद, गाथा १७७-४२ [रसरचना चतुष्पदिका]
सं१७११ मुलताण
२२ गजल, गाथा ४२
२३ साधुवंदना
२४ शत्रुंजय स्तवन गाथा ४८ [सं० १७१६]
२५ नेमि राजिमती फाग [सं० १६६७, साचोर]
२६ चैत्य परिपाटी स्तवन [सं० १७०८, श्रावण जैसलमेर]
२७ कांननपुरपार्श्व स्तवन, गाथा १० [सं० १६९६ वैशाख वदि ६]
२८ विनय छत्तीसी, गाथा ३६, [सं १६९८, साचोर संघाग्रह]
२९ ज्ञानपंचमी स्तवन गाथा २७ [सं० १६९८ समियाना]
३० पहाड़पुर आदिनाथ स्तवन, गाथा २२, [सं० १७०७, २ चौमासा]
३१ लौद्रवपुरयात्रा स्तवन, गाथा ६ [सं० १६९७]
३२ पार्श्व स्तवन, गाथा १९ [गाजीपुर सं० १७०२]
३३ राद्रहपुर वीरस्तवन [सं० १७२५ जेठ वदि ७]
३४ गाजीपुर पार्श्वजिनरास, गाथा १५२ [सं० १७१३]
३५ शत्रुंजय स्तवन, ढाल ८ [सं० १७१६]

(२) लक्ष्मीवल्लभ

जन्म--कवि ने अपने जन्म स्थान, संवत, मिती, वंश, माता पिता के नाम आदि गृहस्थ जीवन का परिचय अपनी कृतियों में कहीं भी नहीं दिया, और न कोई ऐसी सामग्री ही मिली कि जिससे इस विषय में कुछ लिखा जा सके; फिर भी दीक्षित नाम स्थापना को नन्दि[1] पर विचार करने से ज्ञात होता है कि

१ नामान्तपद—इसके सम्बन्ध में विशेष जानने के लिये अनेकान्त वर्ष ४ अं० १ में प्रकाशित जैन मुनियों के नामान्तपद नाम से मेरा लेख देखें।

आपकी दीक्षा सं० १७०७ से पूर्व हो चुकी थी। उपलब्ध कृतियों में सब प्रथम "कुमारसम्भववृत्ति" का रचनाकाल सं० १७२१ पाया जाता है। 'कुमारसम्भव' जैसे काव्य पर वृत्ति बनाने की योग्यता २५ वर्ष के पहले संभव नहीं ज्ञात होती अेवं दीक्षाकाल पर विचार करने से भी, आपका जन्म सं० १६९० और १७०३ के मध्य में होना संभव जान पड़ता है[1]।

आपका जन्म नाम हेमराज था, जो कि आपकी कुलीनता का द्योतक है।

गुरु परम्परा

चौदहवीं शताब्दीमें खरतरगच्छ में श्री जिनकुशलसूरिजी[2] अेक असाधारण प्रतिभासम्पन्न और प्रभावशाली जैनाचार्य हुअे हैं जिनकी जैन समाज में आज भी इतनी अधिक पूजा-प्रतिष्ठा है कि सैकड़ों स्थानों में उनकी चरण-पादुकाअें प्रतिष्ठित कर लाखों व्यक्ति श्रद्धा, भक्ति एवं मान्यता करते हैं। उनके शिष्य उपाध्याय विनयप्रभ का रचा हुआ गौतमरास (सं० १४१२)[3] हिन्दी-साहित्य के विद्वानों में बहुत समय से प्रसिद्ध है। इनके शिष्य उपाध्याय विजय-तिलक[4] के शिष्य वाचक क्षेमकीर्त्ति बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हो चुके हैं। इनका शिष्य समुदाय बहुत विशाल था अतअेव इनके नाम से खरतरगच्छ में "क्षेमकीर्त्ति-क्षेम-धाड़ी" नामक स्वतन्त्र शाखा चली आ रही है। क्षेमकीर्त्तिजी के शिष्य उपाध्याय तपोरत्न के शिष्य उपाध्याय तेजराज के शिष्य वाचक भुवन-कीर्त्ति के शिष्य वाचक हर्षकुंअर के शिष्य वाचक लब्धिमण्डन के शिष्य उपा-ध्याय लक्ष्मीकीर्त्ति[5] हुअे। हमारे चरितनायक इन्हीं के सुशिष्य थे।

---

१ इनके शिष्य शिववर्द्धन की दीक्षा भी सं० १७१३ में हो चुकी थी। इससे भी उपर्युक्त अनुमान की पुष्टि होती है।

२ आपका संक्षिप्त परिचय हमारी ओर से प्रकाशित अैतिहासिक जैनकाव्यसंग्रह के सार पृ० १२ में दिया गया है। अेवं अेक स्वतंत्र ग्रन्थ दादा श्री जिनकुशलसूरि नाम से भी प्रकाशित हो चुका है।

३ यह हमारी ओर से प्रकाशित अभयरत्नसार के पृ० १३८ में संगृहीत है।

४ इनका रचा हुआ सुप्रसिद्ध शत्रुंजय स्तवन हमारे संग्रह में है।

५ आपके रचित लघुगौतमरास, नवकार फल गीत, श्रीमंधर स्तवनादि उपलब्ध है और आपके लिखित अनेक पत्र भी हमारे संग्रह में है। आपका जन्म नाम लक्ष्मीचंद था।

दीक्षा

तत्कालीन खरतरगच्छाचार्य श्रीजिनराजसूरिजी या श्रीजिनरत्नसूरिजी ने (सं० १७११ से पूर्व) आपको दीक्षित कर उपाध्याय लक्ष्मीकीर्त्तिजी का शिष्य बनाया। आपका दीक्षा-नाम "लक्ष्मीवल्लभ" रखा गया।

पद-प्राप्ति

हमारे संग्रह में श्रीजिनचन्द्रसूरिजी[१] का एक आदेशपत्र है जिसमें आपको संवत् १७१३ चैत्र शुक्ला ८ को पाटण से रतलाम जाने के लिए आदेश दिया गया है। इसमें आपको उपाध्याय पद से सम्बोधित किया है। इससे ज्ञात होता है कि इससे पूर्व ही आपको उपाध्याय पद श्रीजिनचन्द्रसूरिजी ने दे दिया था।

विद्वत्-प्रतिभा

अठारहवीं शताब्दी के खरतरगच्छीय विद्वानों में आपका स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। काव्य, व्याकरण, छंद, भाषा-विज्ञान, वैद्यक, एवं सैद्धान्तिक विषयों में आपकी असाधारण गति थी जैसा कि आपके द्वारा रचित साहित्य की तालिका से, जो निबन्ध के अन्त में दे दी गयी है स्पष्ट है। वृत्तिकार तो आप बहुत ही उत्तम थे। आपकी रचित टीकाओं में "उत्तराध्ययन सूत्रवृत्ति" और कल्पसूत्र पर "कल्पद्रुमकलिका" नामक बृहत् टीका जैन वाङ्मय में सुप्रसिद्ध हैं। "कुमार सम्भववृत्ति" और "धर्मोपदेशवृत्ति" आदि भी उल्लेखनीय है।

भाषा की दृष्टि से संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी पर तो आपका पूर्ण अधिकार ज्ञात होता ही है पर आपके रचित सिन्धी भाषा[२] के तीन स्तवन भी उपलब्ध हैं। आपकी रचना लालित्यपूर्ण और हृदयग्राही है। "कालज्ञान" नामक वैद्यक ग्रन्थ के हिन्दी पद्यानुवाद से आपके आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञानका अच्छा परिचय मिलता है। इस ग्रन्थ में आपने वैद्यक विद्या की प्रशंसा इस प्रकार की है—

१देखें "ऐतिहासिक जैनकाव्य संग्रह", सारभाग, पृ० २९ और "खरतरगच्छ पट्टावली संग्रह"

२ सिन्धी भाषा के स्तवनों के लिए देखें "श्वेताम्बर जैन" में प्रकाशित "सिन्धी भाषा और जैन साहित्य" नामक हमारा लेख।

जग वधक विद्या जिसी, नहीं न विद्या और।
फलदायक परतिख प्रगट, सब विद्या शिरमौर ॥१६६॥
रोग-निवारण वह करे, करे धर्म की वृद्धि।
धन की भी प्राप्ति करइ, दुहु लोकमें सुखसिद्धि ॥१६७॥
वैद्यकतें कहुं धर्म हुइ, कहुं हुइ धन को लोभ।
कहुं कारिज कहुं होइ जस, कहुं प्रीतिकी शोभ ॥१६८॥
वैद्यकतें हुई चतुर पण, बडी ठौर सन्मान।
प्रसिद्ध होइ सब देश में, आन न जैसे ज्ञान ॥१६९॥

आपकी प्रतिभा— आपके रचित "कल्पद्रुमकलिका" नामक कल्पसूत्र वृत्ति में बहुत ही स्पष्ट एवं सुन्दर रूप से परिस्फुटित हुई है। उसमें स्थान स्थान पर वैद्यक, ज्योतिष, नीति, कविकल्पना, सैद्धान्तिक ज्ञान, शरीर विज्ञान, स्वप्न शास्त्र, आदि विभिन्न विषयों की पठनीय विवेचना की गयी है।

विहार

जैनसाधु धर्म प्रचार के लिये हरसमय विविध स्थानों में परिभ्रमण करते रहते हैं। आपका विहार बीकानेर, गारबदेसर, रतलाम, जैसलमेर, लोद्रवा, फलोधी, सूरत, हिसार, रिणी आदि मारवाड़, मालवा, गुजरात और सिन्ध प्रान्त के स्थानों में अधिकांश हुआ।

स्वर्गवास

आपकी अन्तिम कृति संवत् १७४७ की हिसार में रचित उपलब्ध है, कविता में आपका उपनाम राजकवि भी पाया जाता है। संवत् १७७९ के सुजाणसिंहजी के पत्र में राजकवि के नाम का उल्लेख है वे यदि आप ही हों तो आपका स्वर्गवास सं० १७८० अनुमानित होता है।

शिष्यपरम्परा

कविवर के कई-अनेक शिष्य थे जिनमें १ शिववर्द्धन जिनका दीक्षा समय नन्दि अनुक्रमानुसार सं० १७१३ वशाख सुदि ३ सीरोही, सिद्ध है और २ हर्षसमुद्र (हीरानंद, दीक्षाकाल सं० १७२१ बीलाड़ा) ३ लक्ष्मीसेन[1] (दीक्षाकाल सं० १७२३ आगरा) प्रमुख थे। इनमेंसे शिववर्द्धन के शिष्य १ बिहारीदास (दीक्षानाम-विनयप्रिय)

[1] इनके रचित कल्याणमन्दिर चतुर्थपादपूर्ति स्तोत्र गाथा ४५ हमारे संग्रह में है।

२ तिलोकचंद (तिलकप्रिय) (३) दयाप्रिय[1] तीनों सं० १७४२ फा० सु-३ कोटड़ा में दीक्षित हुए थे। तिलकप्रिय के शिष्य १ ललितवर्द्धन, २ तिलकवर्द्धन हुए जिनको सं० १७८३ मिगसर सुदि १२ को जिनभक्तिसूरि ने उदरामसर में दीक्षा दी। इनके पश्चात् लक्ष्मीवल्लभजीकी परम्परा कहांतक चली यह अद्यावधि अज्ञात है।

रचनाएँ

(१) संस्कृत

१ कल्पसूत्र पर 'कल्पद्रुम कलिका' नामकी वृत्ति — मुद्रित
२ उत्तराध्ययन वृत्ति — मुद्रित
३ कालिकाचार्य कथा — जयपुर खरतर भं०
४ धन्नकुमार चरित्र सं० १७४६ माघवदि १३ रिणी, श्रीपूज्य सं० नं० ६४७
५ कुमारसंभववृत्ति सं० १७२१ सूरत, लक्ष्मीसमुद्र अभ्यर्थना, वर्द्धमान भं० बं० नं० २७
६ धर्मोपदेश (मातृकाक्षर) गाथा ११० स्वोपज्ञवृत्ति सं० १७४५ वै० सु० ३ ग्रं० १५०० भुवनभक्ति भं० बं० नं० ८
७ नवग्रह गर्भित पार्श्वनाथ स्तोत्र (जिनप्रभसूरिकृत) अवचूरि सं० १७३८ फाल्गुन शुक्ला १३ विक्रमपुरे लि० (श्रीपूज्यजीभंडार)
८ सकलकीर्तिसूरि स्तोत्र गाथा ११ — हमारे संग्रहमें
९ श्रीजिनकुशलसूरि अष्टक गाथा ९
१० चंद्राष्टक गाथा ८ (सं० १७३४ लि० पत्र की नकल "
११ पार्श्व जिनस्तोत्र गाथा ७ (हमारे संग्रह में)
१२ संसारदावा समस्यापूर्त्ति पार्श्वस्तवन गाथा १७ (भुवनभक्ति भं० बं० १२
१३ समस्यास्तव गाथा १५ (")

गद्यभाषा

१ संघपट्टक बालावबोध (अबीरजी भं०, व रामलालजी संग्रह)

(२) हिन्दी भाषा के काव्य

१ कालज्ञान वैद्यकभाषाबंध (गा० ७८) सं० १७४१ भादवा सुदी १५ रचित, हमारे संग्रहमें

---

[1] इनके रचित २३ बोल गर्भित चौवीस जिन स्तवन (सं १७४७ माघ) हमारे संग्रह में है। शिववर्द्धन, हीरानंद बिहारीदास को लिखित कई प्रतियें हमारे संग्रह में है।

२ नवतत्त्व भाषाबंध (गा० ८१) सं० १७४७ वै० व० १३ हिसार, ओसवाल—दुच्चा गोत्रीय रूपसिंह सुत १ मोहनदास २ ताराचंद ३ तिलोकचंद के प्रार्थना से रचित, हमारे संग्रहमें
३ भावनाविलास (गा० ५२) सं० १७२७ पार्श्वजन्मदिन
(अनित्यादि बारह भावनाओं पर रचित सवैया व दोहामय,) हमारे संग्रहमें
४ चौवीस जिनसवैया स्तुति गा० २४ हमारे संग्रहमें
५ चौवीसी " "
६ दूहा बावनी (गा०५८) " "
७ सवैया बावनी (गा० ५८) (सं० १७३८ के पूर्व रचित) " "
८ उपदेश बतीसी " "

(३) सिन्धी भाषा

१ पार्श्वस्तवन गा० ५
२ " " गा० ५
३ " " गा० ३

(४) राजस्थानी भाषा

१ रत्नहास चौपाई सं० १७२५ चं० सु० १५ (ढाल १२) भुवनभक्ति भं०
२ विक्रमादित्य पंचदंड चौपई सं० १७२८ फा० सु० ५ (खंड ६) गारवदेसर में रचित, हमारे संग्रह में
३ रात्रिभोजन चौपई (ढाल ६ पत्र १६) सं० १७३८ भा० सु० ७ बीकानेरमें रचित, जयचंद्रजी भं०
४ अमरकुमार चौपई (ढाल ८) भुवनभक्ति भंडार
५ महावीर-गौतमछंद (गा ६६) हमारे संग्रहमें
६ देशांतरीछंद (गा ४६) हमारे संग्रहमें
७ भरत बाहुबलि भिडाळ छंद गा० १०३
८ वरकाणा पार्श्वनाथ छंद गा० २६
९ राज (चेतन) बतीसी गा० ३२
१० कुंडलीया बावनी गा० ५७
११ श्री जिनकुशलसूरिछंद

(५) सैद्धान्तीय विचार गर्भित स्तवन

१ तेरहस्थान गर्भित आदि जिन स्तवन गा० ५७ हमारे संग्रह में
२ कर्मपइडीगर्भित स्तवन गा० २८

३ कर्म प्रकृति निदान गर्भित स्तवन गा० ४७ हमारे संग्रह में
४ इरियावही मिथ्यादुष्कृत संख्या गर्भित स्तवन *गा० १३
५ मुहपति पडिलेहण विचार गर्भित स्तवन *गा० १५
६ अष्टप्रातिहार्य गर्भित पार्श्व स्तवन गा० ५ नाहरजी संग्रह
७ चौदह गुणस्थानक स्तवन गा० ४३ भुवनभक्ति भंडार

(६) भक्ति-पद

१ वीसविहरमाण स्तवन गा० १६
२ चार चौवीशी ९६ तीर्थंकर स्तवन गा० १३ स्वयं लि० अंत पत्र संग्रह में
३ नेमिराजुल गीत गा० १४
४ स्थूलिभद्र गीत गा० ६
५ साधु गुण स्वाध्याय गा० २१
६ राजुलगीत गा० १०८
७ जैसलमेर पार्श्व स्तवन गा० ५
८ गौडी पार्श्व स्तवन गा० ५
९ पार्श्व स्तवन गा० ५—५—७—७
१० राजुल रहनेमिसझाय गा० ९—१८
११ बीकानेर चौवीसटा स्तवन सं० १७४५ माघ सुदी १५ संग्रह में
१२ लौद्रवा पार्श्व स्तवन गा० ११
१३ फलोधी पार्श्वस्तवन गा० ७
१४ मगसीपार्श्वस्तवन गा० ७
१५ बारहमासा
१६ नेमिस्तवन गा० १०
१७ संखेश्वर पार्श्वस्तवन गा० १२
१८ साधुगुण सझाय गा० २६
१९ स्थूलिभद्र सझाय गा० ९
२० जिन प्रतिमा स्तवन गा० २७
२१ आत्मशिक्षा स्वाध्याय गा० ९
२२ सम्यक्त्व सझाय गा० ७
२३ श्रीजिनकुशलसूरि स्तवन गा० ६
२४ " " गा० ५
२५ देवीजीगीत गा० ४, समस्या पूर्ति आदि फुटकर

इनमें से अधिकांश रचनायें हमारे संग्रह में है एवं प्रेस कापी भी तैयार है।

---

* १ हमारी ओर से प्रकाशित "अभयरत्नसार" पृ० ३६३

राजस्थानी का अध्ययन

[नरोत्तमदास स्वामी]

संवत १८७३ (सन १८१६) में कैरी, मार्शमैन और वार्ड नामके साहबों ने भारतीय भाषाओं के संबंध में अेक रिपोर्ट प्रकाशित करवायी जिसमें भारतवर्ष में बोली जानेवाली ३३ भाषाओं और बोलियों के नमूने दिये गये थे, इनमें राजस्थानी की छै बोलियों—मारवाड़ी, बीकानेरी, उदयपुरी, जयपुरी, हाड़ोती और माळवी—के नमूनों का समावेश किया गया था।

इसके ३७ वर्ष बाद सं० १९१० (सन् १८५३) में पैरी साहब ने भारतीय भाषाओं पर अेक निबंध लिखा जिसमें भारतीय भाषाओं को उनने दो वर्गों में बांटा—१ दक्षिणी या तूरानियन जिसमें द्रविड़ परिवार की भाषाओं को रखा गया और २ उत्तरी या आर्य, उनने मारवाड़ी को पंजाबी, मुलतानी (हिंदकी) और सिंधी के साथ हिंदी की अेक विभाषा बताया। मैथिली को बंगला की विभाषा लिखा।

सं० १९२९ (सन् १८७२) में बीम्स के 'आधुनिक भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण' नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। इसके आगे के दो भाग क्रमशः सं० १९३२ और १९३४ में प्रकाशित हुअे। भारतीय भाषाओं का विवेचन करनेवाला यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

सं० १९३२ (सन् १८७८) में जर्मन पादरी डाक्टर केलागका 'हिंदी भाषाका व्याकरण' प्रकाशित हुआ जिसमें हिंदीकी विभाषाओंके रूप में मारवाड़ी, मेवाड़ी, जयपुरी, कुमाऊंनी, गढ़वाली, नेपाली, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बैसवाड़ी, अवधी, रीवांई, भोजपुरी, मगही और मैथिलीके व्याकरण भी दिये गये हैं।

सं० १९३४ (सन् १८७७) में भारतीय भाषाविज्ञानके महा-पंडित डाक्टर सर रामकृष्ण गोपाळ भांडारकरने बंबई विश्वविद्यालयमें 'विलसन भाषा-वैज्ञानिक भाषण' दिये जिनमें संस्कृत, प्राकृत अेवं अपभ्रंशके साथ आधुनिक भारतीय भाषाओंका विस्तारसे विवेचन किया। इसमें राजस्थानी की बोलियों—मारवाड़ी और मेवाड़ी का उल्लेख हुआ है और प्रसंग-वश कहीं-कहीं उनकी दो-चार विशेषताओं का कथन भी किया गया है।

सं० १९३७ (सन् १८८०) में हार्नले साहबका 'गौड़ीय भाषाओंका व्याकरण' छपा जिसमें तुलनाके लिये राजस्थानकी बोलियोंकी व्याकरण-संबंधी विशेषताओंका उल्लेख किया गया है।

इन विद्वानों के सामने राजस्थानी का साहित्य नहीं था। इनने अपना विवेचन साहित्य के आधार पर नहीं किंतु बोलचाल के आधार पर किया। जिन भाषाओं में उन्हें साहित्य मिला, जैसे बंगला, गुजराती आदि, उन्हें इनने भाषाओं का नाम दिया और बाकी को अन्यान्य भाषाओं की बोलियां लिखा। राजस्थानी के विशाल साहित्य से ये सर्वथा अपरिचित थे। उसकी झांकी भी उन्हें नहीं मिली। डाक्टर केलाग को अपने विवेचन का आधार पादरियों द्वारा प्रकाशित कुछ लोकगीतों Ballads को बनाने के लिये बाध्य होना पड़ा[1] राजस्थानी का साहित्य उनके सामने होता तो वे देख पाते कि अन्य भाषाओं की भांति राजस्थानी भी प्राचीन साहित्यिक भाषा है और, बोलियों का अस्तित्व होने पर भी, साहित्य की भाषा प्रान्त भर में अेक ही रही है।

इन लोगों ने राजस्थानी की भांति असमिया (आसामी) की भी उपेक्षा की और उसे बंगला की विभाषा लिख मारा। परन्तु आगे चलकर असमिया ने अपना उचित स्थान प्राप्त कर लिया यद्यपि बंगालियों ने इसका बड़ा तीव्र विरोध किया। अभाग्यवश राजस्थानी की अब भी वही स्थिति है और वह अपने न्यायोचित अधिकार से वंचित है। यद्यपि जनसंख्या, विस्तार क्षेत्र, और साहित्यकी प्राचीनता तथा विशालता की दृष्टि से वह असमिया से बढ़कर है।

संवत् १९५३ (सन् १८९६) में राजस्थानीके प्रसिद्ध विद्वान पं० रामकर्ण आसोपाका मारवाड़ी व्याकरण प्रकाशित हुआ जो राजस्थानीका प्रथम व्याकरण होते हुअे भी बड़ा वैज्ञानिक है।

संवत १९५४ (सन् १८९७) में डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन का 'भारतकी भाषाओंकी पड़ताल' Linguistic Survey of India नामक महा-ग्रंथका

---

१ वह लिखता है :—

Marwari can scarcety be called a literary dialect ; the only work accessible to me has been the Marwari Khyals or Plays edited by Rev Mr. Robson of the Scatch presbyterian Mission, Beawar.

प्रकाशन आरंभ हुआ। इसके नवें खंड के दूसरे भागके रूपमें राजस्थानी और गुजराती भाषाओं की पड़ताल प्रकाशित हुई। यह भाग सं० १९६५ (सन् १९०८) में छपा इसमें सबसे प्रथम राजस्थानी का वैज्ञानिक अध्ययन हुआ और राजस्थानी साहित्यके महत्व को स्वीकार किया गया। ग्रियर्सन साहब को भी राजस्थानी साहित्यकी विशालता और महत्व की झांकी-मात्र ही मिली क्योंकि राजस्थानी का यह साहित्य प्रायः सारा-का-सारा अप्रकाशित ही था।

ग्रियर्सनने सबसे पहले गुजराती के साथ राजस्थानी का घनिष्ठ संबंध स्वीकार किया और यह सिद्ध किया कि राजस्थानी और गुजराती का विकास अेक ही भाषा से हुआ है और दोनों अभी कलतक अेक ही भाषा थीं। हिंदी और राजस्थानी के संबंध पर उनने इस प्रकार लिखा—

The Rajasthani dialects form a group among themselves differentiated from Western Hindi on the one hand and from Gujrati on the other hand, They are entitled to the dignity as together forming a separate independent language. They differ much more widely from Western Hindi than does, for instance, Panjabi. Under any circumstances, they cannot be classed as dialects of Western Hindi. If they are to be considered dialects of some hitherto acknowledged language, then they are dialects of Gujrati.[1]

अर्थात—राजस्थानी बोलियां मिलकर अेक अैसा वर्ग बनाती हैं, जो अेक ओर पश्चिमी हिंदी से और दूसरी ओर गुजराती से भिन्न है। वे सब मिलकर अेक स्वतन्त्र भाषा मानी जानेकी अधिकारिणी हैं। पश्चिमी हिंदी से वे पंजाबी से भी अधिक दूर हैं। पश्चिमी हिंदी की बोलियां वे किसी प्रकार नहीं मानी जा सकती। यदि उनको अभी तक मानी हुई किसी भाषाकी बोलियां ही मानना हो तो वे गुजराती की बोलियां हैं।

इस प्रकार राजस्थानी का स्वतन्त्र भाषा होनेका अधिकार स्वीकार किया गया और गवर्नमेंटने भी अपनी रिपोर्टों में राजस्थानी का स्वतन्त्र भाषा के रूप में उल्लेख करना आरँभ किया।

इस भाषाका राजस्थानी यह नाम भी सँभवतः ग्रियर्सनका दिया हुआ है। अब वह मारवाड़ी की जगह राजस्थानी कहलाने लगी और सरकारी रिपोर्टों तथा देश-विदेश के भाषावैज्ञानिक ग्रंथोंमें उसका इसी नाम से उल्लेख होने लगा। अमरीका के विद्वान Becomfield ने अपने Language(भाषा) नामक सु-प्रसिद्ध ग्रँथ में राजस्थानी का इसी नाम से उल्लेख किया और उसका स्थान संसारकी भाषाओं में २५ वां बताया[२]।

सं० १९६१ (सन् १९०४) में ग्रियर्सन साहबने भारतके तत्कालीन वाइसराय लार्ड कर्जन को राजस्थानी साहित्य की शोध और प्रकाशन के लिये अेकपत्र लिखा। फलस्वरूप भारत सरकार ने बंगाल की अेशियाटिक सोसाइटी को यह कार्य करनेका आदेश दिया और प्रारम्भिक कार्यके लिये रु० २४००) की अेक रकम भी मंजूर की। उपयुक्त कार्यकर्ता न मिलनेसे ४ वर्ष तक कोई कार्य न हो सका। सं० १९६६ (सन् १९०९) में हरप्रसाद शास्त्री इस कार्य पर नियुक्त हुअे। उनने सं० १९७० तक राजस्थान और गुजरात के तीन दौरे किये और चार रिपोर्टें तय्यार कीं। सं० १९७० में उनने चारों रिपोर्टों को मिलाकर अेक मुकम्मिल रिपोर्ट तय्यार की जो यथासमय प्रकाशित भी हुई।

---

२ संसारकी बिभिन्न भाषाओं के बोलने वालोंकी संख्या उनने इस प्रकार दी है -

(१) चीनी ४० करोड़	(१२) अरबी ३,७० लाख	(२३) अनामी १,४० लाख
(२) अंग्रेजी १७ करोड़	(१३) बिहारी ३,६० लाख	(२४) रोमानियन १,४० लाख
(३) रूसी ११ करोड़	(१४) पुर्त्तगाली ३,६० लाख	(२५) राजस्थानी १,३० लाख
(४) जर्मन ९ करोड़	(१५) पूर्वीहिंदी २,५० लाख	(२६) डच १३० लाख
(५) स्पेनी ६½ करोड़	(१६) तेलुगू २,४० लाख	(२७) वोहेमियन स्लावक, १२० लाख
(६) जापानी ५ करोड़	(१७) पोल २३० लाख	
(७) बंगला ५ करोड़	(१८) जावानी २,०० लाख	(२८) कन्नड़ १०० लाख
(८) फ्रेंच ४½ करोड़	(१९) मराठी १,९० लाख	(२९) उड़िया १०० लाख
(९) इटालियन ४१० लाख	(२०) तमिल १,९० लाख	(३० हँगरियन १०० लाख
(१०) तुर्की-तातार ३९० लाख	(२१) कोरियाई १,७० लाख	(३१) गुजराती १०० लाख
(११) पश्चिमीहिंदी ३,८० लाख	(२२) पंजाबी १,६० लाख	

नोट—ये आंकड़े पुराने हैं

राजस्थानी के विद्वानों में सबसे महत्वपूर्ण नाम डाक्टर अेल० पी० टैसीटोरी का है। यूरोपीय विद्वानों में वे राजस्थानी के सबसे बड़े विद्वान हुअे। वे इटली के रहने वाले थे। इटली में रहते हुअे ही उनने बिना व्याकरण और कोष को सहायता के (क्योंकि ये प्राप्त ही नहीं थे) राजस्थानी का अध्ययन किया और प्राचीन राजस्थानी के व्याकरण पर अेक बहुत बड़ा खोजपूर्ण निबन्ध लिखा जो इंडियन अेंटीक्वेरी पत्रिका में कई अंकों में लगातार छपा* सं० १९७० (सन् १९१४) में बंगाल की अेशियाटिक सोसाइटी के अधीन राजस्थान में अैतिहासिक और चारणी साहित्य की शोध करने के लिअे भारत-सरकार ने उन्हें इटली से बुलाया। भारत में आनेपर वे अधिकतर राजस्थान में ही रहे और छ: वर्ष तक राजस्थानी साहित्य की शोध और प्रकाशन का कार्य करते रहे। संवत १९७७ (सन् १९२०) में बीकानेर में ही उनका देहान्त हो गया। उस समय उनकी अवस्था केवल तीस बरस की थी। राजस्थान और राजस्थानी साहित्य से आपको इतना प्रेम था कि उनकी सेवा के लिअे आपने विवाह भी नहीं किया। टैसीटोरी के देहान्त से राजस्थानी को अपार क्षति पहुंची। वे कुछ और जीवित रहे होते तो राजस्थानी भाषा की यह हीन दशा न होती।

टैसीटोरी ने राजस्थान के सुदूर देहातों में ऊंटों पर अनेक बार यात्रा की और अैतिहासिक सामग्रीका संग्रह तथा अध्ययन किया। उनने राजस्थानी के सहस्रों हस्तलिखित ग्रंथों का पता लगाया और अनेकों का संग्रह किया या प्रतिलिपियां करवायी। उनने राजस्थानी ग्रंथों की तीन विवरणात्मक सूचियां Descriptive Catalogues तय्यार कीं तथा तीन प्रमुख राजस्थानी काव्यों का सम्पादन भी किया। राजस्थानी खोज कार्य के सम्बन्ध में उनने जो वार्षिक रिपोर्टें लिखीं वे बहुत महत्वपूर्ण हैं और लेखक की योग्यता की परिचायक हैं। उनकी ये सब विभिन्न कृतियां बंगाल की रायल अेशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

डाक्टर टर्नरने अपने निबंधों और जूल ब्लाकने अपने ग्रंथों में प्रसंग-वशात् राजस्थानीके संबंधमें थोड़ा-बहुत लिखा है। डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने अपने बंगला भाषा का आरंभ और विकाश नामक ग्रंथमें राजस्थानीकी विशेषताओं का स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है।

---

* इन्डियन अेंटिक्वेरी सन् १९१४, १९१५ तथा १९१६ की जिल्दें।

गुजराती के कई-अेक विद्वानों ने भी प्राचीन गुजराती के विवेचनके प्रसंगमें कभी कभी राजस्थानी भाषा और साहित्यका विवेचन भी किया है। प्राचीन राजस्थानी और प्राचीन गुजराती दोनों वास्तवमें अेक ही भाषा हैं अतः गुजराती विद्वानोंके कार्य को भी राजस्थानी का कार्य कहना अनुपयुक्त न होगा। इन विद्वानोंमें निम्नलिखित नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

(१) रमणभाई महीपतराम नीळकंठ
(२) केशव हर्षद ध्रुव
(३) डाह्या भाई पी० देरासरी
(४) नरसिंहराव भोळानाथ दीवटिया
(५) कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी
(६) बेचरदास जीवराज दोशी
(७) झवेरचंद मेघाणी
(८) मुनि जिनविजय
(९) केशवराम काशीराम शास्त्री

राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्ताओं द्वारा किये हुअे कार्य का उल्लेख भी संक्षेप में नीचे किया जाता है :—

बूंदी के कविराज मुरारिदान ने अमरकोष की शैली में डिंगल-कोष तय्यार किया। पं० रामकरण आसोपा ने राजस्थानी का व्याकरण लिखा और साठ हजार शब्दों का अेक विशाल आधुनिक शैली का राजस्थानी-कोष तय्यार किया। वंशभास्कर, सूरज-प्रकाश, राजरूपक, बांकीदास-ग्रंथावली, नैणसी-रीख्यात(अपूर्ण) आदि कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन भी उनने किया। ठाकुर भूरसिंह शेखावत मलसीसर वालों ने प्राचीन राजस्थानी कविता के दो सुन्दर संकलन-ग्रन्थ तय्यार किये—(१) विविधसंग्रह, जिसमें विषय विभाग करके राजस्थानी कविता का, विशेषतः राजस्थानी दूहों का, संग्रह किया गया है। यह ग्रन्थ खूब लोक-प्रिय हुआ और (२) महाराणा-यश-प्रकाश, जिसमें मेवाड़ के महाराणाओं की कविता, विशेषतः गीत, अर्थ सहित संकलित किये गये हैं। श्री युत रामनारायण दूगड़ ने नैणसी की ख्यात का हिंदी अनुवाद किया। मुन्सिफ देवीप्रसाद ने राज-रसनामृत, महिला-मृदु-वाणी और कविरत्नमाला नामक तीन

संकलन ग्रंथ छपाये, इनमें से प्रथम में राजस्थान के राजघराने के लोगों की तथा दूसरे में राजस्थान की महिला कवियों की कविताओं का सपरिचय संग्रह है। तीसरी कविरत्नमाला में राजस्थान के अनेकानेक प्राचीन कवियों की डिंगल पिंगल की कविताऐं संगृहीत हैं। पुरोहित हरिनारायण राजस्थान के अक बहुत उत्साही साहित्यसेवी थे। वे राजास्थान के संत-साहित्य के विशेषज्ञ थे, जिसका विशाल संग्रह उनके पास था। सुंदर ग्रंथावली और मीरां के पदों का संपादन उनने बड़ी योग्यता के साथ किया। नागरी प्रचारिणी सभा के अधीन बालाबख्स राजपूत चारण ग्रन्थमाळा की स्थापना भी उनने करवायी जिसमें राजस्थानी के अनेक बहुमूल्य ग्रंथ छप चुके हैं। बीकानेर के महाराज जगमालसिंह ने राठौड़ पृथ्वीराज कृत क्रिसन रुकमणीरी वेलिकी टीका लिखी जिसे नवीन ढ़ंग से संपादित कर ठाकुर रामसिंह और सूर्यकरण पारीक ने प्रयाग की हिन्दुस्तानी अकेडेमी से प्रकाशित करवाया।

ठाकुर रामसिंह और सूर्यकरण पारीक के नाम राजस्थानी के कार्यकर्ताओं में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजस्थानी की वर्त्तमान प्रगति का श्रेय बहुत कुछ इन्हीं मित्र-द्वयको है। आप लोगों ने राजस्थानी के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों को विस्तृत प्रस्तावनाओं के सहित संपादित करके प्रकाशित करवाया। क्रिसन-रुकमणीरी वेलि, ढोला-मारूरा दूहा, राजस्थान के लोकगीत, राजस्थान के ग्राम-गीत, जटमल की गोराबादलरी बात, राव जैतसीरो छंद, राजस्थानी बातां, राजस्थानी लोकगीत, आदि आप लोगों की उल्लेखनीय संपादित कृतियां हैं। पारीकजी ने प्रयत्न करके पिलाणी से पिलाणी राजस्थानी ग्रन्थमाला का प्रकाशन भी आरंभ करवाया। राजस्थानी भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में लिखे हुये आपके लेख बहुत महत्वपूर्ण हैं। ठाकुर रामसिंह अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुये थे। बीकानेर में जब सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीच्यूट की स्थापना हुई तो आप ही उस के प्रथम अध्यक्ष और संचालक नियुक्त किये गये। राजस्थानी साहित्य पीठ के सभापति भी आप बहुत दिनों रहे। राजस्थानी भाषा को शिक्षा विभाग में स्थान दिलाने के लिये आपने बहुत प्रयत्न किया है। विविध संस्थाओं के विशेष अधिवेशनों में दिये गये आपके भाषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

जगदीश सिंह गहलोत ने ऊमरकाव्य, राजिया के सोरठे, राजस्थान की कहावतें आदि का सम्पादन और प्रकाशन किया। मोतीलाल मेनारिया ने राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा नामक इतिहास ग्रंथ लिखा तथा डिंगल में वीर रस का सम्पादन किया। उनका राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज बहुत महत्त्वपूर्ण कृति है।

डाक्टर दशरथ शर्मा सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष तथा इंस्टीट्यूट की राजस्थान भारती के अन्यतम सम्पादक हैं। आपने राजस्थानी के सुप्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ 'दयालदास की ख्यात' का संपादन किया है। राजस्थानी में खोज का कार्य जितना अगरचंद नाहटा और भंवरलाल नाहटा ने किया है उतना और किसी विद्वान ने नहीं। आपने राजस्थानी के हजारो ग्रंथो का संग्रह और उनकी सूचियां तय्यार की हैं। सैकड़ों राजस्थानी साहित्यकारों के परिचय और जीवनचरित्र को सामग्री भी आपने अेकत्र की है। जैन अेतिहासिक काव्यसंग्रह, युगप्रधान जिनचंदसूरि, जिनकुशलसूरि, मणिधारी जिनचंद्रसूरि, जिनदत्तसूरि समय सुन्दर, ज्ञानसार, धर्मवर्धन आदि दर्जनों खोजपूर्ण ग्रंथों की आप रचना कर चुके हैं। आपके लिखे विविध विषयक लेखों की संख्या पांच सौ से उपर पहुँचती है। श्री अगरचंदजी राजस्थान-भारती और राजस्थानी निबंधमाला के अन्यतम संपादक भी हैं।

जोधपुर के सीताराम लाळस का चारणी साहित्य का ज्ञान बड़ा विस्तृत है। आपने डिंगल-गीतों का विशाल संग्रह कर रखा है। वीरमायण नामक सुप्रसिद्ध राजस्थानी काव्य का संपादन भी आपने किया है।

पिलाणी के श्री गणपति स्वामी पारीकजी के अधूरे छोड़े हुअे लोकगीतों के संग्रह के कार्य को बराबर आगे बढ़ाये जा रहे हैं। आपने राजस्थानी लोक साहित्य के अनेक अमूल्य रत्नों को खोज निकाला है जो प्रकाशित होनेपर राजस्थानी साहित्य के लिअे अत्यन्त गौरव की वस्तु सिद्ध होंगे। प्रोफेसर कन्हैयालाल सहल अपने सहयोगी पतराम गौड़ के साथ पिलाणी में पारीकजी के कार्य को चलाये जा रहे हैं। आप लोगों ने चौबोली नामक कहानी संग्रह का अर्थ सहित संपादन किया है। सहलजी ने राजस्थानी कहावतों का एक संग्रह भी तय्यार किया है।

बीकानेर के मुरलीधर व्यास ने राजस्थानी लोकगीतों, कहावतों और मुहावरों का विशाळ संग्रह किया है। आप बहुत समय तक राजस्थानी साहित्य पीठ के

प्रधान मन्त्री भी रहे हैं। दीनानाथ खत्री अनूप संस्कृत पुस्तकालय में राजस्थानी विभाग के अध्यक्ष तथा सादूल प्राच्य ग्रंथमाला के सहकारी सम्पादक हैं। आप डाक्टर दशरथ शर्मा के साथ दयालदास तथा नेणसीकी ख्यातों का संपादन भी कर रहे हैं। राजस्थान के विख्यात सिद्ध-पुरुष रामदेवजी के संबंध के साहित्य का आपने बहुत अच्छा संग्रह किया है।

रावतमल सारस्वतका राजस्थानी-साहित्यका अध्ययन बहुत विस्तृत है। आपने राजस्थानी साहित्यका परिचय देनेवाला अेक विस्तृत निबंध लिखा है जिसका कुछ अंश राजस्थान भारती पत्रिकामें निकला है। आप पहले अनूप संस्कृत पुस्तकालय के उपपुस्तकाध्यक्ष थे। उस काल में आपने वहां के राजस्थानी ग्रंथों की विस्तृत सूची तय्यार की।

राजस्थानी में निम्नलिखित पत्र पत्रिकाअें प्रकाशित हुईं पर वे राजस्थानियों की उपेक्षा के कारण ही बँद होगयीं -

(१) मारवाड़ी-हितकारक- यह बराड़ के खामगांव नामक स्थान से प्रकाशित होता था। इसके संचालक श्रीनारायण अग्रवाल और सँपादक छोटेलाल शुक्ल बड़े उत्साही और लगनवाले व्यक्ति थे। मातृभाषा की ओर लोगों की उदासीनता होते हुअे भी इतने वरसों तक पत्र को चलाया और राजस्थानी में अनेक लोकोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की। इस पत्र के द्वारा राजस्थानी लेखकोंका अेक अच्छा मंडल तय्यार हो गया था।

(२) मारवाड़ी- मित्र — यह बंबईसे प्रकाशित हुआ था।

(३) आगीवाण- इसे राजस्थान के सु-प्रसिद्ध नेता लोक-नायक जयनारायण व्यासने ब्यावर से प्रकाशित किया था

राजस्थानी शोध सम्बन्धी पत्रिकाओं के नाम इस प्रकार हैं—

(१) राजस्थान - इसका प्रकाशन कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटी ने किया था। इसके सम्पादक राजस्थानके ख्यातनामा विद्वान किशोरसिंह बार्हस्पत्य थे। दो वर्ष चलकर यह पत्र बँद हो गया।

(२) राजस्थानी-पं० सूर्यकरण पारीक को राजस्थानका बंद होना अखरा। उनने पत्रिकाके पुनः प्रकाशन के लिअे प्रयत्न किया। प्रयत्नमें उन्हें सफलता हुई और पत्रिका राजस्थानी नाम धारण करके बड़ी सजधजके साथ निकली। दुःखका

विषयहै कि प्रथमांकके छपकर तय्यार होनेके पूर्व ही पारीकजीका देहान्त होगया। पारीकजी के मित्रों ने पत्रिकाका वर्ष भर चलाये रखा पर अन्तमें प्रचार और प्रकाशन की व्यवस्था संतोषजनक न होनेसे उसको बंद करना पड़ा।

(३) राजस्थान-साहित्य - यह राजस्थान हिंदी साहित्य सम्मेलनका मुखपत्र था और सम्मेलनके भूतपूर्व प्रधानमंत्री जनार्दनराय नागर के प्रयत्न से प्रकाशित हुआ था। आर्थिक कठिनाईके कारण यह भी चल नहीं सका।

(४) चारण - यह अखिल भारतीय चारण सम्मेलन का मुखपत्र था। ईसरदान आसिया और खेतसिंह मिस्रणके संपादकत्वमें आने पर इसने अच्छी ख्याति प्राप्त की और लोगों को इससे बड़ी आशा हो चली थी। आर्थिक कठिनाई ने इसे भी नहीं पनपने दिया।

(५) राजस्थान-भारती -यह बीकानेर के सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट की मुखपत्रिका है और डाक्टर दशरथ शर्मा, अगरचंद नाहटा तथा इस निबंधके लेखक के संपादकत्व में प्रकाशित होती है।

(६) राजस्थानीके वर्तमान कार्यकर्ताओंमें श्रीयुत भगवतीप्रसादसिंह बीसेन और श्रीयुत रघुनाथ प्रसादसिंहाणिया के नाम नहीं भुलाये जा सकते। दोनों सज्जनोंने सेठ रामदेवजी चोखाणी के सहयोग से कलकत्तेमें राजस्थान रिसर्च सोसाइटी नामकी संस्था स्थापित की थी। इस संस्थाने बड़ा ठोस कार्य किया। योग्य विद्वानोंका सहयोग प्राप्त करके राजस्थान नामकी त्रैमासिक शोध पत्रिका निकाली जो आगे चलकर राजस्थानी नामसे प्रकाशित होने लगी भगवती बाबू ने मूक रूपसे राजस्थानी भाषा की जो अखंड सेवा की वह भूलनेकी वस्तु नहीं। राजस्थानीके प्राचीन साहित्य और लोक साहित्य के न-जाने कितने रत्नों को उनने नष्ट होनेसे बचाया।

(७) उदयपुर के हिंदी विद्यापीठकी शोध पत्रिका-यह डाक्टर रघुवीरसिंह, मोतीलाल मेनारिया, नरोत्तमदास स्वामी आदिके संपादकत्वमें हालमें ही निकलने लगी है।

राजस्थानी साहित्य को प्रकाशित करनेवाली कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थ-मालाऐं ये हैं—

(१) **बालावबश-चारण-राजपूत ग्रन्थमाला—**

इसकी स्थापना जयपुर के पुरोहित हरिनारायण के प्रयत्नों से हुई थी। इसका प्रकाशन काशी की नागरी प्रचारिणी सभा करती है।

(२) पिळाणी राजस्थानी ग्रंथमाळा—

इसका आरम्भ सुर्यकरण पारीक ने करवाया था। पारीकजी के देहांत के पश्चात इसका कार्य बंद हो गया।

(३) सूर्यकरण-पारीक-स्मारक ग्रंथमाळा—

इसका प्रकाशन पिलाणी के बिड़ला कालेज की सुर्यकरण पारीक स्मारक समिति करती है।

(४) सस्ती राजस्थानी ग्रंथमाळा—

इसका प्रकाशन बीकानेर के नवयुग-ग्रंथ-कुटीर ने आरंभ किया था। कई बरसों से इसमें कोई नवीन प्रकाशन नहीं हो पाया है।

(५) नव राजस्थान ग्रंथमाळा—

इसका प्रकाशन कलकत्ते की राजस्थान रिसर्च सोसाईटी द्वारा होता था। इसका कार्य भी अब बन्द है।

(६) सादूळ प्राच्य ग्रंथमाळा—

इसका प्रकाशन बीकानेर गवर्नमेंट के द्वारा किया जाता है।

(७) जयश्रीराम रांकण ग्रंथमाळा—

इसकी स्थापना इस निबंध लेखक द्वारा अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में की गयी है।

(८) राजस्थान भारती ग्रंथमाळा—

इसका प्रकाशन कलकत्ते से राजस्थानी साहित्य परिषद द्वारा हो रहा है। प्रथम ग्रंथ राजस्थनी कहावतां लगभग छप चुका है। अन्यान्य लगभग दो दर्जन महत्वपूर्ण ग्रंथ तय्यार है जो प्रेस की सुविधानुसार शीघ्र ही प्रकाशित होंगे।

राजस्थानी खोज का कार्य करनेवाली कुछ प्रमुख संस्थाओं के नाम इस प्रकार हैं—

(१) अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन—

इसका प्रथम अधिवेशन दिनाजपुर में ठाकुर रामसिंह के सभापतित्व में हुआ था। इसका कार्यालय जोधपुर में हैं और शिवराज जोशी 'सुमनेश' इसके प्रधान मंत्री हैं। सम्मेलन ने कोई उल्लेखनीय कार्य अभी तक नहीं किया।

(२) उदयपुर के हिन्दी विद्यापीठ का शोध विभाग—

यह संस्था बहुत ठोस कार्य कर रही है। राजस्थान में हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज नामक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित कर चुकी है तथा कई अेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रेस में हैं।

(३) राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता—

आरम्भ के दो चार वर्षों में इस संस्था ने बहुत ठोस कार्य किया। राजस्थानी ग्रंथों, कविताओं, कहानियों, गीतों, कहावतों आदि का विस्तृत संग्रह किया तथा पत्रिका और पुस्तकमाला का प्रकाशन भी आरम्भ किया।

(४) सूर्यकरण पारीक स्मारक समिति—

इसकी स्थापना स्वर्गीय पारीकजी के मित्रों, प्रेमियों, और शिष्यों की सहायता से हुई थी। इसके द्वारा पुस्तक प्रकाशन का कार्य होता है।

(५) सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट—इसकी स्थापना बीकानेर राज्य के प्रमुख विद्वानों द्वारा नवम्बर सन् १९४४ में की गयी थी। इसे बीकानेर नरेश का संरक्षण प्राप्त है और राज्य से पांच हजार की वार्षिक सहायता भी मिलती है। इसके प्रथम अध्यक्ष ठाकुर रामसिंह थे। अब डाक्टर दशरथ शर्मा अेम० अे० डी० लिट्० इसके अध्यक्ष हैं। इसके द्वारा राजस्थान भारती नामक त्रैमासिक खोज पत्रिका प्रकाशित होती है। राजस्थानी के बृहत् कोष का कार्य भी, जिसे राज स्थानी साहित्य पीठ ने आरंभ किया था अब इस संस्था द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। लगभग साठ हजार शब्द संगृहीत हो चुके हैं।

(६) राजस्थानी साहित्य पीठ, बीकानेर–राजस्थानी साहित्य का अध्ययन तथा संग्रह करनेवाली संस्थाओं में यह सर्व प्रमुख है। इसने राजस्थानी कहावतों मुहावरों, लोकगीतों आदि का विशाल संग्रह किया है। राजस्थानी के कोष और व्याकरण की सामग्री भी बहुत कुछ अेकत्र की, कोष के लिअे ३५ हजार से ऊपर शब्दों का संग्रह किया जो अब सादूल राजस्थानो रिसर्च इंस्टीट्यूट को सौंप दिया गया है।

(७) राजस्थानी साहित्य परिषद, कलकत्ता—

उपर्युक्त राजस्थान रिसर्च सोसाईटी का ही इस नाम से नवीन संगठन किया गया है। बीकानेर के राजस्थानी साहित्य पीठ का सक्रिय सहयोग प्राप्त है। पीठके अपने समस्त ग्रंथ प्रकाशनार्थ परिषद् को दे दिये हैं। परिषद् ने भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के मंगलमय अवसर से राजस्थानी नामक निबन्धमाला का प्रकाशन आरम्भ कर दिया है जिसका यह द्वितीय भाग पाठकों के हाथों मे हैं।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

(१) आढा ओपा-रा गीत

(१)

थोड़ो कुण करै भरोसो थारो ? वीसां वातां लखण बुरा
लूंटै कुण तो विन लाखीणो जोबन सरखो रतन जुरा ? १

अरजण-भीम जिसा आलीजा रोसे बेदल थाया रंग
जारै तो बिण कवण जोजरी ! नव-पण जिसा अमोलक नग २

पीळा चावल कैण परठिया ? वे गम आवै माण विण
हेर लिया जण-जणरा हेतू पण-रा राखण तरणपण ३

चकवै खट थाका तन छेदै पाका जिम तरवररा पान
ओपा, जुरा पथर-नू आवै, मानव देह किसो उनमान ? ४

---

१ हे वृद्धावस्था ! तेरा तनिक भी विश्वास कौन करे ? तेरे लक्षण बीस विश्वे बुरे हैं। तेरे बिना यौवन जैसे लाखों के मूल्यवाले रत्न को कौन लूट ले ?

२ अर्जुन और भीम जैसे वीररत्न जिनके क्रुद्ध होनेपर सेनाओं में हाहाकार मच-जाता था, वे आज कहाँ हैं ? हे जरा ! तेरे विना युवावस्था जैसे अमूल्य रत्न को कौन जीर्ण करे ?

३ तुझे पीले चावल किसने भेजे थे, किसने बुलाया था ? विना आदर के विना बिचारे तू आती है।

जन-जन के हितकारी और प्रण की रक्षा करनेवाले तारुण्य को तूने छीन लिया।

४ छहों चक्रवर्ती राजाओं के शरीर थक गये—पेड़ के पत्तों की भांति वे पक गये। ओपा कहता है कि पत्थर को भी जरा आ पहुँचती है, फिर मनुष्य शरीर का क्या विचार !

(२)

मन जाणै चढ़ूं हाथियां माथै
खुर रगड़ंतां जनम खुवै
नर री जाणी बात हुवै नह
हर री जाणी बात हुवै १

मन जाणै पहरूं महमूदी
फाटा धाबळ लियां फिरै
कासूं हुवै मनखरो कीधो
करै जिको करतार करै २

मन जाणै पीवूं पै-मिसरी
छाछ सुवरणी मिळै न छांट
बळिया सो पाछा कुण वाळै
उण घर री लेखण रा आंट ३

मन जाणै पदमण माणीजै
गोविंद बांधै पथर गळै
मांडणहारै लेख मांडिया
मेटणहारो कवण मिळै ४

---

१ मनुष्य मनमें विचारता है कि हाथियों पर चढ़ूं पर पैरों को घिसता हुआ जनम बिताता है। नर की सोची बात नहीं होती, हरि की सोची बात होती है।

२ मनमें सोचता है कि महमूदी (अेक बढ़िया वस्त्र) पहनूं पर फटे चिथड़े पहने फिरता है, मनुष्य का किया क्या होता है, जो कुछ करता है वह ईश्वर करता है।

३ मन करता है कि दूध-मिश्री पीऊं पर छाछ भी बूंद भर नहीं मिलती उस घर (ईश्वर के घर) की लेखनी के अंक जो लिख दिये गये उन्हें कौन लौटा सकता है ?

४ मनमें आती है कि पद्मिनी का आनंद लूं, पर ईश्वर गळे में पत्थर बांध देता है। लिखनेवाले ने लेख लिख दिये, उन्हें मिटानेवाला कौन मिले ?

थारै मन बैठूं धवळाहर
तापै सूनो ढूंढ तठै
मोटा आखर कवण मेटवै
कुटी लिखी सो महल कठै ५

दिल मैं जाणै पांव दबाऊं
अवरांरा पग दावै आप
कळपै किसूं किसूं नर ! कांपै
प्राणी ! लेख तणो परताप ६

चित मैं जाणै हुकम चलाऊं
हुयम तणै वस नार न होय
साहब अंक कख्या जे साचा
काचा करण सकै नहिं कोय ७

वर जाणै पकवान अरोगूं
धाप'र मिळै न लुखो धान
आदम की विध करै, ओपला ?
भोळा जे रचिया भगवान ८

---

५ मनमें करता है कि महलों में बैठूं, पर वहां सूने खंडहर में तापता है। बड़े अक्षरों को (लेख को) कौन मिटा सकता है। जब कुटिया लिखी है तो महल कहां ?

६ मन में समझता है कि अपने पैर दबवाऊं पर स्वयं औरों के पैर दबाता है। हे नर ! क्यों कलपता है ? क्यों कांपता है ? हे प्राणी ! लेख के प्रताप हैं।

७ चित्त में विचारता है कि दूसरों पर हुकम चलाऊं पर घर की स्त्री भी हुक्म में नहीं चलती। ईश्वर ने जो सच्चे लेख कर दिये हैं उनको कोई कच्चा नहीं कर सकता।

८ यों सोचता है कि पक्वान्न खाऊं पर रूखा-सूखा अन्न भी पेट भर कर नहीं मिलता। ओपा कहता है कि मनुष्य क्या उपाय करे ? होगा वही जो भगवान ने लिख दिया है।

ओ घट घुड़लो जाण, ओपला
गोव्रंद काय न गाव्रै
खळ जम कियां उघाड़ै खांडै
आतुर कीधां आव्रै ५
मोटो प्रसण डांग ले मोटी
काळ घणा नर कूटै
काचो कुंभ मिनख-ची काया
फिरतां घिरतां फूटै ६

(४)

दियै व्याज विव्रणा लियै, न भांजै ढोकड़ो
रोकड़ो देखियां घणो राजी
आगलै घरै तेड़ाव्रियो, आंधला
पाछला घरां री म कर, पाजी ! १
लोभियो पराया खेत ठगनै लियै
थवाव्रै आंखड़ा भरै ठाला
आंगणै वठा दरबार रा आदमी
केही घरबार री आस, काला ? २

---

५ ओपा कहता है कि इस शरीर को घुड़ला समझ कर गोविंद के गुण क्यों नहीं गाता ? दुष्ट यमराज (काल) खड्ग खींचे हुअे आतुरता के साथ आ रहा है ।

६ काल रूपी बड़ा शत्रु मोटी लाठी लेकर अनेकों मनुष्यों को मारता है । मनुष्य का शरीर कच्चा घड़ा है जो चलते-फिरते ही फूट जाता है ।

१ दूना ब्याज लेकर रुपया देता है । अेक छदाम भी खर्च नहीं करता । नकद देखने से बड़ा राजी होता है । हे अंधे ! अगले घर का बुलावा आ गया । हे पाजी ! पिछले घर का फिक्र मत कर ।

२ लोभी पराये खेतों को ठग कर लेता है, और अपने खाली कोठों को भरता है (?), हे मूर्ख ! दरबार के सिपाही आंगन में बैठे हैं (ईश्वर के दूत तुझे लेने को आ पहुँचे हैं), अब घरबार की क्या आशा करता है ?

पिवै जव राव नै गेहूं वेचै परा
भाटके रूपिया करै मेळा
राव़ळा हाथ रा दूत लाया रुका
बाव़ळा ! जीव़णो किती बेळा ? ३
न पाव़ै राब, मीठो कदे न जीमै
न पैरै लूगड़ा कदे नीका
डाकियो प्रसण जम जिसो हेला दियें
कही विध आव़सी नींद, कीका ? ४
कळै रो मूळ, कड़व़ो घणो कुटम सूं,
नारियण नाम मन मांहि नाणै
उठा रा दूत खोटी हुव़ै आंगणै
जीतबो अठा री आस जाणै ५
आप डाव़ो अनै गिणें काळा अव़र
खाभलो कमाई करै खोटी
चराया छळा जिम पान गिणिया चरै
मरण री न जाणै खोड़ मोटी ६

---

३ गेहूँ वेच देता है और जौ की राब बनाकर पीता है। भटक-भटक कर रुपये इकट्ठे करता है। हे बावले ! दूत राजा के हाथ का परवाना ले आये हैं। अब जीना कितनी बेला का है ?

४ कभी किसी को राब भी नहीं पिलाता, न कभी स्वयं मीठा भोजन करता है न कभी अच्छे कपड़े पहनता है। यमराज जैसा डाकी (सर्वभक्षक) शत्रु पुकार रहा है— हे वत्स ! यहां किस प्रकार नींद आवेगी ?

५ कलह की जड़ कुटुम्ब से सदा द्वेष रखता है। नारायण के नाम को कभी मन में नहीं लाता। वहां के दूत आंगन में खोटी हो रहे हैं (तुम्हारी प्रतीक्षा में उन्हें देर हो रही है), और तू यहां की आशा लगाये बैठा है।

६ आप चतुर बनता है और दूसरों को मूर्ख समझता है, दुष्ट खोटी कमाई करता है, चराये जाने वाले बकरों की तरह गिने हुओ पत्ते चरता है, मरने की मोटी बुराई को नहीं जानता।

आक-संसार रंजियो घणो आतिमा
अलख नह भेंटियो कदे आंबो
थोभियै दीह घड़ियै नकूं थोभियो
लोभियै पयाणो कियो लांबो ७
ओपलो कहै, मत कोय भूलो अनंत
वड-वडा जोध-जोधार बीता
विसन न पछाणियो जिके रीता वुहा
जिहां हर जाणियो जिके जीता ८

(५)

कर जाणो कोइ भलाई कीजो
लाभ भजन रा लीजो लोय
पुरखां ! दुय दिन तणा प्रामणा
किण सूं मती बिगाड़ो कोय १
जाणो छै, जाणो छै, जाणो
समझो भीतर होय सयान
बै दिन काज जहर क्यूं बोवो
मरदां ! दूर तणा मिजमान २

---

७ आत्मा आक-तुल्य संसार में खूब मग्न है, अलक्ष (ईश्वर) रूप आमसे कभी भेंट नहीं की। अंत में लोभी ने ऐसी लम्बी यात्रा की कि ठहराने पर भी घड़ी भर भी नहीं ठहरा।

८ ओपा कहता है कि कोई भगवान को मत भूलो बड़े-बड़े जोधे और जूझार मर गये, जिनने विष्णु को नहीं पहचाना वे खाली हाथ गये, जिनने हरि को जान लिया वे जीत गये।

१ यदि कोई कर जानो तो भलाई करना, हे लोगों, जन्म का लाभ प्राप्त कर लेना, हे पुरुषो ! दो दिन के पाहुने हो, कोई किसी से मत बिगाड़ करो।

२ हृदय के भीतर समझदार होकर समझ लो कि जाना है, जाना है, जाना है। हे मनुष्यो ! बहुत दूर के मेहमान हो उस दिनके लिये विष क्यों बोते हो ?

यूंहिज करतां जासी ऊमर
परम न काळ परार न पौर,
आपां वात करां अन्नरांरी
आपां री करसी कोई और ३
गरवा हुवौ हरी-गुण गावौ
छीलर जेम म दाखो छेह
आज'र काळ करतां ओपा,
दिहड़ा गया सुताळी देह ४

(६)

जोबन कारमो रे ! वहणो वह जासी,
आदर भजन-तणो अभियास
प्राणिया ! कदे न आवै पाछो
वळे न बीजो बागड़ वास १
होय सनाथ, जनम मत हारे
नाथ समर त्रय-लोक-नरेस
नाम लियण जोयां मिळसी नह
बीस कोड़ देतां लघु वेस २

---

३ कल, परसों, तरसों, नरसों यों ही करते आयु बीत जायगी। इस समय हम दूसरों की बातें कर रहे हैं, तब हमारी बातें कोई दूसरे करेंगे।

४ बड़े बनो, हरि के गुण गाओ, छिछली तलैया की तरह अन्त मत दिखाओ, ओपा कहता है कि आज और कल करते-करते दिन ताली देकर भाग गये।

१ बीत जाने वाला यौवन अकारथ वह जायगा। हे आत्मा ! भजन का अभ्यास कर। हे प्राणी ! तू कभी पीछा नहीं आवेगा, इस बागड़ भूमि में फिर तेरा दूसरा निवास नहीं होगा।

२ जनम को मत खो, तीनों लोकों के अधिपति नाथ को याद कर और सनाथ हो, बीस करोड़ की सम्पत्ति देने से भी नाम लेने को भी नहीं मिलेगी।

सूनै गांव म फाड़े साड़ो
  गाफल हिरदै राख गियान
ओपा, बै दिन फिर कद आसी,
  भजसी भळै कदे भगवान ? ३
परसराम भज, चाख अम्रित फळ,
  जनम सफळ हुय जासी
पाछो वळै अमोलक पंछी !
  इण तरवर कद आसी ? ४

(७)

गाडा में नाव, नाव में गाडो,
  लेखव-चा कुण भेव लधै ?
ओपा, राम-तणी गत अंवळी
  विणसै दिली' र दिखण वधै १
छावै ग्वाड़ पड़ंती छाया
  जिको पटंतर जगत जुवै
सुवस बसावै सहर सतारो
  हथणापुर में वेढ़ हुवै २

---

३ सूने गांव में पुकार मत मचा। हे गाफिल ! हृदय में ज्ञान रख, ओपा कहता है कि वे दिन फिर कब आयंगे ? भगवान को फिर कब भजेगा ?

४ भगवान का भजन कर और अमृत-फल चख, इस प्रकार जन्म सफल हो जायगा, हे अमोलक पक्षी ! इस पेड़ पर फिर लौट कर कब आवेगा ?

१ गाड़ी में नाव है और नाव में गाड़ी, ईश्वर के लेख का भेद कौन पा सकता है ? ओपा कहता है कि राम की गति बड़ी टेढ़ी है, दिल्ली जैसा बड़ा साम्राज्य नष्ट हो जाता है और दक्षिण उन्नति करने लगता है।

२ झोंपड़ियों को छाया पड़ने के क्षणतक ऐसा छवा डालता है कि जिसकी समता संसार में होती है। सतारे के शहरों को अच्छी तरह बसाता है और हस्तिनापुर (दिल्ली) खंडहर होता है।

कोड़ प्रकार मिनखरा कूड़ा
    करता चाहै तिकूं करै
बूडै अवरंग-तणो बैसणो
    तखत सतारा-तणो तिरै ३
खान निवाब दिलीदळ खसिया
    जाग्या मरहट जुवा-जुवा
हुता रांक सो धींग करे हर
    हुता धींग सो रांक हुवा ४
अकरण-करण अेहवो ईसर
    नरखै सदन जानकी-नाह
पतसाहां उथपै पतसाही
    प्रभु कीयै रंकां पतिसाह ५

(८)

मूठी जेतलो जमारो, नरां! ग्रहो काय कररी मुठी,
    पुन्न कीयां गांठी मूठी साबतो प्रमाण
मोटो धणी याद करो, भूठी वातां लागो मती
    मूठी धूळ तणी थारी देह-रो मंडाण १

३ मनुष्य के सोचे हुअे करोड़ों उपाय झूठे हैं, कर्त्ता जो चाहता है वह करता है, औरंगजेब का सिंहासन डूब जाता है, उसके शत्रुओं का तख्त तैरने लगता है।

४ दिल्लीपति के खान और नवाब नष्ट हो गये, भिन्न भिन्न मराठे जाग उठे, जो रंक थे उनको भगवान ने बलवान कर दिया, जो बलवान थे, वे रंक हो गये।

५ ईश्वर इस प्रकार अकरणीय का करनेवाला है, वह बादशाहों की बादशाही उलट देता है, वह प्रभु रंकों को बादशाह बना देता है।

१ हे मनुष्यों! मुट्ठी जितना मानवजीवन है, हाथ की मुट्ठी क्यों पकड़ते हो? पुण्य करने से मुट्ठी बंधी ही रहती है, यह सच्चा प्रमाण है।

बड़े मालिक को याद करो, भूठी बातों में मत लगो। तेरे देह की सज्जा धूल की मुट्ठी के समान है।

हीर चीर हेम तार घड़ी में बिराणी होसी
लाखां द्रव विभौ सबै हाथी घोड़ा लांठ
नाम धाम झूठा जाणो, धंधै झूठै लागा, नरां!
गाररा मिणा रै पड़ी बायरा-री गांठ २

हूं करूं हूं करूं कहे गाढा टेढा काय हालो?
निमख में गाढ़ा टेढ़ा करै दीनानाथ
मेदनी अकास दोनूं काळ-तणा डाढां मांही
हेळ मात्र गंदी काया साढा तीन हाथ ३

देग तेग सावधान जिमाड़ो धपाड़ो दुनी
मीठा बोलो साईं भजो मोटो राखो मन्न
जाया आया बांधी मूठी खूली मूठी परा जावो
ओपो आढो कहै नरां! वांटो मूठी अन्न ४

---

२ हीरे, वस्त्र, सोना, (सोने चांदी के) तार लाखों का द्रव्य और सारा वैभव तथा बड़े हाथी घोड़े आदि घड़ी भर में पराये हो जायंगे। हे मनुष्यो! नाम-धाम को झूठा समझ लो, झूठे धंधे में लगे हो। जैसे हवा लगते ही गारे की भींत ढह पड़ती है वैसे ही यह देह गिर पड़ेगी।

३ 'मैं करता हूँ, मैं करता हूं' कहते हुअे बड़े टेढ़े होकर (गर्व से) क्यों चलते हो? दीनों का नाथ ईश्वर पल भर में सीधे को टेढ़ा कर देता है, पृथ्वी और आकाश दोनों काल की डाढ़ों में है। यह साढ़े तीन हाथों की गन्दी काया तुच्छ है।

४ तलवार में (लड़ने में, वीरता में) और देग में (जिमाने में) होशियार रहो, दुनियां को जिमावो और तृप्त करो, मीठे बोलो, ईश्वर को भजो, मन को विशाल बनाये रखो। जनमे थे तब बंधी हुई मुट्ठी लेकर आये थे। खुली मुट्ठी ले चले जाओगे। आढा ओपा कहता है कि मुट्ठी भर-भर अन्न बांटो।

(२) वात विसनी वे-खरच री

१ अेक सहर राजा रो। ते माहे विसनी वे-खरच रहै। सू रोज जंगळ माहे जावै। अर हेक लकड़ी री भारी ले आवै। सू आण सहर माहे टकै आठ वेचै। सू च्यार छोकरा साथै लेवै। ते-नूं पईसो-पईसो देवै। अर धोबीरै जाय कपड़ा भाड़े देवै। तैरा टका दोय दियै। टको अेक राजारै चरवैदारनूं देयनै घोड़ो चढणनूं लेवै। टकै अेकरा पान लियै। अर गुदड़ी री सैल करै। घोड़ै चढै। कपड़ा पै'र अर पान खाय छोकरांनूं मुंह आगै लै, इयैं विध रहै।

२ यों कितरा-अेक दिन हुवा रहतां, अेकै दिन जंगल माहे गयो हंतो लकड़ीनूं, सु कांब अेक आछी सखरी दीठी, सू दांतणरै वास्तै भांज लीवी, तैरो दांतणरो मुठियो अेक वणायो ले आयो।

३ इतरै हेक वणजारो हैवत सहररी पाखती आय उतरियो हंतो, सू जै भांत आप गुदड़ीरी सल रै वास्तै जावै त्योंहज थको दांतण लेअर वणजारै पासै गयो, वणजारै सूं राम-राम कियो, तद बैठा। वणजारै पूछियो—थांहरो नांव कासूं ?

---

१ अेक शहर किसी राजा का था। उसमें व्यसनी बेखर्च रहता था। वह रोज जङ्गल में जाता और लकड़ी का अेक बोझ ले आता। उसे लाकर शहर में आठ टकों में बेचता। फिर वह चार छोकरे साथ में लेता। उनको पैसा-पैसा देता, और धोबी के जाकर कपड़े भाड़े पर लेता जिसके टके दो देता। टका अेक राजा के चाकर को देकर घोड़ा चढ़ने को लेता, अेक टके के पान लेता, और गुदड़ी (बाजार ?) की सैर करता, घोड़े पर चढ़कर कपड़े पहन कर और पान खाकर छोकरों को मुंह आगे लेता (अपने घोड़े के आगे चलाता), इस प्रकार रहता।

२ यों रहते कितने ही दिन हो गये, अेक दिन जङ्गल में गया था लकड़ी के लिअे, सो टहनी अेक अच्छी बढ़िया देखी, उसे दन्तौनों के लिअे तोड़ ली, उसका दंतौनों का अेक मुट्ठा बनाया और ले आया।

३ इतने में अेक हैबत बंजारा शहर के पास आकर उतरा था, सो जिस भांति आप

तद कह्यो—म्हारो नांव विसनी अर वे-खरच, तद विसनी वणजारैनूं पूछियो—कह्यो—थे कठै जासो ? इयै कह्यो—म्हे आगलै सहर जाय बलद ढालसां। तद वणजारैनूं कह्यो—सहररो राजा छै तैरै कुंवरनूं म्हारो मुजरो गुदरायज्या; कहिज्या-विसनी वे-खरचरा दांतण नजर छै,वणजारै कह्यो-भलां।

४ तद परभातै वणजारै कूच कियो। चालिया-चालिया उवै सहर गयो। तद राजारो मुजरो करण गयो। मुजरो कर कुंवर पास गयो, जाय विसनी रो मुजरो गुदरायो, अर कह्यो-राज ! अै दांतण नजर मेल्हिया छै सु लिया। कुंअर वणजारैनूं कह्यो-तू उठै जावै तद अै पांच लाडू छै सू म्हारी तरफ रा विसनी नूं देयी। लाडुवां माहे अेक अेक मोहर घाती, लाडू बंधाय वणजारैनूं सौंपिया।

५-वणजारो फेर कितरै-हेकै दिनै पाछो आयो, तद विसनी नूं खबर हुयी जू वणजारो आयो, तद उव ही भांत हुई वणजारै नुं मिलण गयो वणजारो मिलियो, अर कह्यो-थारा दांतण गुदराया छ, अर तंना पांच लाडू कुंवर मेल्हिया छै।

गुदड़ी की सैर को जाता वैसे ही बना हुआ दंतौनों को लेकर बंजारे के पास गया, बंजारे से राम-राम किया, तब बैठे, बंजारे ने पूछा-आपका नाम क्या ? तब कहा—मेरा नाम व्यसनी बेखर्च, तब व्यसनी ने बंजारे को पूछा, कहा—आप कहां जायेंगे ? इसने कहा—हम अगले शहर में जाकर बैलों को छोड़ेंगे, तब बंजारे से कहा—वहां शहर का राजा है उसके राजकुमार को मेरा मुजरा गुदराना (निवेदन करना), कहना—व्यसनी-वेखर्च के दंतौन भेंट है, बंजारे ने कहा अच्छा।

४ तब दूसरे दिन बंजारे ने कूच किया, चला-चला उस शहर में गया, तब राजा का मुजरा करने गया, मुजरा कर राजकुमार के पास गया, जाकर व्यसनी का मुजरा निवेदन किया और कहा—श्रीमान् ! ये दंतौन भेंट भेजे हैं सो लेवें, राजकुमार ने बंजारे से कहा—तू वहां जावे तब ये पांच लड्डू हैं सो मेरी ओर से व्यसनी को देना, लड्डुओं में अेक-अेक मुहर डाल दी फिर लड्डू बंधवा कर बंजारे को सौंप दिये।

५ बंजारा फिर कितने ही दिनों में पीछा आया, तब व्यसनी को खबर हुई कि बंजारा आया, तब उसी भांति होकर बंजारे से मिलने गया, बंजारा मिला और कहने लगा—तेरे दंतौन भेंट किये और तुझे पांच लड्डू राजकुमार ने भेजे हैं।

६ तद बिसनी फर वणजारैनूं पुछियो-थे वळै कठै जासो ? हैवत वणजारै कह्यो, कंही और राजारो सहर बतायो, कह्यो—उन्नै सहर जान्नां छां। तद बिसनी वणजारैनूं कह्यो—जू थे उन्नै राजानूं म्हारो मुजरो गुदरायज्या, कहिज्या-बिसनी अर बेखरच मुजरो गुदरायो छै, अर अै पांच लाडू छै सो नजर करज्या, वणजारै कह्यो—बो'त भळां।

७ वणजारो उन्नै सहर गयो। तद राजा सूं मुजरो करण गयो। मुजरो कर लाडू था सू नजर किया, कह्यो-महाराज बिसनी अर बे-खरच छै सु तै राज सूं मुजरो गुदरायो छै अर अे लाडू पांचे उन्नै रावळी नजर मेल्हिया छै। राजा लिया अर भागा। देखै तो माहि मोहरां छै तद। राजा परधानां नें पूछियो, कह्यो—म्हे कासूं मेल्हां ? तद परधानां पूछ घोड़ा पांच मेल्हणा किया।

८ तद वणजारो फेर कितरैकं दिनै पाछो उन्नै सहर आयो। तद बिसनी अर बे-खरचनूं खबर हुयी जू वणजारो आयो, तद फेर गुदड़ी सूं फिरियो, तद उन्न हीज लन्नेस थको वणजारै सूं आय मिलियो। तद वणजारै कह्यो—थारा लाडू गुदराया छै, अर पांच घोड़ा मेल्हिया छै, सू लियो। तद बिसनी कह्यो—अ घोड़ा थांरे ही क आज तो बांधो, म्हारै ठौड़ न छै, सुन्नारै ठौड़ कर आय लेयीस।

---

६ तब व्यसनी ने फिर बंजारे से पूछा—आप फिर कहां जाओगे ? हैबत बंजारे ने उत्तर दिया, किसी और राजा के शहर का नाम बताया, कहा—उस शहर को जाते हैं तब व्यसनी ने कहा कि आप उस राजा को मेरा मुजरा निवेदन करना और ये पांच लड्डू है सो नजर करना, बंजारे ने कहा—बहुत अच्छा।

७ बंजारा उस शहर को गया, तब राजा से मुजरा करने गया, मुजरा करके लड्डू थे सो नजर किये, कहा—महाराज ! व्यसनी और बेखर्च है सो उसने श्रीमान् से मुजरा निवेदन कराया है और ये पांचों लड्डू उसने श्रीमान् की भेंट भेजे हैं, राजा ने वे लिये और तोड़े, देखते हैं तो भीतर मुहरें हैं, तब राजा ने मंत्रियोंसे पूछा-कहा—हम क्या भेजें ? तब मंत्रियों से पूछ कर पांच घोड़े भेजना निश्चय किया।

८ तब बंजारा फिर कितने ही दिनोंमें वापिस उस शहर में आया, तब व्यसनी बेखर्च को खबर हुई कि बंजारा आ गया कि तब फिर गुदड़ी से लौटा, तब उसी साज से बंजारे

९ तद परभातै वणजारै पासै उन्नैहीज वेळा लन्नेस कर गयो, तद वणजारैनूं पूछियो—थे फेर कठै जासो ? वणजारै कह्यो जू पातिसाह पासै जायीस, तो विसनी कह्यो—औ घोड़ा पातिसाहजीरी नजर करिज्या।

१० वणजारौ उठां सूं कितरै.हेकै दिनै कूच कर हालियो। सू चालियो-चालियो पातिसाह पासै गयो। जाहरां मुजरो करणनूं गयो वणजारो तद उठै घोड़ा ले गयो, ले जाय पातिसाहजीरी नजर किया, कह्यो—हजरत सलामत! फलाणै सहर माहे विसनी-वेखरच रहै छै, सू तै मुजरो गुदरायो अर औ पांच घोड़ा नजर मेल्हिया छै, सू नजर छै।

११ पातिसाह घोड़ा राखिया अर विसनी नूं माणस मेल्हि बुलाय लियो दीठो, कह्यो—जा, हम तेरे तांई बेटी दीन्नी। पातिसाहजी विसनी नूं परणायो छै। भलो माणस दीठो तद बेटी परणाय दीन्नी छै।

से आकर मिला, तब बंजारे ने कहा—तुम्हारे लड्डू निवेदन किये, और राजा ने पांच घोड़े भेजे हैं, उन्हें लो, तब व्यसनी ने कहा—ये घोड़े आज तो आप ही के यहां बांधिये, मेरे यहां जगह नहीं है, कल जगह करके आकर लूंगा।

९ तब दूसरे दिन बंजारे के पास उसी समय वही साज करके गया, तब बंजारे से पूछा—आप फिर कहां जावेंगे ? बंजारे ने कहा कि बादशाह के पास जावेंगे, तब व्यसनी ने कहा—ये घोड़े बादशाह की भेंट करना।

१० बंजारा वहां से कितने ही दिनों में कूच कर के चला, सो चलता-चलता बादशाह के पास गया, जब बंजारा मुजरा करने को गया तब वहां घोड़े ले गया, ले जाकर बादशाह की भेंट किये, कहा हजरत सलामत! अमुक शहर में व्यसनी बेखर्च रहता है सो उसने मुजरा निवेदन करवाया है और ये पांच घोड़े भेंट भेजे हैं, सो भेंट हैं।

११ बादशाह ने घोड़े रख लिये और व्यसनी को आदमी भेजकर बुला लिया, देखा, कहा—जा, हमने तुझे बेटी दी, बादशाह ने व्यसनी का ब्याह कर दिया, भला मानस देखा, तब बेटी ब्याह दी।

दो पद्यानुकारी कृतियें

[भँवरलाल नाहटा]

मानव की आंतरिक मनोदशा का वास्तविक चित्रण उसकी मातृभाषा द्वारा ही अधिक संभव है, क्योंकि वह प्रारंभकाल से इसी में सोचता समझता और विचारता है। भावों की शृंखला को वह जिसरूप में व्यक्त करता है वह पद्य या गद्यात्मक कृतियों के रूप में उपस्थित करता है। यह तो मानना ही होगा कि जबतक गद्य समुचित रूप से विकशित न हो तब तक पद्य की पूर्व भूमिका तैयार नहीं हो पाती। सुविस्तृत मनोभावों का व्यक्तिकरण यदि अत्यन्त सीमित शब्दों में करना होता है तब स्वाभाविक रूप से पद्य का सहारा लेना ही पड़ता है। पद्य मस्तिष्क में स्थायित्व भी प्राप्त कर लेता है। किसी भी देश या प्रान्त की भाषा और उनके साहित्य की मार्मिकताओं का गहरा अध्ययन करने के लिये गद्य-पद्यात्मक कृतियों का अध्ययन अत्यन्त अनिवार्य है। यद्यपि पद्यापेक्षया गद्य प्रचलित कम हो पाता है क्योंकि गद्य साहित्य स्मरण में कम रहता है जब कि पद्यों की स्मृति शिक्षित समाज ही क्यों निरक्षर शिरोमणियों के कण्ठो में भी परम्परा तक सुरक्षित रह सकी हैं और भविष्य में भी रह सकने में कोई संदेह को स्थान नहीं। परन्तु यह खास करके देखा जाता है कि सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में आज जो आमूल परिवर्तन हुआ है वह बहुत बड़ा है कारण कि पुरातन काल में निर्मित जितना भो साहित्य उपलब्ध है अधिकांशतः पद्य में ही है, गद्य की धारा उन दिनों वह अवश्य रही थी पर पद्यात्मक शैली से प्रभावित—सीमित थी, जब की आज पद्य में भावों का व्यक्तिकरण एक वर्ग विशेषकी वस्तु रह गयी है। यद्यपि मैं साहित्यका बहुत बड़ा मर्मज्ञ तो नहीं हूं पर इतना अवश्य मालूम होता है कि वर्त्तमान विद्वानों में लेखन के पीछे मनन कम हो पाता है, चिन्तन ही व्यापक भावों को एक सीमा में आवद्ध कर सकता है। यह मेरा अनुभव मुझे धोखा न देता हो तो कहना होगा कि वर्त्तमान गद्य विकाश और पद्यावरोध में छन्द ज्ञान का आंशिक अभाव भी यदि प्रधान नहीं पर गौण रूप से भी कारण हो तो असंभव नहीं।

अत्यन्त खेदकी बात है कि आज के संशोधन के युग में भी हिन्दी के विद्वान राजस्थानी भाषा की उपेक्षा किये हुए हैं जो हिन्दी के महल निर्माण में ईंटो का काम देती है। स्पष्ट शब्दों में कहा जाय तो तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी का गद्य पद्यात्मक साहित्य हिन्दी की जड़ को पल्लवित-पुष्पित करता रहा। मुझे यहां पर गद्यात्मक ग्रंथो के उल्लेख की ही विवक्षा है। जैनों ने इस क्षेत्र में आशातीत प्रगति कर भाषा-विज्ञान के मौलिक तत्व संपन्न निधि एकत्र की है। संग्रामसिंह रचित बाल शिक्षा (सं० १३३६) पृथ्वीचंद्र चरित्र (सं०१४७८ में माणिक्यसुंदर सूरि रचित) षडावश्यकबालावबोध[1] (सं०१४११ तरुणप्रभाचार्य कृत) तपा गच्छ गुर्वावली[2] (सं०१४८२) आदि कुछ ग्रंथ प्राचीन गद्य पर प्रकाश डालते हैं एवं कुछ ताड़-पत्रीय पोथियों में भी कुछ नमूने लेखनकाल सहित मिले हैं जिनका लेखन समय —सं०१३३० -१३५८-१३६६-क्रमशः इस प्रकार है। बाद में भी इस धारा का प्रवाह चला जो टबा, बालावबोध आदि के रूपमें मिलता है। चर्चा विषयक ग्रंथ भी लौकिक भाषा में मिलते हैं यद्यपि इन ग्रंथों का चर्चा विषय भले ही जैन क्यों न हो पर भाषा की दृष्टि से इन्हें उपेक्षित वृत्ति से देखना गवेषक बुद्धि से शत्रुता पैदा करना है। मैं यहां पर ऐसी ही दे। प्राचीन गद्यात्मक कृतियें दे रहा हूँ जो विषय और भाषा की दृष्टि से महत्व रखती हैं।

उद्धरित गद्यों में जो "अहोशालक !" शब्द आये हैं वह कुछ खास अर्थ रखते है। बात यह है कि विवाहित व्यक्ति की बौद्धिक परीक्षा अलग अलग ढंग से ली जाती थी। तब वह स्वाभाविक रूप से अपने कुल, राजा, देव, गुरू, कुलदेवी, आदि का वर्णन करता था, असंभव नहीं प्रस्तुतः गद्य भी इसी कारण निर्माण किया गया हो। प्रथम का प्रतिपाद्य विषय यह है कि जेसलमेर में विराजमान खरतरगच्छाचार्य श्री जिनसमुद्रसूरिजी को राव सातलने सम्मानपूर्वक अपनी राजधानी में बुलवाये। राजा का जो परिचय दिया गया है वह महत्वपूर्ण है एवं उस समय राजाओं की

---

१ इसकी सं० १४१२ की लिखित प्रति बीकानेर के वृहद् ज्ञानभंडार में है और कर्त्ता का प्राचीन चित्र—जो वस्त्र पर अंकित है—हमारे संग्रह में है।

२ हमारे संग्रहस्थ मूल प्रति के आधार से भारतीय विद्या भा०-१ अंक २ पृ०३३-४६ में प्रकाशित।

सर्वधर्मसमभाव नीति का परिचय भी मिलता है। सूरिजी का जोधपुर पधारने का समय सं०१५४८ बैशाख मास का है जिसकी प्रति हमारे संग्रह में सुरक्षित हैं।

श्रीजिनसमुद्रसूरिजी—बाहड़मेर निवासी पारख देवासाह की धर्मपत्नी देवल-देवी की कुक्षि से सं० १५०६ में जन्मे, सं० १५२१ में दीक्षित हुए, सं० १५३० (३) माघ शुक्ला १३ के दिन पुंजपुर में जेसलमेर निवासी मठठिया श्रीमाल सं० सोनपाल कारित नंदि महोत्सव से गुरुवर्य्य श्रीजिनचंदसूरिजी ने आचार्य पद देकर स्वपद पर स्थापित किये। इन्होंने पंचनदी की साधना की और सं० १५५५ में अहमदाबाद में स्वर्गवासी हुए।

श्री शान्तिसागरसूरिजी खरतरगच्छ की आद्यपक्षीय शाखा के प्रमुख आचार्य थे। इन्होंने सं० १५५६ ज्ये० शु० ९ के दिन बीकानेर में उपयुक्त श्रीजिनसमुद्र-सूरि के पद पर श्री जिनहंससूरिजी को अभिषिक्त किये इस समय मन्त्रीश्वर कर्मसिंह ने लक्ष पीरोजी मुंद्राएं व्यय की थीं। दुष्काल के समय इनके प्रभाव से वृष्टि हुई थी। सं० १५६६ में इन्होंने अपने शिष्य श्रीजिनदेवसूरिजी को आचार्य पद दिया था।

द्वितीय कृति इन्हीं खरतरगच्छाचार्य श्री शांतिसागरसूरिजी के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालती है साथ ही साथ जोधपुर नरेश की वीरता एवं उदारताका उल्लेख महत्व रखता है। उन दिनों जैनों का राजनैतिक क्षेत्र में जो विकाश था इसकी भी पूर्ति प्रस्तुतः कृति से होती है। उस समय के मानव जीवन की सात्विक कृतियों का अपने देवगुरू के प्रति जो आदर था उसे कितने गौरव पूर्वक स्मरण करने में वे लोग आनंद का अनुभव करते थे, इन कृतियों से वस्तुतः देखा जाय तो राजस्थान की सर्वथा उपेक्षित दिशा पर नवीन प्रकाश पड़ता है। अनुमान होता है कि भावनाओं के वशीभूत होकर साळे-बहनोई में परस्पर सात्विक भाव प्रधान गोष्ठी हुआ करती थीं। संभव है यदि प्राचीन भण्डारों का अधिक अनुशीलन किया जाय या पुरातन गद्यात्मक कृतियें उपलब्ध होती है उनका केवल सामाजिक दृष्टि से ही मनन किया जाय तो निःस्संदेह एतद्विषयक अधिक ज्ञातव्य प्रकाश में आने की संभावना है। हमारे संग्रह में बड़गच्छ की एक ऐसी ही प्राचीन कृति संरक्षित है जिसमें दिल्ली नगर, जैनाचार्य, मंडप, गोत्र, कुलदेवी-सुसाणीमाता आदि का सुंदर वर्णन है।

[१]

रायां वडउ श्री सातल राउ, जिणइ कियउ छइ मोटउ पसाउ।
खरतर तेड़ी हुयउ ज दीधउ, श्री गुरु अणावी जगि जस लीधउ।

अहोशालक

तेरह साख राठउड़ां -तणी कहीजइ। तेह मांहि मोटउ श्री राठउड़ी रायां मांहि वडउ राउ श्री सातल, जिणइ मालविया सुरताणतणउ दळ, भांजी कीधउ तल्ल। खुदाइ-खुदाइ तोब तोब करतउ नाठउ, जातउ घणउ घाठउ, माल्हा ला हिरण तणी परि त्राठउ। घणी गाल्हइ घाली बंदि छोडावी, रेख रहावी, खांडइ जइत्र अणावी नव कोटी मारुयाड़ि भली मल्हावी। मोटउ साहस कीधउ, बडउ पवाडउ पसीधउ, बंदी छोडावी तउ इग्यारस तणउ पारणउ कीधउ। दिन दातार, रिण झूझार। वाचा अविचळ, कोट कटक धन सबळ। धूहड़िआ माल जगमाल वीरम चउंडा रिणमल कुळमंडण, श्रीयोधरायां नंदण। हाडो जसमादे राणी कूखि अवतार, यादव श्री वयरसल्लतणी धूइ श्री फूलां राणी तणउ भरतार। नवकोटी मारुयाड़ि-तणउ नाइक, मँडोवर देस सुखदाइक। प्रतापी प्रचंड, आण अखंड। राजाधिराज, सारइ सर्व काज।

इसउ-अेक अम्हारउ ठाकुर श्री सातल-राउ, श्री खरतर संघ तेड़ी कीधउ पसाउ हिव विहला थाउ, वार म लाउ। आपणा गुरु गुणवंत श्री जिनसमुद्रसूरि याणउ, तरळ तुखार तेजी तुरंगम पलाणउ। जेड म जंडउ भली विहल खेड़उ, वारु करह पलाणहु।

राजाओं में राव सातल महान् है, जिसने महती कृपा पूर्वक खरतर गच्छ वालों को बुलाकर हुक्म दिया, गुरु श्री को बुलाकर जगत में यश का भागी हुआ।

अहो शालक! राठौड़ों की तेरह शाखाएं कहलाती हैं। उनमें प्रधान श्री राठौड़ और राजाओं में महान् सातल राव हैं। जिसने मालवा के सुलतान के दल को भग्न कर नष्ट किया। खुदा! खुदा! तोवा, तोवा! करते भग कर जाते हुए बहुत दुखी हुआ। शिकारी द्वारा आक्रमित मृग की भाँति त्रस्त हुआ। उनके गाले में रोके हुए प्रचुर बंदी छुडाए, रेख रखी, तलवार के बल विजय प्राप्त कर नवकोटी मारवाड़ को खूब आनन्दित किया। जबरदस्त साहस किया, बड़ी कीर्ति फैली-प्रसिद्ध हुई। बंदियों को

ते थी राणी भटियाणी बोल वचन दीधा, घणा उद्यम कीधा, जग मांहे जस लीधा, वळि परोहित दामाउत्र फळापुत्र मेळागर सधर त्रागाळा साथि दीधा, वळि साथइ खत्री वर वीर, भला, सांखुला; रूड़ा राठउड़; भाटी सार, पमार, चखुड़ा चहुमाण, ईंदा घणउ सुजाण।

हिव महाजन सजन प्रधान पारिख देव्र गुरु राजि काजि खड़ा, तड़ा, चोपड़ा; निहुट नाहटा' थुल्ल घोरवाड़, वाफणा, अविचल आपणा; तातहड़, लूकड़; संखवाळेचा, घाड़ीवाहा; टाटिया, घणा पुण्य खाटिया; बरड़िया नवलखा डोसी कांकरिया राजहंस लूणिया भणसाळी माल्हू सेठि राखेचा छाजहड़ खथड़ा सांडं साख, चोथरा खरा, गणधर कटारिया रोहड़ भाटिया दूरड़ा डागा गोळवछा लोढा भंडारी कोठारी मुंहता सेलहथ्थ बोहरा प्रमुख ओसवाळ श्रीमाळ महुत्तियाण, सर्व मिळी, मन -तणी रळी। श्रीजेसळमेर नगर हुंतां रावळ श्री

छुड़ा कर एकादशी व्रत का पारणा किया। प्रतिदिन दाता, समराङ्गण का योद्धा, वचनों का सच्चा, दुर्ग-सेना और द्रव्य से सबल है। राव धूहड़ के वंशज माल, जगमाल, वीरम चूंडा, रिणमल का कुलमंडण श्री जोधा राव का अङ्गज हाडीराणी जसमांदे की कुक्षि से अवतरित, यादव-भाटी (रावल) श्री वैरीसाल की पुत्री फूलां राणी का प्रियतम, नवकोटि मारवाड़ का अधिनायक, मण्डोवर देश को सुखदायक, प्रचण्ड प्रतापी और अखण्ड आज्ञा वाले राजाधिराज समस्त कार्यों को सिद्ध करते हैं।

ऐसे एकमात्र हमारे ठाकुर श्री सातल राव हैं, जिन्होंने कृपापूर्वक श्री खरतर गच्छीय संघ को निमंत्रित कर कहा—अब उतावले हो! विलम्ब मत करो! अपने गुणवान् गुरु श्रीजिनसमुद्रसूरि को बुला लाओ, तेजी और चपल घोड़ों पर पलाण (काठी) सजाओ; जोड़ी वाले भले बैलों को जोड़ कर अच्छी वेहली चलाओ, श्रेष्ठ जाति के ऊंटों को पलाणो।

इससे राणी भटियाणी ने वचन दिया, बहुत परिश्रम किया, जगत में यशोपार्जित किया। और दामावत पुरोहित फला पुत्र मेलागर, सधर त्रागाला (?) साथ दिये और साथ में क्षत्रिय वीरवर श्रेष्ट सांखले, रूड़े राठौड़, भाटी, पंवार, चावड़ा, चौहान, इंदा (पड़िहार) आदि दिये जो सुज्ञ-विज्ञ थे।

अब सजन महाजनों में प्रधान पारख, देव गुरु और राज काज में तत्पर चोपड़ा,

देवीदास अहंकारदे राणी उरि हंस जेह -तणइ समरागर चोपड़उ वडो मंत्रीस सहु-को करइ प्रसंस। इसउ राउळ श्रीदेवीदास वीनवी श्रीसंघ मनावी संवत पनर अठताळइ वैसाखि मासि भलइ पाखि भलइ वारि भलइ महुरति श्री जिन-समुद्र-सूरि गुरु आणिया, जगि जाणिया।

पहिलउ दामा-पुरोहित तणी नगरी श्री तिमरी आविया, पइसारा मोटइ मँडाण कराविया जांगी ढोल झालरि संखि वादित्र वजाविया, बिहुं पासे पटकूल तणा नेजा लहकाविया, पगि-पगि खेळा नचाविया, तणिया तोरण बंधाविया। गीत-गान कीधा पून कळस सूहव सिरि दीधा, भला मंगळिक कीधा। घरि-घरि गूडी ऊछळी, श्री संघ तणी पुगी रळी। दाहोतरसौ वरसां तणी कांण भागी, पुण्य तणी वेली वाधिवा लागी। सबे.... का भेळउ हुयउ।

अभंग जोड़ी वडा बँधव श्री सूजा सहित राउल सातल वर्णवितउ सोभइ

निश्चल नाहटा, शुक्ल, बोरवाड़, आपे में अविचल बाफणा, तातेड़, लूंकड़, सखवालेचा, धाड़ीवाहा अति पुण्यवान टाटिया, वरढिया, नवलखा, डोसी, काकरिया, राजहंस-लूणिया, भणसाली, माल्हू, सेठी, राखेचा, छाजेड़, खुथड़ा, सावंछखा, बोथरा, गणधर, कटारिया रीहड़, भाटिया, दरड़ा, डागा गोलछा, लोढ़ा, भंडारी, कोठारी, मुहता, सेलत्थ, बोहरा आदि ओसवाल, श्रीमाल, महत्तिआण सब लोग उत्साह पूर्वक मिले। श्री जेसलमेर नगर में राणी अहंकार देवी के सुपुत्र रावल श्री देवीदास—जिनके लोक प्रशंसित चोपडा वंशीय मंत्रीश्वर समरागर प्रधान थे—को निवेदन कर तत्रस्थ संघ को मनाकर वि० सं० १५५८ बैशाख महीने में शुभवार मुहुर्त में विश्वविश्रुत गुरुवर्य श्रीजिनसमुद्र सूरि जी को लाये।

पहिले दामा पुरोहित की नगरी श्रीतिमरी में आये। बड़े समारोह पूर्वक प्रवेशोत्सव हुआ, विशाल जंगी—ढोल, झालर, संख, वाजित्र वजाये, उभय पक्षमें वस्त्र सज्जित नेजे चमकाये, पग पग पर नाटक-नृत्य खेल करवाये गये।

तणी तोरण बांधे गये, गीतगानहुए, सधवास्त्रियों के मस्तकोपरि पूर्ण कलश दिये, उत्तम मंगलिक किये। घर घर पताकाएं फहराने लगीं। श्रीसंघ के मनोरथ पूर्ण हुए। ११० वर्ष की काण भांगी। पुण्यवल्ली बृद्धिगत होने लगी। सब ••••••के एकत्र हुए।

ज्येष्ठ बन्धु श्री सूजा के साथ राउल सातल वर्णन किये जाते सुशोभित हैं।

[२]

सेव्रामहे श्री-गुरु-शान्ति सागरम् ।
प्रबोधिता ऽशेष-सुरेश- नागरम् ॥
दोसी- कुळांभोरुह- वासरेश्वरम् ।
वचः-कळा- रंजित-मानवेश्वरम् ॥

अहोसालक !

अम्हारा गुरु खरतर-गच्छ-नायक, आनंद-दायक, श्री शांतिसागर सूरि वर्णिता सांमळि। किसा-अेक ते गुरु ? जोधपुर इसइ नामि करी महा-स्थान अभिनव-देव-लोक समान । रिद्धि-तणउ निधांन, धनवंत लोके करी प्रधान । तिहां ''''रायांराय जोधराय मल्हार कमधज-कुळ-शृंगार -सार रूपि करी इंद्रावतार श्री सूर्यमल्लराय उदार । तेह-कइ जयवंतउ श्रीवाघउ कुमार धरतउ चउरासियां-नापरिवार वांका वीर पधारणहार, छत्रीस दंडायुध फोरवइ अपार संग्रामांगणि जय तूआर । जेह-नइ मूझार अनेक अनेक असवार । दीसइ चउंडा-पोत्रा नापरिवार । तेह नइ राजि, मोटइ काजि; जाणिता, पराणिता, लोके वखाणिता, संघवी श्री जिणराज ठाकुर । गुण-तणा आकर, करणी कुबेर, धीरिमि मेर ।

तीअे आपणा गुरु मेड़ितइ अडपळया आणी मोटा साहस आणी अमिय समाणी माधुरी वाणि, इणि परि वीनव्या —श्रीकर्णराइ रिणमल्लाणी, तइं कंपाव्या सेन सुरताणी । तइं हंस-नइ परि निवेड्या दूध नइ पाणी, मूंकाव्यो गुरु करि कहाणी । अे वात सांभळी हरख्या श्रीकर्ण, अधिकउ अधिकउ लहतउ वर्ण, जिसउ हुवइ सुरहउ साठ सोलू सुवर्ण, जाणे करि दान मुणि उदयउ अभिनव कर्ण । पहिली परीछइ लोक नी चासमास, जाणइ गुरु रह्या मेड़तइ चउदह मास । पाम्यउ उल्लास, लोक-नइ ऊपजावइ वेसास छोडावा-नी आणइ आस, दूरि करइ उपहास ।

अहो सालक ! हमारे गुरु खरतरगच्छ नायक आनंद प्रदायक श्री शांतिसागरसूरि जी का वर्णन सुनो ! कैसे हैं वे गुरु ? नूतन स्वर्गपुरी के सदृश जोधपुर नामक महानगर है । रिद्धि का खजाना और धनिक लोगों का प्राधान्य है । वहां राजाधिराज जोधा का पुत्र कमधजवंश मंडन, रूप में इन्द्र जैसा, राजा श्री सूर्यमल बड़ा दयालु है । विजयी श्री बाघा कुमार उसके राजकुमार हैं जिसके ८४ (राणियों ?) का परिवार है । जिसके अनेकों बांके वीर छत्तीस दण्डायुध कलास्फुरित रणाङ्गण विजेता योद्धा-सवार हैं । राव चूंडा के पोतों का परिवार प्रदर्शित है । उसके राज्य में उच्चपद प्रतिष्ठित, ज्ञानवान, प्रामाणिक, लोक प्रशंसित संघपति ठाकुर जिणराज गुणों का भंडार, संग्रह करने में कुवेर और धैर्य में सुमेरु के सदृश है ।

मांड्यउ रूड़उ उपाय, भलउ मनाव्यउ संघ समुदाय। इम वीनव्यउ श्री दूदउ राइ, ताहरउ पसरयउ जगि जस-वाइ, तउं उदयउ सुर-तरु-सछाय। नव पल्लव काय। तउं हींदुअउ सुरताण, ताहरउ अचूक बाण, तइं मोड़्या मूंछाळा वीर माण, तइं मनाव्या मीरमलिक आण, तइं भांज्या वइरी-प्राण, तउं राठउड़ां मांहि आगेवाण तउं आपइ करह-केकाण, तइं पजाया पठाण, तइं छुडाव्या तोरक्का वंदीवाण, तइं फेड़्या मयणां ना ठाण, तइं लीधा सइंभरि-ना दाण, तइं नमाव्या कछवाह-निरवाण, तइं कंपाव्या ऊच मुलताण। आपइणी आपणइ होयडइ जागि चार चवाडह तणं वचने म लागि, हंस तणा गुण न लहसि कागि, गुरु कन्हा दंड म मागि, तउं मोटउ हूयउ अम्हारइ भागि, साम न लागइ सोनइ नइ सागि, तउं चडियउ मोटइ सोभागि, तइं सीमाड़ा कीधा झाड़ि झाड़ि, अम्हे छउ तुम्हारी वाड़ि, अम्ह नइ हाथ थकी म छाड़ि, पुरि अम्हारी रहाड़ि, घणउ भली भवाड़ि, अं नवकोटी मारुआड़ि, श्री संघ-नी माम म पाड़ि, गुरु अडखली लाज म लगाड़ि, अम्हे पइखउ तुम्हारा आदेश आड़ि।

इसी परि श्रीकर्ण दूदा आगलि जाई, हरखित थाई रूड़ी बुद्धि ऊपाई, कहवा लागउ लाई, अम्हे ताहरा ज साई, राखि, अम्हां-सउं सगाई, आचारिज उरहो आपि। रिसि-वर म संतापि, अम्ह नइं मोटा करि थापि, सकल श्रावक-नी आरति कापि।

उसने अपने गुरु को सम्मान पूर्वक मेड़ता बुलाये। बड़े साहस के साथ अमृत तुल्य मधुरवाणी से इस प्रकार निवेदन किया—हे रिणमल के नंदन श्री कर्णराय! तुमने सुलतान की सेना को कम्पित किया, हंसवत् क्षीर नीर का निवेड़ा किया। गुरु को छुड़ाकर बात रखी! यह बात सुन श्रीकर्ण सुहागा के संग से अधिक निखरे वर्ण वाले साढे सोलह आनी स्वर्ण के सदृश हर्षित हुए, मानो नया कर्ण दानी उदित हुआ हो! पहिले लोगों का वासवास (वस्तु स्थिति) परीक्षा की, गुरु मेड़ता में १४ मास रहे आनंदोल्लास पाया लोगों में विश्वास उत्पन्न किया, उपहास निराकृत कर छुड़ाने की आशा की (?) श्रेष्ठ उपाय किया, संघ समुदाय को मनाया; राव दूदासे इस प्रकार प्रार्थना की—तुम्हारा यशोवाद प्रसरित हुआ, तुम छायादार कल्पतरु उत्पन्न हुए, नवपल्लवित शरीरवाले हिन्दुओं के सुलतान तुम्हारा बाण अमोघ है, तुमने मूंछों वाले वीरों का मान मर्दन किया, तुमने मीर मल्लिकों से आण मनायी तुमने शत्रुओं के प्राण नष्ट किये, तुम राठौड़ों में अग्रगण्य हो, तुम घोड़ा—ऊंट दान करते हो, तुमने पठानों को खूब छकाया, तुमने तुरकों के बन्दीवानों

इम कही कहावी, दूजणसल्ल रङ्ग मनावी, गुरु छोडावी, सोह लहावी रेह रहावी, गुरु आणतां पगि-पगि पइसारो कीजइ, पान तंबोल दान दीजइ, सुजस लहीजइ, सोभाग लीजइ, मांगता संतोखीजइ, क्रमि-क्रमि जोध-नयर ढूकड़ा गुरु अणाव्या, सं० जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बंधाव्या, वंदरवालि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वांदिवा आव्या, कुण-ही जोतरया वहिलइ कलहोड़ा, कुण ही पल्लाण्या आसण होड़ा, केइ करहि चडी थइ दह दिसि द्रोड़ा, केई मुखि माणइ तंबोल-लवंग-डोडा। अधिकी अधिकेरी, द्रमको मदन-भेरी, घुमघमी नफेरी, मेलावे रूपी सेरो, सूड़ी-नी परि इं गाढी रूड़ी दीसइ ऊंची ऊही आकासि गूड़ी।

मिळिया ओसवाल, श्रीमाळ, ढिल्लीवाळ, खंडेलवाळ, गुजराती, मेवाती, जेसळमेरा, अजमेरा, भटनेरा, सिंधू बहुतेरा, गोढवाड़ा, मेवाड़ा, मारुआड़ा, महेवेचा, कोटड़ेचा, पाटणेचा, मांड्या सोवन पाट, धवळया मंदिर हाट, फूल

को मुक्त कराये, तुमने मीनों के अड्डे को नष्ट किया, तुमने साँभर की जकातली, तुमने कछवाहा और निरवाण सरदारों को नमाये। उच्चनगर और मुलतान को कम्पित किया, अपने आप हृदय से जागो ? चुगल लबाड़ों के कथन पर मत चलो, हंस के गुण कौओ में नही मिलते, गुरु के पास दण्ड मत मांगो, तुम हमारे भाग्यसे बड़े हुए हो, सोने को काट नहीं लगाता, तुम बड़े सौभाग्य से उन्नत हुए हो, तुनने सीमाओंपर झाड़ी ही झाड़ किये है—हम तुम्हारी बाड (रक्षक या वाटिका) हैं, हमें हाथसे मत छोड़ो (गवांओ) हमारे मनोरथ पूर्ण करो, वहुत अच्छा.........यह नवकोटि मारवाड़ है श्री संघ की भावना को मत गिराओ, गुरु को अटका (?) करकलंक मत लगाओ, हम तुम्हारे आदेश का विरोध करते हैं।

इस प्रकार श्री कर्ण दूदा के सम्मुख सहर्ष जाकर उत्पन्न सद्बुद्धि से कहने लगा-हम तुम्हारा ही खाते हैं, हमारे साथ सम्बन्ध रखो, आचार्य को इधर सौंपो, ऋषिराज को कष्ट मत दो, हमारा सगान रखो, समस्त श्रावकों की चिन्ता दूर करो।

इस प्रकार कह सुन कर दूजणसल्ल ? (दूदा) को अच्छी तरह मनाया, गुरु को छुड़ाये, शोभा पायी, रेख रखी। गुरू को लाते हुए पग पग प्रवेशोत्सव किया, पान सुपारी बांट कर सुयश सौभाग्य लिया, याचकों को सन्तुष्ट किया। क्रमशः जोधपुर के निकट गुरु श्री को लाये। सं० जिणराज ठाकुर ने प्रवेशोत्सव कराया, तणी तोरण बंधाये गये, स्थान स्थान पर बंदरवालें सुशोभित की। व्यापारी लोग वंदन करने इसप्रकार

विखेरया वाट, अेकन हुआ महाजन-तणा थाट, हमक्या ढोल-नीसाण, ऊमटिया खरतर-ना खुरसाण, ऊछव करइ जिणराज ठाकुर सुजाण। वाजिवा लागा तूर, ऊपना आणंद-पूर, भट्ट थट्ट लहइं कूर कपूर; याचक आपइ आसीस लहइं बोल बंभीस, न करइ लगाइ रीस, पूगी मनह जगीस, पूत कळस ले नारी आवइ, धवळ-मंगळ गावइ, मोतिअे गुरु वधावइ, ऊपरि अति बहुमूल, ऊतारइ सोवन-फूल, ऊछाळइ चाउळ, फूआ वेळाउल, जाणिवा लागा राउल, जिसा गयणि गाजइ बादल, तिसा रळी रळी रणकइ मादल, चउपट चउसाल बाजइ ताळ कंसाल।

इणि परि आव्या श्रीगुरु जोधपुर नगरि निवासि, आपणइसासिकासि पुण्य-तणइ प्रकासि, गुरु रहिण लागा सुखि चउमासि। अहोसालक इसा-अेक अम्हारा गुरु वर्णाता सदा सोहइ।

सामने आये—किसीने वहली के कल्होड़िये (बैल) जोड़े, किसी ने शुद्ध स्पर्द्धा पूर्वक आसण पलाणे, कई लोग ऊटों पर चढ़कर दसो दिश दौड़ लगाने लगे। कई लोग मुख से खूब पान सुपारी, लौंग, इलायचीं, आदि चबाने लगे। भेरी-वाजित्र धमकने लगी, नफेरी का धम धमाट गूंजने लगा, लोगों के जमाव से बीथिकाएं आरुद्ध हो गयी। तोते की तरह आकाश में उड़तीहुई पताकाएं बहुत भली मालूम देती थी।

ओसवाल, श्रीमाल, दिल्लीवाल, गुजराती, मेवाती, जेसलमेरी, अजमेरी, भटनेरा, सिंधुदेशीय, गोढवाली, मेवाड़ी; महेवेचा, कोटड़ेचा, पाटणेचा, लोग मिले। सुनहरे पाटे विछे, मंदिर -मकानों और हाटों की पुताई हुई, रास्ते में पुष्प विखेरे गये। महाजनों का झुण्ड मिला, ढोल निसाण वजे, खरतरों का सितारा चमका। सुज्ञानी जिणराज ठाकुर उत्सव करता है। तूर-वाजित्र वजने लगे, आनंद की लहरें छा गयीं, भट्टगण कर्पूरादि से सम्मानित हुए। याचक लोग आशीर्वाद देते थे। ....कोई कष्ट नहीं होता। मनकी आशाफली, मस्तकोपरि पूर्ण कलश लेकर स्त्रियें आती है, और धवल मंगल-गीत गाती हैं, गुरु जी को मोतियों से वधाती हैं, बहुमूल्य स्वर्णफूल उतारती हैं, अक्षत उछालती हैं ....राजभवन पर्यन्त कीर्ति विस्तृत हुये। गर्जित मेघ वत् आकाश मे वादलों का घौंकार गूंजता था, ताल कंसाल की ध्वनि चतुर्दिग् व्याप्त थी। इस प्रकार श्री जोधपुर नगर निवास आये। सुखसमाधि-पूर्वक अपने पुण्य के प्रकाश से गुरुदेव सुखसे चातुर्मास विताने लगे। अहोसालक! हमारे ऐसे गुरु वर्णन करते सदा सुशोभित हैं।

राजस्थानी लोक-साहित्य

लोक-गीत

(१)

दाम्पत्य प्रेमके गीत

चांदा ! थारी चानणी सी रात
 चांदे रै चानणियै ढोलो अन्नियोजी राज

ऊभी धण डागलिया पर जाय
 खड़ी अे निहारै मारग स्याम रो जी राज

कांकड़ वड़तां गाज्यो मारू जी रो ऊंट
 जद रे पिछाणी बोली ऊंट री जी राज

फड़की फड़की डाव़ी धणरी आंख
 हरख्यो हरख्यो मारूणी रो जिव़ड़ो जी राज

गोव़ै वड़तां दीसो मारू जी री पाग
 पाग पिछाणी धण केसरया जी राज

जद आयो ढोलो फलसै रै बार
 जद अे पिछाणी सूरत सांव़ळी जी राज

खुड़क्या खुड़क्या पोळी रा किव़ाड़
 टग टग धण डागळिये सूं उतरी जी राज

---

१ हे चंद्र ! तेरी उजियाली सी रात में चंद्र की चांदनी में प्रिय आया प्रिया छतपर जाकर खड़ी थी, खड़ी खड़ी वह स्वामीका मार्ग देखती थी।सीमामें प्रवेश करते ही प्रियका ऊंट गरजा तब उंट की बोली पहचान ली प्रियाकी बांयी आंख फड़की। उसका जी हर्षित हर्षित हो गया। ग्वाड़में प्रवेश करते ही प्रियकी पगड़ी दिखायी दी। प्रिया ने उस केशरिया रंग की पगड़ी को पहचान लिया जब ढोला फलसें पर आया तब प्रियाने

खोल्या खोल्यो पोळीरा किंवाड़
पूठ फोर धण वा खड़ी जी राज

बोल्यो बोल्यो ढोळो मीठा सा बोल
कुण रे खिझायी म्हां री गोरड़ी जी राज १

(२)

म्हे रावळ सूं नांय बोलां
नांय बोलां, मुख नांय बोला
म्हे रावल सूं नांय बोलां

पखवाड़ा रो कोल कर्‌या छो
छै मी'ना सूं आया ढोला
म्हे रावळ सूं नांय बोलां

जद थे राय रसोयां आस्यो
म्हे उठ बा'यर जास्यां
म्हे रावळ सूं नांय बोलां

जद रावल थे मेल्यां आस्यो
लाल किंवाड़ी जड़ लेस्यां
म्हे रावळ सूं नांय बोलां

उसकी सांवली सूरतको पहचान लिया पौरी के किवाड़ खट खट कर उठे तब प्रिया टग टग करती हुई छत से उतरी उसने पौरी के किंवाड़ खोले और पीठ देकर खड़ी होगयी। तब प्रिय मीठे-से वचन बोला मेरी गोरी को किसने खिझा दिया है !

२ हम राजासे नहीं बोलेंगी। नहीं बोलेंगी अपने मुखसे नहीं बोलेंगी, हम राजासे नहीं बोलेंगी। हे प्रिय! तुमने पखवाड़ेका वचन दिया था पर छै महीनोंसे आये हम राजासे नहीं बोलेंगी। जब तुम राजसी रसोईमें आओगे, हम उठकर बाहर चलदेंगी। जब तुम महलमें आओगे, हम लाल किंवाड़ को बंद कर लेंगी जब राजा हमारी सेज पर आवेगा,

जद ढोलो म्हांरी सेजां आसी
घूंघट रा पट नांय खोलां
म्हे रावळ सूं नांय बोलां

नांय बोलां, मुख नांय बोलां
म्हे मन भरिया सूं नांय बोलां

(३)

के गुण प्यारी जी, ढोला ! गोरड़ी,

मा-बाप छोड्या अे मरवण झूरता
रोवतड़ा छोड्या भाई भैण

म्हां री सुगणी सैणां इसड़ां गुण प्यारी अक म्हांरीगोरड़ी
के गुण प्यारी जी ढोला ! गोरड़ी !

भावजड़ी छोडी घूंघट सुबकती
छोड्यो सहेल्यां रो सारो साथ

म्हांरी सुगणी सैणां इसड़ां गुण प्यारी अक म्हारी गोरड़ी
के गुण प्यारी जी, ढोला ! गोरड़ी !

हम घूंघट का पट नहीं खोलेंगी। हम राजासे नहीं बोलेंगी नहीं बोलेंगी, मुखसे नहीं बोलेंगी, । हम मनभावते से नहीं बोलेंगी।

३ हे प्रिय ! गोरी किस गुणके कारण तुम्हें प्यारी है !

गोरी ने बिलखते हुअे मां-बाप को छोड़ दिया, रोते हुअे भाई - बहनोंको छोड़ दिया, घूंघट में सिसकती हुई भौजी को छोड़ दिया और छोड़ दिया सहेलियोंका सारा साथ; मेरी सुहावने गुणोंवाली गोरी इन गुणों के कारण मुझे प्यारी है।

(४)

था री मरवण, ढोला ! के लागी ?
के लागी जी, ढोला ! के लागी ?
था री मरवण, ढोला ! के लागी ?

म्हारा सुसरो जी री मैना, म्हारी सासू जी री कोयलड़ी
म्हारा साळां री भैनड़ लागी ।
थारी मरवण, ढोला ! के लागी ?

म्हारा बावो सा' री वन्नड़िया, म्हारी माऊजी री वन्नड़िया
म्हारी बैनड़- भायां री भावजड़ी लागी
थारी मरवण, ढोला ! के लागी ?

म्हारा घर-केरी लोय, आंगणियां री सोभा
म्हारी चंदावदनि धण लागी ।
थारी मरवण, ढोला ! के लागी ?

---

४ हे प्रिय ! तुम्हारी प्रिया क्या लगी ?

मेरे ससुरजी की मैना, मेरी सासजी की कोयलिया और मेरे सालों की बहन लगी मेरे पिताजी की कुल बहू मेरी माताजी की बहुरिया और मेरे बहन-भाइयों की भौजी लगी। मेरे घर की ज्योति, मेरे आंगन की शोभा और मेरी चंद्रवदनी पत्नी लगी ।

हे प्रिय ! तुम्हारी प्रिया क्या लगी ?

(५)

मैं कंइयां जगाऊं, काची नींदां में सूतो सायबो ।

नणदल कस्यो रसोवड़ो स रे, पुरस्यो सोवन थाळ
भावज ! भेजो म्हारा वीर नै, भोजन की वेल्यांजाय
अेजी मैं कंइयां जगाऊं, काची नींदां में सूतो सायबो

सासू जी दूध सिळाइयो स रे, भर्‍यो कटोरै दूध
दूध ज ठंडो होय रयो, वहू ! वेग जगाज्यो म्हारो पूत
अेजी मैं कंइयां जगाऊं, काची नींदांमें सूतो सायबो

देवर ऊभो चौकमें स रे, लीलां लिया पिलाण
भावज ! भेजो म्हारा वीरनै, हैलां नै होय अंवार
अेजी मैं कंइयां जगाऊं, काची नींदों में सूतो सायबो

---

५ मैं कैसे जगाऊं ? प्रिय कच्ची नींद में सोया है ।

ननदने रसोई बनायी और सोनेका थाल परोसा मुझसे कहा - हे भौजी मेरे भैयाको भेजो भोजनकी बेला बीत रही है । अजी मै कैसे जगाऊं ! प्रिय कच्ची नींद में सोया है ।

सासजीने दूध ठंढा किया और कटोरे में दूध भर दिया मुझसे कहा-बहू दूध ठंढा हो रहा है । मेरे बेटे को जल्दी जगाओ अजी मैं कैसे जगाऊं प्रिय कच्ची नींदमें सोया है ।

देवर आंगन में खड़ा है, घोड़े पर जीन कर रखी हैं । मुझसे कहता है -भौजी ! मेरे भैयाको भेजो देरको देर हो रही है अजी मैं कैसे जगाऊं प्रिय कच्ची नींदमें सोया है ।

नवीन राजस्थानी साहित्य

पारीकजी !

[गणपति स्वामी]

[अेकरसूं अमराणै पूठौ आव़—इण लोकगीतरी ढाळमें]

रे साहित्य-तपस्वी ! अेकरसूं मुरधर पूठो आव़ ।
रे मुरधररा मोभी ! अेकरसूँ बीकाणै पाछो आव़ ।

सूतो मुरधर जागव़ियो तैं
रे मारग दियो रे दिखाय
हाथ पकड़ ऊभो कियो रे
डूबतड़ी नौका ली वंचाय ।

रे मुरधररा मांझी ! पार तो लगाव़णनै पूठो आव़ ।

इण फोगाँरी वाळी अे कव़िता
तैं जगमें दिव़ी चमकाय
इण फोगांरी राग-रागणी तूं
घर-घर गयो रे गव़ाय ।

रे फोगांरा वासी ! अेकरसूं फोगां में पाछौ आव़ ।

जिण मुरधर पर जीतो-मरतो
तूं करतो घणो अभमान
छिनमें छोड सुरग जा बैठ्यो
ओ किणनै सूंप्यो तैं भार ?

रे मुरधररा नाहर ! अेकरसूं बड़ूकण धोरांमें आव़ ।

मुर-धर-केरो 'सूरज' छिपग्यो
आ हुयगी अंधारी रात
घोर अंधारो च्यारां पासी
चौ दिस हा हा कार ।

रे मुरधररा सूरज ! मुरधर उणमण, पाछो आव़ ।

मोटा-मोटा हा मनसूबा
ही मोटी-मोटी घण आस
सै-री-सै संग थारै गयी रे
मुरधर भयो रे निरास—

रे मुरधररा वाला ! आसड़ली पूरण पूठो आव़ ।

कुण सांचरै बै गीत राजरा
कुण सांचरै बै वात ?
कुण दरसाव़ै वो मुरधररो
प्राण- भर्‌यो इतिहास ?

रे मुरधररा मोभी ! अेकरसूँ मुरधर पाछो आव़ ।

रोड़ी, पाथर और वेकळू
कोइ, मुरधर ! थारै भाग
लाल लिलाड़ी ना लिखी
कोइ क्यूं रोव़ै, निरभाग !

रे मुरधररा मोती ! मुरधर विलखै, पूठो आव़ ।

हिव़ड़ो डाट्यो ना डटै
कोइ, रोक्यो रुकंय न रोज
मा-बेटांरो अमर विछोड़ो
मरम --- थळीरी चोट—

रे मुरधररा जाया ! मुरधर हेला दै, पाछो आव़ ।

मुरधर ! थारा बै दिन वीत्या
अर वीती बै घड़ियां
थारै लालरै खांधै थारी
रैती कावड़ियां

पारिकजी

रे मुरधररा सरव़ण ! मुरधर कुरळाव़ै, पूठो आव़ ।

ले चाली मुरधररै धन नै
आ काळमुंही सिव़-रात
कै गत आयी देस में
कै आव़त लायी साथ.

रे मुरधररा उजाळा ! अेकरसूं मुरधर पाछो आव़ ।

मुरधर जुग-जुग रोव़सी
ओ कदेय न भरसी घाव़
समद-बुझायी कोन्यां बुझसी
आ हिव़डैरी लाय.

रे मुरधररा माणी ! अेकरसूँ मुरधर पूठो आव़ ।

हिवड़ैरी वातां

[श्री रतनलाल जोशी]

धरती तड़पी विरहसूं, वधी[1] पुराणी पीड़ ।
वादळरो हिवड़ो हिल्यो, वरस्यो झरझर नीर ॥१॥

आभै[2] तिमिर ज छावियो, मारग बीहड़ घोर ।
वीजळरै परगास में आस्यूं तेरी ओर ॥२॥

आंधीसूं टीवा उड्या, पींपळ बोल्या मोर ।
सूता माणस जागिया, हिवड़ै उठी हिलोर ॥३॥

ऊंची चढगी तावड़ी,[3] पंछी उड्यो आकास ।
नीचै देख्यां कांपग्यो, टूटी मनरी आस ॥४॥

जगमें रूप सरूप[4] देख्यां माणस भरमियो ।
हिवड़ै रूप अनूप जोवै[5] क्यों ना, मूढ ! तूं ॥५॥

दो भाई लड़-लड़ मरग्या, रोय उठ्यो आकास ।
हरिया अंबर[6] धार कर धरती छोडै सांस ॥६॥

ईंधणसूं लपटां उठी, साथी दोना रोय ।
पंथी परलोकां चल्यौ, इब[7] रोयां के होय ? ॥७॥

---

१ बढ़ी २ आकाशमें ३ धूप ४ सुंदर ५ देखता है ६ वस्त्र ७ अब

दो बातां

(१)

अन्तर्जामी !

[श्री मुरलीधर व्यास]

लुगाई—थांरै लारै आर कांई सुख पायो ?
माईत—घाघरैरो ढेरो बणग्यो, बेटा !
संतान—म्हांरो थां कांई कियो ?

मिनख विलखो मूंढो कर' र अेकरसी-अेकरसी सगळां सामो जोयो। फेर आप री देह कानी जोयो। फेर अकास कानी मूंढो कर्‌यो। दो निसांसा नाख्या। माडाणी मूंढै सूं नीकळ्यो— हे अन्तरजामी !

(२)

करतारसिंघ और भरतारसिंघ

[श्री श्रीचँदराय]

करतारसिंघ और भरतारसिंघ दो भाई हा। दोनां रे बीच में जमींरै अेक टुकड़ेरो मामलो अदालतमें चालतो हो। अेक दिन करतारसिंघ विचार कर्‌यो-भरतारो म्हारो भाई है, जमीरो ओ टुकड़ो वो चावै है तो म्हारो फरज है, के बैने दे दूं। करतारसिंघ गांवरा चौधर्‌यांनै भेळा कर्‌या अर आपरो विचार सुणायो। सगळां करतारसिंघरी घणी वा-वा करी।

सुलैरी खुसीमें प्रीति-भोज हुयो। सराब उडण लागी। ब्लैक-अैंड-व्हाइटरी कई बोतलां खाली हुयीं। करतारसिंघ माथो ऊँचो करनै बोल्यो-कुण है जको म्हारी जमीं कानी आंख उठायनै देखै ? गूंजै मांय हाथ गयो। दन-दनरी अवाज हुयी। खण भरमें भरतारसिंघ री निर्जीव देह जमी माथै पड़ी ही।

ऊंट-रो भाड़ो

[मुन्नालाल राज-पुरोहित]

(१)

चिलकारां-रो वखत। गायां आवण-री वेळा। सूरज भगवान पड़दा-री ओट हुवण-री त्यारीमें हा। हूं खेतसूं आंवतो हो। गायांरा खुरांसूं उठियोड़ी रेतसूं भरीज्योड़ो कोई-री मीठी-मीठी याद लियां खाथो-खाथो वगे हो।

गांवरी गवाड़में वड़तां ही दस-पांच राजपूतांरा घर पड़ै। हूं म्हारै ध्यानमें चालै हो कै लारांसूं कोई-रो हेलो सुणीजियो—

"पा लागूं, पंडितजी! चिलम तो पीता जावो, इयां के घर कटैई भाग्यो जाव है?"

डांग-री सी लागी। पण लाधजी सदा-रा मिलवा वाळा टैस्या, उणां-री वात टाळण-री हिम्मत को हुयी नी। पाछो मुड़ियो नै राम-राम कर धूणा पर जा जम्यो। कीं इनली-ऊनली वातां करनै हूं उठण-रो मनसोभो करतो ही हो कै इत्तामें सेठ रूपचंदजी आता दीख्या।

"जै गोपाळजी-री"

"जै गोपाळजी-री। आज कूनै रस्तो भूलग्या?"—लाधजी कयो।

"रस्तो तो को भूलिया नी, पण बीनणी पीर जाण-रो मतो कर लियो इण खातर अेक अेकलियो भाड़े करणो है। हूं सोची-लाधजी घररो ही आदमी है, बठै ही चल्या चालां"-यों कै'र सेठजी खीस काढ दी।

मनै घणो गुस्सो आयो। लाधजी-नै घर-रो कैवामें भी सेठजी-रो स्वारथ साफ दीसतो हो। कदाचित लाधजीनै बी अै शब्द चोखा को लागिया नी। काठै मनसूं बोलियो।

"के आंट है? सेठांरो माईतपणो है।"

"तो फेर भाड़ो कै दे"-सेठजी बोलिया।

मनै हंसी आयी—घर-रो हिसाब कठै रयो। घर-रो हिसाब हुतो तो फेर पछै भाड़ो खोलबा-री वात ही क्यों वणती?

"भाड़ा-री भली कयी ! के दूसरी बात है ? आप राजी होयनै देसो सोई-खैर सल्ला।"

"नहीं, भाई ! फेर लड़ता भूंडा लागां, तै कर लेणो ही आछो है। हिसाब तो बाप-बेटामें ही हुवै है।"

"थे घर-रा सेठ, राजी हो'र देसो सोई सिर माथा पर है।"

पण सेठजी तो अड़ग्या--भाड़ो तो खोलस्यां ही।

लाघजी च्यार ४) मांग्या। सेठजी चीकणी-चोपड़ी बातां करनै अढाई २॥) में मामलो तै कियो। किरायो कीं कम लागै इण खातर ही सेठजी इत्ती दूर आया हा, नहीं तो म्हाजन-रो बेटो भलां दो पग आगे देवै ? ऊंटवाळा तो लारां ही घणा हा। देण-लेण-नै रामजी-रो नांव, फेर घर-रो ठरको ऊपर !

(२)

मनै खेत वेगो ही पूगणो हो। घड़ी अेक-रै झांझरकै हूं म्हारला टोडड़ा माथै जीण कसनै बारै निकळियो तो आगै सेठ रूपचंदजी-री हवेली-रै मूंढागै लाघजी अेकलियो जोतियां ऊभा लाध्या। बांकड़ला पेचांरो गोळमटोळ साफो माथा पर। मूंछियां वट दियोड़ी। वडी-वडी गोळ-गोळ आंखियां। भरियोड़ो चैरो। गोडां सूधी धोती नै रेजी-रो अंगरखो पैरबा नै। कमर-में तरवार लटकै। हाथ में लो'रो भारी पोलो दियोड़ी सांतरी सी डांग।

"आज तो कोई किलो जीतवा सिधावो हो के ?"—उणांरी आ सजधज देखनै हूं हंसनै बोलियो।

"कुण कै सकै ? टैम सूगलो घणो है, कदास मौको पड़ ही जाय।"

"अढाई रुपियां खातर जान-नै जोखम में नाखणी हूं तो बुद्धिमानी को समझूं नी।"

"अढाई रुपियां-रो सवाल को नी, म्हाराज ! राजपूत नांव-रै वट्टो लाग जावै। आ बात मनै वर्दास्त को हुवै नी।"

मन-मनमें लाघजी-री रजपूती नै दाद देतै-देतै मैं म्हारै खेत-रो मारग लियो।

(३)

गाव-सूं थोड़ी दूर अेक टीबो पड़ै जिण-नै म्हे कासियो धोरो कैवता। ओ टीबो मोकळो ऊँचो हो और इण तरांसूं वणियोड़ो हो जियांल लाडू घालण-रो धामो हुवै।

लाधजीरो अेकलियो चरक-चूं चरक-चूं करतो इण धोरा-रै बीचूं बीच वगै हो। आसापासा-रा झाड़कां मांयसूं दो-च्यार आदमियां-रा बोलबारी सुरसुराट कानांमें पड़ी। ईनै-ऊनै देखियो पण कीं दीसियो नहीं। भाग हाल फाटी कोनी ही। जियांन अेकलियो मोटोड़ा खेजड़ा कनै पूगियो, तीन ऊटांवाळा उणनै घेरनै ऊभा हुग्या।

अेक पळ लाधजी सहमीजियो—हूं अेकलो अर अै तीन। पण दूजै ही पल रजपूती जाग उठी। तरवार सूंत नै सामो मंडग्यो।

"खबरदार! जे म्हारै जींवतां बींनणी-रै कणीं सामो ही जोयो तो"—लाधजी गरजियो जाणै आभो कड़कियो।

"क्यों कुत्ता-री मौत मरै है? म्हांनै थारा-सूं कीं कोनी लेणो। चुपचाप जा' र आघो बैठ ज्या। बस बींनणती आळो गैणो उतार लेबा दे"—उणां मांय सूं अेक जणो बोलियो।

लाधजीरी रजपूती नै ओ बोल कद बर्दास्त हुतो। अेकलो ही तीनांसूं अळूझग्यो। वै तीन-रा नसा सूं संभळिया ही कोनी हा कै लाधजी अेक नै जमी माथै पाधरो कर दियो।

बाकी दोनां सूं अेकलो आध घंटा ताणी जूझियो। सगळो सरीर लोही लुहाण हुग्यो पण तरवार जठै तांई हाथ में रयो अर होस रयो लाधजी वार करतो और वार झेलतो रयो। अेक बार अेक धाड़वी रो तरवार रो हाथ लाधजी री आखियां माथे लागियो। फेर कांई हो! लापालोप सांपरते ही दीसे ही। लाधजी अचेत होयनै भोम माथै परो पड़ियो। धाड़वीई थोड़ा घायल कोनी हुया। अेक तो कोस दोय पूगिया जितै मरिया ही निकळिया।

सेठाणी तो डररै मारियै काठ री पूतळी हुवै ज्यां हुयगी। पण फेरूं आपरी वणिक-बुद्धि-रो परचे दियो। धाड़वी लड़ाई में अळूझियोड़ा हा जद मौको देखनै घणकरो गैणो रेतमें परो खसोलियो नै मामूली चूंप चांप धाड़वियां कानी परी फेंकी। लारासूं कोई आ नहीं जावै इण डरसूं धाड़वी ठैरिया नहीं, जो कीं हाथ पड़ियो सो लेय नै आपरै मारग लागिया।

(४)

कोसिया धोरा पर अेक टूटो भागो चूंतरो आज तांई उण वीर री याद लियां ऊभो है। कदे-कदे जद हूं ऊनैकर निकळूं तो म्हारो माथो मतै ही उगरै सामनै श्रद्धासूं झुक जावै।

सीप

[कंवर चन्द्रसिंह]

(१)

विदा लेतां रात उषानै कैवै - काल अठै ही भलो !

उडती सी उषा सूं सूरज सुणै - काल अठै ही भलो !

आंख्यां सूं अदीठ हुतै सूरज-सूं सांझ औ ही वचन लेवै

काल अठै ही भलो !

(२)

चिड़कोली भोरमें परभाती गाय नै सूता लोगांनै चेत करावै ।

मोर वरसालै में सुरंगो बोलनै लोगां-रा हिया हुलसावै ।

कोयल वसंत में आप.रो मीठो राग-सूं लोगां-रा रूं-रूं नचावै

कूंज रो कुरळावणो काळजे-रा चीरा -चीरा बणावै

म्हारा कविया ! थांनै के हुयो ?

(३)

ऊनालै री तपती तावड़ी में ताती वेळका पर चालतां चालतां जद

पग थळियां में फाला पड़ जावै और मूंढो लूवांसूं झुलसीजै

जद चूंधो आख्यां रै सामै वीत्यै वसंतरी याद आयां विना

को रहै नी

पण वसंत री वा'र लूंटतां आगै आवणवालै ऊनालै रो ध्यान

क्यों को आवै नी !

(४)

डालियां सूं लाग्या हरिया- हरिया पान आमा-सामा झांक चंचल

हुवै। आपसमें मिलणनै ललचावै, पण आप री ठाड़ को छोडै नी ।

सूका पान दूर-दूरसूं आय नै आपसरी में गळै मिलै

साथी ! आव झड़ां ।

(५)

अंधारै सूं उजाळै में आंवता ही बालक रोयो
इण सूं जीवण रो अर्थ लगाय नै लोग हंसिया ।
धीरै धीरै देखादेखी सागी बाळक उजाळै रो बणियो
अेक दिन अचांनक अंधारो आंवतो देख सागो बालक उजाळै वास्तै रोवण लाग्यो ।

(६)

तप्योड़ै ताकळै सी तीखी सूरज किरणांरी लौ-नै आपरै गळैसूं
नीच उतार काळजैमें फाला उपाड़ दिन भर धूणी
रमा रात में इमरत वरसावै
उण चांद नै जगत चोर कैवै

(७)

दोनूं बाळपणै रा साथी
जवानी में अेक दांत रोटी टूटी
विरधापण साथै वितायो
मर्यां पछै अेक गंगामें, दूजो कवर में
अंत में अळगा करणरो ओ सांग किसो !

(८)

हजारो रुख देख धोळा चूंखला उणरै साथ उडै
काळो वादळ अड़ै और हजारै सामो हालै
उणमें पाणी है ।

(९)

आंधी आवै ।
फूलां और पानां में खळ बळ माच ज्यावै
हजारो रुख देख अर झुक -झुक सलाम करै
सूकै डांखळ नै उणसूं कांई मतलब ?

आलोचना

युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि—लेखक-अगरचंद नाहटा, भंवरलाल नाहटा। प्रस्तावना-लेखक—डाक्टर दशरथ शर्मा अेम० अे० डी० लिट्०। भूमिका-लेखक—मुनि कान्तिसागर। आकार—डबल क्राउन सोलह पेजी। पृष्ठसंख्या—६+१२+१८+४+४०+१२०+२+२+१६=२२०। चार चित्र। प्रथम संस्करण, सं० २००३। मूल्य १) प्रकाशक—शंकरदान शुभैराज नाहटा, ४, जगमोहन मल्लिक लेन, कलकत्ता।

नाहटा-बंधु राजस्थान के यशस्वी शोधकार हैं। प्राचीन साहित्य अेवं इतिहास के, विशेषतः जैन साहित्य और संस्कृति के, संबंध में आप लोगों ने बहुत महत्वपूर्ण शोध-कार्य किया है। आप लोगों के प्रकाशित निबंधों की संख्या साढ़े तीन सौ के ऊपर पहुंच चुकी है और लग-भग इतने ही निबंध अप्रकाशित रखे हैं। इनके अतिरिक्त आपने कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का निर्माण तथा संपादन भी किया है। इन ग्रंथों में न-जाने कितनी मौलिक सामग्री संगृहीत है। आलोच्य ग्रंथ आप लोगों की नवीनतम रचना है।

जैन संप्रदाय के आचार्यों में श्री जिनदत्त सूरिका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आप खरतरगच्छ के पट्टधर श्री जिनवल्लभ सूरि के शिष्य और उत्तराधिकारी थे। आपका संबंध विशेष कर राजस्थान और गुजरात से रहा। अजमेर के चोहाण-वंशीय नरेश अर्णोराज और त्रिभुवनगिरि के यादव वंशीय नरेश कुमारपाल के साथ आपका घनिष्ठ संबंध था। जैन धर्म में प्रविष्ट अनाचारका आपने प्रबल विरोध किया और उसका उन्मूलन कर जैन धर्म के आधार को दृढ़ बनाया। आपके लिखे हुअे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ विद्यमान हैं जिनमें तीन अपभ्रंशकी रचनाअें भी हैं। अैसे महापुरुष का चरित्र प्रस्तुत करके लेखकों ने अेक महान् कार्य किया है। चरित्र बड़ी शोध के पश्चात लिखा गया है। सूरिजी के अप्रकाशित ग्रंथोंको परिशिष्ट में दे दिया गया है। तृतीय परिशिष्ट में सूरिजी के संबंध में लिखी गयी कुछ अप्रकाशित और नवीन-प्राप्त रचनाअें उद्धृत की गयी हैं। छपाई-सफाई अच्छी है। पृष्टसंख्याको देखते पुस्तकका मूल्य सस्ता है।